आर.एन.आई. नं. 3653/57 डाक पंजीयन संख्या JaipurCity/413/2015-17
मुद्रण तिथि दिनांक 5 से 8 अगस्त, 2015
वर्ष : 73 ★ अंक : 08 ★ मूल्य : 10 रु.
डाक प्रेषण तिथि 10 अगस्त, 2015 ★ श्रावण, 2072

ISSN 2249-2011

हिन्दी मासिक

जिनवाणी

आचार्य हीरा : आचार्यपद रजत साधनावर्ष

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल जयपुर

मंगल-मूल, धर्म की जननी, शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी, फिर प्रगटी यह 'जिनवाणी'।।

संसार की समस्त सम्पदा और भोग
के साधन भी मनुष्य की इच्छा
पूरी नहीं कर सकते हैं।

- आचार्य हस्ती

आवश्यकता जीवन को चलाने
के लिए जरूरी है, पर इच्छा जीवन
को बिगाड़ने वाली है,
इच्छाओं पर नियंत्रण आवश्यक है।

- आचार्य हीरा

जिनका जीवन बोलता है,
उनको बोलने की उतनी जरूरत भी नहीं है।

- उपाध्याय मान

With Best Compliments :

Rajeev Nita Daga Foundation Houston

Jai Guru Heera
Jai Guru Hasti
Jai Guru Maan

।। जैनं जयति शासनम् ।।

दान से पुण्य होता है, पर संयम से कर्मों की निर्जरा होती है।
दान ह्रदय की सरलता है, पर संयम ह्रदय की शुद्धता है ।।

DP Exports is leading Indian firm specializing in import, export and manufacture of diamonds and jewellery. We offer a wide range of rough diamonds, along with a specialization in the field of manufacturing polished diamonds and jewellery.

timeless jewels
unmatched quality
flawless craftsmanship

Dharamchand Paraschand Exports

1301, Panchratna, Opera House, Mumbai - 400 004. India.
t: +91 22 2363 0320 / +91 22 4018 5000
f: +91 22 2363 1982 email : dpe90@hotmail.com

।। महावीराया नमः ।।

जय गुरु हीरा जय गुरु हस्ती जय गुरु मान

जिस दिन श्रद्धा जग जायेगी, अनमोल-दुर्लभ परम अंग रूप मानव जीवन को समर्पण करते देर नहीं लगेगी। श्रद्धा है तो प्राण अर्पण भारी नहीं लगेगा।

-आचार्य श्री हीरा

With Best Compliments From :

S. .D. GEMS &
SURBHI DIAMONDS

Prakash Chand Daga
Virendra Kumar Daga (Sonu Daga)

FC51, Bharal-Diamond Bourse, Bandra Kurla Complex,
Bandra (E), MUMBAI-400051 (MAH.)
Ph. : (O) 022-23684091, 23666799 (R) 022-28724429
Fax : 022-40042015 Mobile : 098200-30872
E-mail : sdgems@hotmail.com

Jai Guru Heera Jai Guru Hasti Jai Guru Maan

व्यसनी से उसी प्रकार बचना चाहिये, जिस प्रकार छूत के रोगी से बचा जाता है।

- आचार्य श्री हीरा

With Best Compliments from :

Basant Jain & Associates, Chartered Accountants
BKJ & Associates, Chartered Accountants
BKJ Consulting Private Limited
Megha Properties Private Limited
Ambition Properties Private Limited

601, Dalamal Chambers, New Marine Lines, Mumbai-400020

बसंत के. जैन

अध्यक्ष : श्री जैन रत्न युवक परिषद, मुम्बई
ट्रस्टी : गजेन्द्र निधि ट्रस्ट

Tel. : (O) 22018793, 22018794 (R) 28810702

जिनवाणी हिन्दी-मासिक

卐 **संरक्षक**
अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ
घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.), फोन-2636763

卐 **संस्थापक**
श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

卐 **प्रकाशक**
विनयचन्द डागा, मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
दुकान नं. 182-183 के ऊपर, बापू बाजार,
जयपुर-302003(राज.)
फोन-0141-2575997, फैक्स-0141-2570753

卐 **प्रधान सम्पादक**
प्रो. (डॉ.) धर्मचन्द जैन
सामायिक-स्वाध्याय भवन, प्लॉट नं. 2,
नेहरू पार्क, जोधपुर-342003 (राज.)
फोन : 0291-2626279
E-mail : jinvani@yahoo.co.in
E-mail : editorjinvani@gmail.com

卐 **सह-सम्पादक**
नौरतन मेहता, जोधपुर
डॉ. श्वेता जैन, जोधपुर

卐 **भारत सरकार द्वारा प्रदत्त**
रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57
डाक पंजीयन सं.-JaipurCity/413/2015-17
ISSN 2249-2011

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

सुद्धेसणाओ नच्चाणं,
तत्थ ठवेज्ज भिक्खू अप्पाणं।
जायाए घासमेसेज्जा,
रसगिद्धे न सिया भिक्खाए।।

-उत्तराध्ययन सूत्र, 8.11

शुद्ध एषणाएँ समझ मुनि,
मन उनमें सुस्थिर कर डाले।
संयम यात्राहित भोजन ले,
रस-लोलुपता को नित टाले।।

अगस्त, 2015
वीर निर्वाण संवत्, 2541
श्रावण, 2072

वर्ष 73 अंक 8

सदस्यता शुल्क

त्रिवार्षिक : 250 रु.
20 वर्षीय, देश में : 1000 रु.
20 वर्षीय, विदेश में : 12500 रु.
स्तम्भ सदस्यता : 21000/-
संरक्षक सदस्यता : 11000/-
साहित्य आजीवन सदस्यता- 4000/-

एक प्रति का मूल्य : 10 रु.

शुल्क/साभार नकद राशि 'जिनवाणी' बैंक खाता संख्या SBBJ 51026632986
IFSC No. SBBJ 0010843 में जमा कराकर जमापर्ची (काउन्टर-प्रति) अथवा ड्राफ्ट भेजने का पता
'जिनवाणी', दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.)
फोन नं.0141-2575997, 2571163, फैक्स : 0141-2570753, E-mail:sgpmandal@yahoo.in

मुद्रक : दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोन- 0141-2562929

नोट- यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो।

विषयानुक्रम

सम्पादकीय-	अभिमान और स्वाभिमान	-डॉ. धर्मचन्द जैन	7
अमृत-चिन्तन-	आगम-वाणी	-डॉ. धर्मचन्द जैन	11
विचार-वारिधि-	संघ	-आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.	12
प्रेरक-संदेश-	आचार्यप्रवर श्री हीरा का संदेश	-आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा.	13
प्रवचन-	पावसकाल में करें साधना	-आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.	15
	द्रव्य शुद्धि और भाव शुद्धि	-मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनिजी म.सा.	21
अध्यात्म-	दुःख-मुक्ति एवं सुख-समृद्धि के सूत्र (6)	-श्री कन्हैयालाल लोढ़ा	27
शोधालेख-	आवश्यक के कर्त्ता कौन?	-डॉ. पवनकुमार जैन	28
	हिंसा के भेद-प्रभेद	-डॉ. वीरसागर जैन	61
जीवन-व्यवहार-	यतनाधर्म महान् (2)	-श्री अरुण मेहता	33
	स्वाध्याय से होता जीवन श्रेष्ठ	-प्रवर्तक श्री गणेशमुनि शास्त्री	37
	जिसके पास धैर्यरूपी धन नहीं है	-आचार्य श्री विजयरत्नसुन्दरसूरिजी	39
अंग्रेजी-स्तम्भ-	Jaina Perspective of Nature and Environment	-Sh. Dulichand Jain	41
साधना-	साधना का त्रिभुज : सामायिक	-डॉ. दिलीप धींग	48
काव्य-	वीर प्रभु की अंतिम वाणी (13)	-मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा.	52
आ.पद रजतवर्ष-	आचार्य श्री हीरा पर भावाभिव्यक्तियाँ (4)	-संकलित	57
धारावाहिक-	लग्न की वेला (13)	-आचार्यश्री उमेशमुनिजी 'अणु'	64
संघहित-सन्देश-	उत्साह के अतिरेक में भावुक भक्त संघ-व्यवस्था नहीं भूलें	-श्री मानेन्द्र ओस्तवाल	68
युवा-स्तम्भ-	मुस्कराते चेहरे पर दर्द की इंतहा नहीं	-श्रीमती भारती जैन	72
नारी-स्तम्भ-	जीवन की रक्षा कवच है मर्यादाएँ	-श्री हस्तीमल झेलावत	74
बाल-स्तम्भ -	आप बीती घटना एवं जियो और जीने दो	-सुश्री हिमांशी कांकरिया/डॉ. दिलीप धींग	76
स्वास्थ्य-विज्ञान-	प्रभावशाली चुम्बकीय चिकित्सा (2)	-डॉ. चंचलमल चोरडिया	80
युवक-परिषद्-	आओ स्वाध्याय करें	-संकलित	88
चिन्तन/विचार-	प्रवचन-मोती	-आचार्य श्री विजयरत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.	38
	चातुर्मास आत्मकल्याण का काल	-श्री राजेन्द्रसिंह चौधरी	47
	चातुर्मास का मूल्यांकन	-डॉ. पुष्पेन्द्र मुनि	71
	सच्ची पूजा	-श्री रमेशचन्द कनेरिया	94
कविता/गीत-	उम्र थोड़ी सी हमको	-संकलन : श्री नवरतन डागा	51
	जीवन-बोध क्षणिकाएँ	-श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी	75
	करें क्षमायाचना	-श्री दिलीप गाँधी	79
	जाना किधर है हमको और कहाँ जा रहे हैं?	-श्री मोहन कोठारी 'विनर'	87
	तीन कविताएँ	-डॉ. रमेश 'मयंक'	92
साहित्य-समीक्षा-	नूतन साहित्य	-डॉ. श्वेता जैन	93
समाचार विविधा-	समाचार-संकलन	-संकलित	95
	साभार-प्राप्ति-स्वीकार	-संकलित	121

सम्पादकीय

अभिमान और स्वाभिमान

❖ डॉ. धर्मचन्द जैन

यह प्रश्न उलझन में डाल देता है कि स्वाभिमान एवं अभिमान में क्या भेद है? अभिमान त्याज्य है तो स्वाभिमान क्यों नहीं? स्वाभिमान आत्म-सम्मान अथवा आत्म-गौरव का द्योतक है। अंग्रेजी में इसे Self-esteem अथवा Self-respect कहते हैं। अभिमान त्याज्य है, किन्तु आत्म-सम्मान नहीं।

अभिमान और आत्म-सम्मान/स्वाभिमान में भेद की सूक्ष्म रेखा है। दोनों में साम्य प्रतीत होने पर भी दोनों एक-दूसरे से विपरीत हैं। अभिमान जहाँ पतन का कारण है, वहाँ स्वाभिमान आत्मसम्मान के साथ जीने का मार्ग प्रशस्त करता है। वस्तु, धन, धरा आदि के आधार पर जो अपना स्वरूप निर्धारित करता है, वह अभिमानी है तथा जो अपने आत्मस्वरूप को सुरक्षित रखकर व्यवहार करता है, वह स्वाभिमानी है। स्वाभिमानी व्यक्ति आत्मगौरव के प्रति सजग रहता है। समाज में वह ऐसा व्यवहार करने से बचता है, जिसके कारण उसके आत्मगौरव को ठेस पहुँचे। बाह्य वस्तु या पदार्थों का महत्त्व उसके मस्तिष्क में भी होता है, किन्तु वह न्याय-नीति पर चलकर उन्हें प्राप्त करना चाहता है। समाज में उसे लोग हीन दृष्टि से न देखें, अतः वह हीन व्यवहार से दूर रहता है।

समाज में निर्धन व्यक्ति भी स्वाभिमानी हो सकता है और धनिक व्यक्ति भी न्याय-नीति के मार्ग को छोड़ने के कारण स्वाभिमान को सुरक्षित नहीं रख पाता है। स्वाभिमानी व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए भी किसी के समक्ष दीन भाव से हाथ नहीं फैलाता है। वह दूसरों से सहयोग भले ही लेता है, किन्तु अपने आत्मसम्मान को ठेस पहुँचाकर हर किसी के समक्ष याचना नहीं करता है। अत्यन्त आवश्यक होने पर वह ऐसे व्यक्ति से सहयोग लेता है जो उसकी परिस्थिति को ठीक से समझता है तथा उसके आधार पर जो उसे हीन या निम्न नहीं समझता है एवं किसी दूसरे के समक्ष उसका कथन भी नहीं करता है। इसलिए कहा भी गया है- 'मांगों उसी से जो दे खुशी से, कहे न किसी से।' संस्कृत के कवि भर्तृहरि ने भी कहा है-

रे रे चातक! सावधानमनसा, मित्र क्षणं श्रूयताम्।
अम्भोदा बहवो वसन्ति गगने, सर्वेऽपि नैतादृशाः।।
केचिद् वृष्टिभिरार्द्रयन्ति वसुधां, गर्जन्ति केचिद् वृथा।
यं यं पश्यसि तस्य तस्य पुरतो, मा ब्रूहि दीनं वचः।।

एक चातक पक्षी को सम्बोधित करते हुए कवि ने कहा है- हे चातक! हे मित्र! सावधान मन से क्षण भर सुनो। आकाश में मेघ बहुत रहते हैं, किन्तु सब एक जैसे नहीं होते। कुछ वर्षा से वसुधा को आर्द्र करते हैं और कुछ व्यर्थ गर्जन करते हैं। इसलिए जिस-जिस मेघ को देखो उसके समक्ष याचना के दीन वचन मत कहो। तात्पर्य यह है कि हर एक बादल चातक की इच्छा को पूरी नहीं करता है। इसलिए हर एक बादल के समक्ष जिस प्रकार याचना करने का कवि निषेध कर रहा है, उसी प्रकार संसार में हर एक समृद्ध व्यक्ति से याचना नहीं करनी चाहिए। कोई देने के स्वभाव वाला होता है और कोई नहीं। कुछ लोग अपने को समृद्ध दिखाते हैं, किन्तु किसी को देते कुछ नहीं हैं। कुछ लोग मात्र डींगें हाँकते है, किन्तु कार्य पड़ने पर हाथ खींच लेते है। इसलिए हर एक के समक्ष हाथ फैलाना उचित नहीं है।

व्यक्ति को स्वयं अपने पैरों पर खड़े होने एवं आत्मनिर्भर बनने का प्रयत्न करना चाहिए, ताकि उसे किसी की ओर न ताकना पड़े। आत्म-सम्मान के साथ प्राप्त सूखी रोटी भी जो सुख एवं सन्तोष प्रदान करती है, मांगने पर अपमान के साथ या अनुचित विधि से मिली मिठाई से भी वह खुशी नहीं मिलती। स्वयं के श्रम से जो आनन्द एवं तृप्ति का अनुभव होता है, वह मुफ्तखोरी से नहीं। मुफ्त में चीजें प्राप्त करने का मन हमें कमजोर बनाता है। वह श्रम एवं लगन के साथ कार्य करने की निष्ठा को खण्डित करता है। अतः आत्म-सम्मान के साथ जीने का प्रयत्न करना चाहिए। सामर्थ्य प्राप्त होने पर हम दूसरों के लिए सहयोगी बनें एवं उन्हें आत्मनिर्भर बनाने का प्रयत्न करें।

स्वाभिमानी व्यक्ति संयमी होता है। वह चादर के अनुसार अपने पैर पसारता है। थोड़े में जीवन यापन करके भी वह प्रसन्न रहता है, किन्तु अपने को न दीन मानता है और न ही दीनता का प्रदर्शन करता है। उसका यदि कोई आत्मीयता के साथ सहयोग करता है तो उसके प्रति उसमें कृतज्ञता का भाव रहता है एवं समय आने पर सहयोगदाता के प्रति वह सद्भाव के साथ उपस्थित रहता है। स्वाभिमानी होना अनीति से धनिक होने की अपेक्षा अच्छा है। बेईमानी करने वाला व्यक्ति स्वाभिमानी नहीं हो सकता। उसमें आत्म-सम्मान या आत्म-गौरव का भाव उत्पन्न नहीं हो सकता। क्योंकि भीतर से वह अपने को दोषी एवं खोखला अनुभव करता है। अनीति से धन कमाने वाले व्यक्ति को अभिमान हो सकता है। उसमें दूसरों से सम्मान प्राप्त करने की भावना एवं आशा हो सकती है, किन्तु अपनी नज़रों में वह उच्च नहीं हो सकता।

मनुष्य दूसरों की नजरों में श्रेष्ठ बनना चाहता है। उसके लिए वह नैतिक-अनैतिक

विभिन्न प्रयास करता है, किन्तु वास्तव में उसमें श्रेष्ठता का आधान नहीं होता है। जो स्वयं सही-गलत एवं नीति-अनीति का विचार कर व्यवहार करता है, वह सन्मार्ग पर चलकर आत्मसम्मान को प्राप्त करता है।

किसी व्यक्ति के गलत आचरण करने पर उसके स्वाभिमान को जगाकर उसे सन्मार्ग पर लाया जा सकता है। ऐसा ही एक उदाहरण हमें उत्तराध्ययनसूत्र के रथनेमीय अध्ययन में प्राप्त होता है, जिसमें साध्वी राजीमती को निर्वस्त्र देखकर मुनि रथनेमी का चित्त चंचल हो उठता है एवं राजीमती उसे धिक्कारते हुए उसके स्वाभिमान/आत्मगौरव को जगाती है। राजीमती कहती है-

धिरत्थु तेऽजसोकामी, जो तं जीवियकारणा।
वंतं इच्छसि आवेउं, सेयं ते मरणं भवे।।

-उत्तराध्ययन सूत्र, 22.42 एवं दशवैकालिक, 2.7

रथनेमी को कहा गया- "तुम्हें धिक्कार है! तुम वमन किए गए काम भोगों को भोगना चाहते हो। यह तुम्हारे यश का नहीं अपयश का कारण है। राजीमती का वचन सुनकर रथनेमी सम्हल जाते हैं तथा पतित होने से बच जाते हैं।

सिंह का शावक सियारों के बीच में रहने पर अपने गौरव को भूल जाता है, किन्तु उसे जब यह भान हो जाता है कि वह सिंह है, सियार नहीं, तो उसकी कायरता काफूर हो जाती है।

पूज्य आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा. कई बार समागत श्रावकों को प्रेरणा करते समय उनका आत्मगौरव जगाते हुए कहते थे- "तेरे दादाजी कितने धर्मनिष्ठ थे, उनका तप-त्याग, सामायिक-स्वाध्याय के प्रति कितना लगाव था। उनका पोता होकर तू किस मार्ग पर चल रहा है? धर्म से जुड़ो एवं नियमित स्वाध्याय का नियम ग्रहण करो।" इस प्रकार कुल-परम्परा के आधार पर आत्मगौरव जगाने से भी प्रेरणा प्राप्त होती है एवं व्यक्ति उन्मार्ग से सन्मार्ग पर अग्रसर हो जाता है।

आत्म-स्वरूप, कुल-परम्परा आदि के आधार पर आत्मगौरव को जगाकर बुराइयों से बचा जा सकता है तथा अच्छाइयों की ओर अग्रसर हुआ जा सकता है, जबकि अभिमान के द्वारा ऐसा सम्भव नहीं है। गुणों का अभिमान भी व्यक्ति का पतन ही करता है, किन्तु स्वाभिमान गुणों का संरक्षण करता है। स्वाभिमानी व्यक्ति ईमानदार, कर्त्तव्यनिष्ठ एवं खुद्दार होता है। वह समाज में आत्म-सम्मान के साथ जीता है तथा सद्गुणों के होने पर भी उनका अभिमान नहीं करता।

पूर्व राष्ट्रपति डॉ. कलाम को प्रणाम

भारतरत्न राष्ट्रपति अब्दुल कलाम का 27 जुलाई 2015 को भारतीय प्रबन्धन संस्थान, शिलांग में छात्रों को सम्बोधित करते हुए निधन हो गया। वे 84 वर्ष के थे, किन्तु जीवन के अन्तिम श्वास तक सक्रिय रहे। रामेश्वरम् के मछुआरा परिवार में जन्मे डॉ. अवुल पाकीर जैनुलआब्दुदीन कलाम ने अपने अध्ययन, लगन, सूझ-बूझ, ईमानदारी और परिश्रम के साथ उच्च स्तरीय वैज्ञानिक के रूप में प्रसिद्धि प्राप्त की तथा सन् 2002 से 2007 तक भारत के 11 वें राष्ट्रपति बने। राष्ट्रपति पद पर रहकर वे जनता से जुड़े रहे तथा देश के विकास हेतु चिन्तनशील होकर विचार देते रहे। इसलिए वे जनता के राष्ट्रपति कहलाए। देश के विकास के लिए उनके पास दृष्टि (Vision) थी। देश के युवाओं और छात्रों का भविष्य कैसे सुन्दर बने, इसके लिए वे युवाओं और छात्रों के कार्यक्रमों में उन्हें आगे बढ़ने के संकल्प और तदनुसार प्रयत्न करने की सलाह देते रहे। उनकी कुछ बातें युवाओं को खूब प्रेरित करती थीं। वे कहते थे- "सपने वे नहीं जो हम सोते समय देखते हैं, सपने तो वे हैं जो हमें सोने नहीं देते।" डॉ. कलाम का यह वाक्य एक उच्च लक्ष्य और उसके प्रति समर्पित भाव से किये जाने वाले प्रयत्न की सूचना देता है। FAIL का मतलब है First Attempt In learning, असफल होने वाले युवाओं को उनका यह वाक्य प्रेरित करता है। असफल होने पर घबराने की आवश्यकता नहीं है। 'असफलता' जीवन में सीखने की प्रक्रिया का प्रथम कदम है। हमें नित नया अवसर प्राप्त होता रहता है, इसलिए असफलता में निराश होने एवं घबराने की आवश्यकता नहीं है। डॉ. कलाम मिसाइल मेन के रूप में ही नहीं, अपितु एक अच्छे इंसान के रूप में भी जाने गए। उनकी दृष्टि में आध्यात्मिकता और भावों में प्रत्येक मानव के प्रति प्रेम था। राष्ट्रपति पद से सेवानिवृत्त होने के पश्चात् भी वे निरन्तर देश के उत्थान में लगे रहे। सभी धर्म-दर्शनों के प्रति उनके मन में सद्भाव था तथा विचार-विमर्श के लिए तत्पर रहते थे। वे शाकाहारी एवं सात्त्विक प्रकृति के महापुरुष थे।

डॉ. कलाम स्वाभिमानी थे। आत्मसम्मान एवं आत्मगौरव की भावना उनके आचरण में रही। दूसरी बार जब उन्हें राष्ट्रपति बनाने का प्रस्ताव आया तो उन्होंने कहा कि सर्वदलों की सहमति होने पर ही मैं विचार कर सकता हूँ अन्यथा नहीं। अन्ततः डॉ. कलाम ने, ऐसा न होने पर राष्ट्रपति पद के लिए मना कर दिया। रामेश्वरम् में उनका घर वैसा ही साधारण रहा जैसा पूर्व में था। वे स्वभाव से निष्कपट एवं अपरिग्रहवृत्ति के व्यक्ति थे। साम्प्रदायिक अभिनिवेशों से वे ऊपर उठे हुए थे। भारत के ऐसे महान् वैज्ञानिक एवं भारतरत्न के विरुद से सम्मानित तथा उच्च विचारों के धनी डॉ. कलाम को सलाम। ★

अमृत-चिन्तन

आगम-वाणी

कोहे माणे य मायाए, लोभे य उवउत्तया।
हासे भए मोहरिए, विकहासु तहेव य।।
एयाइं अट्ठठाणाइं, परिवज्जित्तु संजए।
असावज्जं मियं काले, भासं भासिज्ज पण्णवं।।

-उत्तराध्ययनसूत्र, चौबीसवाँ अध्ययन : प्रवचनमाता, सूत्र 9-10

अर्थ- क्रोध, मान, माया और लोभ में, हास्य, भय और मौखर्य (वाचालता) में, तथा विकथाओं में भाषा का प्रयोग करना दूषण है।।9।।

प्रज्ञावान संयती (साधु) इन आठ स्थानों को छोड़कर यथासमय निर्दोष और परिमित भाषा बोले।।10।।

विवेचन- उपर्युक्त गाथाएँ साध्वाचार में निरूपित पाँच समितियों के अन्तर्गत भाषा समिति से सम्बद्ध हैं। साधु को भाषा का प्रयोग अत्यन्त विवेक के साथ करना होता है। उसी प्रयोजन से यहाँ कहा गया है कि साधु को असावद्य (दोषरहित), सीमित एवं यथा समय भाषा का प्रयोग करना चाहिए। उसे आठ प्रकार से भाषा का वर्जन करना चाहिए। क्रोध में, मान में, माया में एवं लोभ में आकर भाषा का प्रयोग करना साधक के लिए उचित नहीं है। इसी प्रकार हास्य, भय, वाचालता और विकथापूर्वक भी भाषा का प्रयोग नहीं करना चाहिए। प्रज्ञावान साधु-साध्वी ही नहीं, अपितु प्रज्ञावान कोई भी पुरुष इन आठ स्थानों से रहित होकर निर्दोष एवं परिमित भाषा का प्रयोग समय पर करे तो वह भाषा स्वयं के लिए एवं दूसरों के लिए भी क्लेशकारिणी एवं अहितकारिणी होती है। क्रोध में बोला गया वचन दोषपूर्ण होता है। इसी प्रकार मान, माया एवं लोभ में आकर बोला गया वचन भी सावद्य होता है। क्रोध आदि विकारों में जब भाषा का प्रयोग किया जाता है तो उसमें अपने विकारों की मिलावट हो जाती है। इसलिए वह भाषा परिमित भी नहीं रहती, उसमें अनावश्यक विस्तार हो जाता है तथा कई बार दूसरे के दोषों पर अनावश्यक आक्षेप होता है, वक्ता स्वयं आवेश में रहने के कारण सत्य से विचलित भी हो जाता है। साधु-साध्वी का लक्ष्य अपने क्रोधादि विचारों पर विजय प्राप्त करना होता है। अतः उन्हें वाणी में भी इन विकारों के साथ भाषा का प्रयोग करना भटकाने वाला होता है। वक्ता स्वयं तो अशान्त होता ही है, वह श्रोता को भी अशान्त बना देता है तथा उसमें भी आवेश उत्पन्न होने की सम्भावना रहती है। **(शेषांश पृष्ठ संख्या 20 पर)**

विचार-वारिधि

संघ

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.

- सामान्य रूप से संघ का अर्थ है 'समूह'। अनेक प्राणियों के मिले-जुले समूह को संघ कहते हैं। सेवा, शुश्रूषा, संरक्षण आदि की सुविधा के लिए मनुष्य अपना कोई समूह बनाकर रहता है, जिसको संघ, समाज आदि किसी विशेष नाम से कहा जाता है।
- हजारों ईंटों को व्यवस्थित जमा दिया जाय तो अच्छी सी दिवाल या चबूतरा हो सकता है, किन्तु उनमें स्थायित्व लाने के लिए चूना, सीमेन्ट या चिकनी मिट्टी जैसा श्लेष जोड़ना पड़ता है, अन्यथा कभी भी धक्का खाकर ईंट गिर सकती है। ऐसे ही मनुष्य में भी, स्नेह, श्लेष और सरलता हो तो संगठन टिक सकता है। **'माया मित्ताणि नासेइ'** जहाँ कपट है वहाँ प्रेम-मैत्री नहीं रह सकती।
- जैसे जड़ जगत् में अनन्त परमाणु मिलकर स्कंध कहलाता है और व्यवहार में उपयोगी होता है, वैसे ही अनेक व्यक्ति मिलकर जब संगठित होते हैं तो उसे संघ कहते हैं। एक की शक्ति दूसरे से मिलकर वृद्धिंगत हो और उसका व्यवहार में विशेष उपयोग हो सके, यही संघ-निर्माण का मुख्य लक्ष्य है।
- शक्ति एवं योग्यता हर व्यक्ति में है। जब एक से अनेक मिलते हैं तो उनकी शक्ति भी उसी प्रकार बहुगुणी हो जाती है जिस प्रकार एक से एक मिलने पर ग्यारह गुणे हो जाते हैं। परन्तु इतना ध्यान रहे कि विजातीय या विषम स्वभाव के अणुओं का मेल शक्ति को बढ़ाता नहीं, घटाता है। इसीलिये सुवर्णखान का पार्थिव पिंड बड़ा होकर भी उतना मूल्य नहीं देता, जबकि शुद्ध होने पर सुवर्ण का पिंड लघु होते हुए भी बहुमूल्य हो जाता है। ऐसे ही मानव समाज में भी विषमशील और विरुद्ध आचार-विचार के लोगों का संगठन लाभकारी नहीं होता।
- गुणहीन संगठन घास की पूली या भारे के समान है और गुणवान संघ घास के रस्से के समान है। घास का भारा और पूली मोटी होकर भी निर्बल होती है और रस्सा पतला होकर भी शक्तिशाली।
- मिथ्यात्वियों का करोड़ों का समूह भी ज्ञानादि गुणों से हीन होने के कारण भवबंधन नहीं काट सकता, परन्तु सम्यग्ज्ञानी छोटी संख्या में भी ज्ञान आदि गुणों से सशक्त होकर स्व का बंधन काट सकते हैं। पर का बंधन काटने में निमित्त बन सकते हैं। यही सुसंगठन की महिमा है।
- भगवती सूत्र में संघ को तीर्थ कहा है **'तित्थं खलु चाउवण्णे समणसंघे'**। श्रमण प्रधान चतुर्वर्ण संघ ही तीर्थ है, तारने वाला है। -*'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं' ग्रन्थ से साभार*

प्रेरक-सन्देश

आचार्यप्रवर श्री हीरा का संदेश : श्रावक/श्राविकाओं के लिए

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के आचार्य पदारोहण का यह रजतवर्ष चल रहा है। संघ एवं समाज के हर वर्ग के सम्बन्ध में उनका विशिष्ट चिन्तन रहता है। हमारे निवेदन पर उन्होंने साधु-साध्वियों के लिए हिण्डौन में जो भाव अभिव्यक्त किए, उन्हें यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है। **-सम्पादक**

1. अरिहन्त-सिद्ध भगवान की सेवा में 64 इन्द्र आते हैं, जो देवाधिदेव हैं। यहाँ देवों को तो असंख्य बताया है। जब देवताओं के राजा इन्द्र सन्निधि में आते हैं तो देवगण भी अरिहन्त की शरण में आते ही होंगे। उन्हीं अरिहन्तों द्वारा प्ररूपित धर्म के अनुगामी श्रावक की आज स्थिति विचित्र है। दृढ़ता का अभाव यत्र-तत्र-सर्वत्र दृष्टिगत हो रहा है। जिसको अरिहन्त-सिद्ध भगवान की सच्ची शरण मिली हुई है, उनको गोवर्धन की चौदह कोशीय परिक्रमा, हनुमानजी की सवामणि, मंगलवार का व्रत, मांगलिक कार्य की शुरुआत हेतु गणेशजी को निमंत्रण, पूजन के साथ करने की परम्परा का अनुगमन, लक्ष्मी की आराधना, पूर्णिमा पर सत्यनारायण जी की कथा श्रवण करना, व्रत रखना, गोगा नवमी मानना, शीतलाष्टमी पर ठण्डा-बासी भोजन करना व माता को पूजने जाना, नवरात्रा पर नौदिवसीय पाठ का पारायण करना आदि अनेक रूढ़ियों पर चलना एवं चलने पर सहमति जताने की आवश्यकता नहीं है। 'अरिहन्तो महदेवो' उच्चारण करने तक ही सीमित नहीं रहना है, अपितु आचरण से श्रावक का परिचय देना है। जब सर्वश्रेष्ठ अहिंसामय धर्म की शरण पकड़ ली है, फिर गली के श्वान की तरह दर-दर भटकने की आवश्यकता कहाँ आ पड़ी? घर-घर घूमने वाले गली के श्वान को रोटी नसीब नहीं, दुत्कारा जाता है, जबकि पाले हुए श्वान को दूध-जलेबी का नाश्ता मिल रहा है, किस कारण से? क्योंकि वह एक ठिकाने पर है। दूसरा उदाहरण लीजिए एक बहिन, अपने पति में संतोष रख, शीलधर्म का पालन करती है जो पराई घर से आई हुई है, फिर भी घर की मालकिन बन जाती है। क्योंकि बहिन एक पतिधर्म पर अडिग है। दृढ़ता से प्रतिकूलता में भी अनुकूलता का सृजन संभव है।
2. आस्थावान धर्मी-भक्त भगवान की आज्ञा, संघ की मर्यादा और आचार्य के अनुशासन में चलने वाला होता है। वह अनजान, अव्रती की तरह हर कार्य में हिंसा के उपकरण काम में

लेने के बजाय, उनसे बचाव करता है। अपना नाम पहले आवे, इस लौकेषणा में न आकर वह संघ की मर्यादा का खयाल रखते हुए तदनुसार चलता है। अधर्मी, अव्रती की तरह कम्प्यूटर, मोबाइल, वाट्सअप आदि साधन व्यापारवत्, धार्मिक कार्यों में काम में नहीं लेने का पूरा-पूरा उपयोग रखता है। वह तीन करण तीन योग से त्यागी सन्तों के आचार का अपने विवेक से बचाव करता है। उसे अपने नाम-प्रतिष्ठा से भी बढ़कर संघ की मर्यादा और आचारवान संतों को इन सबसे बचाने का लक्ष्य रहता है।

3. प्रत्येक श्रावक आत्मा से परमात्मा बनना चाहता है। उसे पाने का मार्ग है- शुद्ध आचरण, श्रेष्ठ धर्म, अहिंसा, सत्य, शील, संतोष, क्षमा आदि आराधनाएँ और ये होती हैं अनुशासन से, नियम से, मर्यादा से, आचरण से, जिसे व्रत कहा जाता है।

   बिना व्रत का दर्शन श्रावक सम्यग्दृष्टि या चतुर्थ गुणस्थानवर्ती श्रावक तो हो सकता है, पर बिना व्रत वह पंचम गुणस्थानवर्ती श्रावक नहीं हो सकता, न श्राविका ही। वे भक्त कहे जा सकते हैं, अनुरागी धर्मी कहला सकते हैं, पर व्रती नहीं। "अतः स्वयं अपनी इच्छा से मर्यादा स्वीकार करना ही व्रत है।" बिना व्रत-ग्रहण के संसार के सारे पापों की क्रिया अव्रती को लगती है। राजा-रंक, कुंथु-हाथी, गरीब-अमीर, एकेन्द्रिय-पंचेन्द्रिय, इन सबको समान पाप लगता है। कारण है- आत्मा में कर्म आने का दरवाजा खुला है। जैसे बिना पाल का सरोवर, बिना ब्रेक की गाड़ी, बिना तट की नदी, बिना नींव वाला मकान ये सब खतरे वाले हैं, वैसे ही बिना व्रत का जीवन अविश्वसनीय, खतरे वाला एवं अव्यवहार्य है। अतः श्रावक-श्राविका बनना या कहलाना चाहते हैं तो व्रती बनें। आत्मा को परमात्मा बनाने वाला व्रत-नियम ही है।

4. कई प्राणी कीचड़ में जन्म लेते हैं और कीचड़ में ही मर जाते हैं, यथा- अस्पताल में जन्मते हैं एवं वहीं मर जाते हैं, शय्या में जन्मते, वहीं मर जाते हैं, सफर (यात्रा) करते जन्मते, वहीं मर जाते हैं, भोग में जन्म लेते और भोग भोगते ही मर जाते हैं। पर श्रावक-श्राविका का मरण विशिष्टता लिए होता है। वे अस्पताल में जन्मते, किन्तु आत्म-साधना से अरिहंत मार्ग में चरण बढ़ा देते हैं। शय्या में जन्मते हैं, पर समाधिमरण का वरण कर महोत्सव बना देते हैं। सफर में जन्मते हैं, पर हमसफर में आने वाले को त्याग मार्ग में बढ़ा देते हैं। भोग में जन्म लेते हैं और साधना योग से शरीर छोड़ते हैं। निष्कर्ष यही है कि कीचड़ में जन्म लेकर धर्म के कमल खिलाते हैं, इसी में श्रावक-श्राविका का जन्म लेना सार्थक है। देवता भी श्रावक के घर में जन्म की चाहना करते हैं, जबकि धन-ऐश्वर्य, भोग, इन्द्रिय सुखों की वहाँ कोई कमी नहीं है। फिर भी श्रावक कुल में जन्म पाने की देवगण भी चाहना कर रहे हैं तो असीम पुण्यवानी से आपको यह सब सुलभ हुआ है। करणी व पुरुषार्थ की ओर कदम बढ़ाकर धर्म के कमल खिला जीवन सुरभित बनायें। **(शेषांश पृष्ठ संख्या 26 पर)**

प्रवचन

पावसकाल में करें साधना

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.

आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. द्वारा नवजीवन मंगल कार्यालय, जलगांव (महा.) में 16 अगस्त 2000 को फरमाए इस प्रवचन का आशुलेखन श्री नौरतन मेहता, सह-सम्पादक जिनवाणी, जोधपुर द्वारा किया गया है।-**सम्पादक**

संसार के करणीय कार्यों से कृत-कृत्य होने वाले सिद्ध भगवन्तों को, तिरने-तारने वाले तीर्थ के संस्थापक तीर्थंकर भगवन्तों को तथा ज्ञान-दर्शन-चारित्र की आराधना में जीवन समर्पण करने वाले सन्त-भगवन्तों के चरणों में कोटि-कोटि वन्दन!

तीर्थंकर भगवान महावीर की आदेय-अनमोल वाणी समयचक्र के तीन विभाग कर रही है। एक शीतकाल है, दूसरा- उष्णकाल और तीसरा है- पावसकाल। अन्तर से जागृत, आत्म चिन्तन से सम्पन्न, सम्यक्-दर्शन से युक्त साधक किसी भी काल में किसी भी क्षेत्र में आत्म-जागरणा में आगे बढ़ता रहता है। परन्तु सामान्य साधक की साधना द्रव्य की अपेक्षा रखती है, क्षेत्र की शुद्धि और काल की अनुकूलता चाहती है, तभी उसके कुछ भाव बन पाते हैं। इन भावनाओं के निर्माण के लिए पावस प्रसंग को भगवान ने श्रेष्ठ व अनुकूलता वाला कहा है।

पावसकाल द्रव्य से शीतोष्ण काल माना जाता है। न अधिक सर्दी है, न अधिक गर्मी। सर्दी में ठिठुरन होती है तो गर्मी में तपन। लेकिन शीतोष्ण में आदमी साधना में आगे बढ़ना चाहे तो वह आगे बढ़ सकता है। साधना के लिए पावसकाल श्रेष्ठ है।

पावसकाल में द्रव्य पानी तो प्राप्त होता है, जिनवाणी के पानी की भी सतत वर्षा होती है। द्रव्य पानी तीन तरह का लाभ प्रदान करता है।

दाहोवसमणतण्हाछेदो, मलपंकपवहणं चेव।
तीहिं कारणेहिं जुत्तो, तम्हा तं दव्वदो तित्थं।।

पानी को व्यवहार में द्रव्य तीर्थ के नाम से भी कहा गया है। तीन विशेषताओं के कारण लोग नदियों के संगम को तीर्थ की संज्ञा देते हैं। उसे चाहे त्रिवेणी के नाम से कहिये या अन्य किसी नाम से, जल का संगम द्रव्य-तीर्थ कहलाता है। द्रव्य तीर्थरूप जल दाह का शमन करता है। ताप से घबराये हुए को शीतल जल से शांति का अनुभव होता है। गर्मी की तीव्रता हो, पसीना छूट रहा हो, प्यास लग रही हो, गला सूख रहा हो, प्राण कण्ठ तक आ रहे हों, ऐसे समय पानी मिल जाय तो सन्तोष होता है। द्रव्य-तीर्थ शरीर पर लगे मैल को धो

देता है, अशुचि को दूर करता है। जैसे द्रव्य-तीर्थ दाह का शमन करता है, प्यास बुझाता है तथा मैल और अशुचि का नाश करता है इसी तरह भाव-तीर्थ कषाय के ताप को शान्त करता है, मोह के मैल को दूर करता है और तृष्णा की प्यास को बुझाता है।

साधु तीरथ, श्रावक तीरथ, तीरथ ज्ञान प्रकाश।
ताप कषाय का मैल मोह का, हरे तृष्णा की प्यास।।

द्रव्य-तीर्थ द्रव्य जीवन-निर्वाह वाला है, प्राणी को बाहर की शांति देने वाला है लेकिन ज्ञान-दर्शन-चारित्र की आराधना रूप भाव-तीर्थ क्रोध-मान-माया-लोभ का नाश करता है। साधु, श्रावक एवं ज्ञान को भी तीर्थ कहा गया है, क्योंकि इन तीनों से संसार समुद्र को तैरा जा सकता है। ये तीनों भी ताप को शान्त करने में, आत्म-मैल को दूर करने में एवं तृष्णा की प्यास को बुझाने में सहायक हैं। बाहर में आपको चाहे कितने ही सुख हैं, सम्पदा है, ऐश्वर्य है, अनुकूलता है पर मन में परेशानी है तो आपको सुख की अनुभूति नहीं होगी। अभी आप तत्त्वचिंतक प्रमोदमुनिजी से सुन गए- ए.सी. कमरे में सोफा लगा हुआ है। डबल गद्दा है, तब भी करवटें लेते-लेते नींद नहीं आ रही है। क्यों? बात यह है कि बाहर की सुख-सुविधा तो है, मन की शांति नहीं, इसलिए नींद नहीं आती। किसी ने कुछ कह दिया, प्रतिष्ठा पर आँच का प्रसंग आ गया, मिले पदार्थों में कमी का खयाल आ गया तो बाहर की अनुकूलता को प्रतिकूलता में परिवर्तित होते देर नहीं लगती। ऐसे समय में मीठे बोल भी कड़वे लगते हैं।

कषाय का प्रबल वेग चाहे वह मिथ्यादृष्टि को है या सम्यक् दृष्टि को, आप श्रावकों को हो अथवा हम साधुओं को, उससे बचने का कोई रास्ता है तो वह है ज्ञान और वीतराग वाणी। आपको सौ तरह के टेन्शन हो सकते हैं। टेन्शन में भी आप घंटे भर सामायिक करके देखिये। सामायिक से आपका टेन्शन कम होगा। सामायिक में आप अपने-आपका चिन्तन कीजिये, अपने-आपको देखिये और आत्म-स्वभाव में स्थिर होने का प्रयास कीजिये। आप करेंगे तो अनुभव होगा। स्मरण, प्रार्थना, स्वाध्याय और समभाव की साधना में वह ताकत है जो आपके टेन्शन के रोग को दूर कर दे। छोटी-छोटी बातों में झगड़ा, क्लेश और विग्रह हो सकता है, उस समय सामायिक की साधना से कषाय की उत्पत्ति रोकी जा सकती है।

एक पिता अपने पुत्र को पढ़ने के लिए कहे, दूसरी बार कहने में फर्क पड़ जाएगा। और तीसरी बार कहने पर बच्चा नहीं पढ़े तो.....? पिता के तेवर बदल सकते हैं। समता देखनी हो तो वात्सल्यमयी माँ को देखो। बच्चे को वह एक-दो बार नहीं, पाँच-दस बार नहीं, पचास बार खड़ा करती है, किन्तु उसे गुस्सा नहीं आता। आपको चलना-फिरना किसने सिखाया? बोलना? माँ बच्चे को बोलना सिखाती है- ''बोल बेटा! नमो! माँ सौ

बार बोल जायेगी, उसके मन में क्रोध नहीं आता। माँ की जगह आप हों तो..... ?''

आप साधना कीजिये। सामायिक क्या है, उसे समझिये, सत्संग में आकर अपना रंग बदलिये। मैं एक बात और कह रहा हूँ- साधना में कदम बढ़ाने का प्रयास भी कीजिये। एक गाँव में एक भाई मिला। कहने लगा- महाराज! साधना तो घर पर होती है, साधना के लिए एकान्त चाहिये। धर्मस्थान में घर जैसा एकान्त नहीं मिलता। साधना अपने लिए है, लोगों को दिखाने के लिए नहीं होती। धर्मस्थान में आकर जो लोग साधना करने की बात करते हैं, यह उनका ढ़ोंग है। ऐसे प्रश्न करने वाले भी हैं, हो सकते हैं। मुझे कहना है- धर्मस्थान में साधना करना दिखावा नहीं है। प्रतिज्ञा आत्मविश्वास की सूचक है। जिसे अपने- आप पर विश्वास है, वह प्रतिज्ञा करता है। धर्मस्थान में साधना करना और घर पर साधना करना दोनों में अन्तर है। घर में आपके विचलित होने के अधिक प्रसंग हैं। जबकि धर्मस्थान में न फोन की घंटी बजने वाली है, न दूध वाला है और न ही बच्चों का रुदन, न टी.वी. की आवाज। घर पर साधना करने की स्थिति में एक नहीं, अनेक बाधाएँ आ सकती हैं, धर्मस्थान पूरी तरह निर्विघ्न हैं। आप धर्मस्थान पर आकर सामायिक करेंगे तो घर से अधिक आनन्द प्राप्त होगा। आप संकल्प कीजिये, हम आपकी संकल्प-शक्ति जगाने आए हैं।

द्रव्य पानी आ जाने से जलगांव ही नहीं, महाराष्ट्रवासियों का मन हराभरा हो गया है। द्रव्य पानी की तरह वीतराग वाणी का पानी जब तक अन्तर में नहीं उतरेगा तो बाहर की ठण्डक भी गर्मी का एहसास करा सकती है। आप द्रव्य-तीर्थ और भाव-तीर्थ दोनों को समझें। भाव तीर्थ है- ज्ञान-दर्शन-चारित्र और तप में आगे बढ़ना।

भाव-तीर्थ में ज्ञान को सबसे पहले रखा। कषाय के शमन में, ज्ञान जरूरी है। आज बात-बात में उत्तेजना आ रही है। हम जो कर रहे हैं वैसा ही होना चाहिए, इस तरह के भाव बन रहे हैं। ये सब कषाय के कारण हैं और कषाय बढ़ाने वाले हैं। ज्ञान कषाय के शमन के लिए है, अहंकार के लिए नहीं, वाद-विवाद के लिए नहीं, अपनी बात दूसरों पर थोपने के लिए नहीं है।

ज्ञान ज्योति है। ज्ञान स्वयं को प्रकाशित करता है तथा औरों को प्रकाशमान करता है। जरूरत है दीपक से दीपक की तरह प्रकाशित होने की। ज्ञान की साधना के लिए स्वाध्याय और समता की साधना के लिए सामायिक है। आचार्य भगवन्त कहा करते थे-

गिरत-गिरत प्रतिदिन रस्सी भी, शिला घिसावेला।
करत-करत अभ्यास मोह का जोर घटावेला।।

डोरी से पत्थर कठोर है। डोरी नरम है, कोमल है। एक बार डोरी पर पत्थर की चोट पड़ जाय तो डोरी के टुकड़े-टुकड़े कर दे। वही डोरी पत्थर पर आती-जाती रहती है तो

कठोर पत्थर को घिस देती है, पत्थर पर निशान अंकित हो जाता है। कोमल डोरी कठोर पत्थर को घिस देती है। इसी प्रकार पुरुषार्थ रूपी डोरी से कर्मरूपी पत्थर तोड़े जा सकते हैं। चाहिये निरन्तर अभ्यास।

आज आपके रहन-सहन की व्यवस्थाएँ बदल गई हैं। पहले बहिनें पनघट पर पानी भरने जाती थीं। कुँए पर धातु, मिट्टी और तांबे के बर्तन बहिनें साफ करती थीं। मिट्टी के घड़ों के निशान कुँए के पत्थर पर आज भी कई जगह दिखाई देते हैं। पत्थर पर पड़े निशान इस बात के गवाह हैं कि क्रिया की निरन्तरता फल देती है। आप समता का खयाल रखकर चलें तो यह जीव मोह रूपी पर्वत को तोड़ सकता है, कर्म के कलंक को मिटा सकता है। चाहिये निरन्तरता और सही दिशा में पुरुषार्थ।

आज पुरुषार्थ की कमी दिखाई दे रही है। महाराज आए हैं तो सामायिक कर ली, नहीं तो बैठका अपने स्थान पर। मैं आपसे पूछूँ- घर में मेहमान आते हैं तभी आप खाना खाते हैं? मेहमान नहीं आएं तो क्या आप भूखे रहते हैं? कोई मनुहार करे तो खाते हैं या बिना मनुहार के भी खाते हैं? भूख लगने पर आप बिना किसी मनुहार के खाते हैं, इसी तरह साधना के लिए आपको प्रेरणा की जरूरत नहीं रहनी चाहिये।

समता की साधना छोटे-बड़े सभी कर सकते हैं। आठ साल वाला भी और साठ साल वाला भी समता की साधना 'सामायिक' कर सकता है। आज जरूरत है इस साधना को अपनाने की। समता की साधना नहीं है तो बड़े-बड़े त्याग करने वाले भी छोटी-छोटी बातों के लिए लड़ पड़ते हैं।

तिण्णोहु सि अण्णवं महं, किं पुण चिट्ठसि तीरमागओ।
अभितुर पारंगमित्तए, समयं गोयम मा पमायए।।

-उत्तराध्ययन सूत्र, अध्ययन 10, गाथा 34

गौतम! महासमुद्र पार हो गया। अब तू किनारे पर आकर क्यों अटका है? भगवान ने आप श्रावकों को और हम साधुओं को सन्देश दिया- वीतरागता भीतर की वस्तु है। आप-हम संसार में बैठे हैं, इसलिए व्यवहार और निश्चय दोनों को लेकर चलना है। चातुर्मास के ये प्रसंग जगाने आए हैं। आरम्भ की प्रवृत्तियों से अलग हटकर धर्मसाधना में आगे बढ़ने की प्रेरणा देने हेतु चातुर्मास उपस्थित है। हमें क्या करना चाहिये। कविता की कड़ियों में कहा गया-

जीव की जतना कर लीजे....रे... जीव की जतना कर लीजे।
आयो वर्षाकाल धर्म की करणी कर लीजे।
नित बरसे जल बिन्दु गगन से जीव बहे असराल।
लीलन-फूलण पाँच रंग की, टालो उनको टाल।। जीव की....।।

चातुर्मास में जीव हिंसा से बचने और कषाय घटाने की प्रेरणा की गई है। भीतर में कितनी दया है, यह तो वीतरागी जानेंगे, पर व्यवहार में भी आप कुशलतापूर्वक जीवन निर्वाह नहीं कर रहे हैं तो हिंसा के भागी बन रहे हैं। प्रभु महावीर ने हमें एकस्थान पर रहने की आज्ञा क्यों प्रदान की? हम जहाँ कहीं रहें वहाँ न हिंसा करेंगे न करवायेंगे और न ही उसका अनुमोदन करेंगे। भगवान ने हम साधुओं के लिए ही नहीं, सबके लिए सन्देश दिया कि वर्षाकाल में जीव जन्तुओं की उत्पत्ति अधिक होती है। साधक! तू अपना गमनागमन सीमित कर। यह बात आपके लिए भी है। आप साइकिल से चलें, स्कूटर से चलें, मोटर से चलें, चलते समय कीड़ों की कतार आ सकती है, उनकी विराधना न हो, इसका आपको उपयोग रखना चाहिये।

कुछ लोग हैं जो यह तर्क देते हैं कि हमने कीड़े थोड़े ही मारे हैं। क्या चलना बंद कर दें? कोई ऐसा कहे तो कहना होगा कि उसकी दृष्टि सही नहीं है। हर प्राणी जीना चाहता है। आप दुःख नहीं चाहते इसी तरह प्रत्येक प्राणी दुःख नहीं चाहता। ध्यान रहे- काटोगे तो कटना पड़ेगा। मारोगे तो मरना पड़ेगा। आपको कोई बचाने वाला नहीं होगा। आप व्यवहार और निश्चय दोनों को साथ लेकर चलें।

आज कई लोग ऐसे तो मिल जायेंगे जो आलू-प्याज की सौगन ले लें, किन्तु जीवों की विराधना कैसे रुके, इसके लिए कितने लोगों का चिन्तन चलता है? आप महाराष्ट्रवासी प्रसन्न हैं। वरूण देवता आपकी सेवा में है। आप पानी का उपयोग कैसे करते हैं। इस पर भी आपको विचार करना चाहिये। एक तरफ पानी ही पानी है, तो दूसरी तरफ पानी पाने के लिए आन्दोलन हो रहे हैं। जरूरत है पानी के उपयोग को समझने की। आज पानी का उपयोग कैसे हो, इसकी समझ में कमी है। पानी है, पर उसका दुरुपयोग ज्यादा हो रहा है इसलिए पानी की कमी है। दातुन के लिए एक गिलास पानी पर्याप्त है, पर विवेक नहीं, इसलिए बहुत सा पानी व्यर्थ चला जाता है। स्नान के लिए कितना पानी चाहिये और आप कितना पानी बहाते हैं, कभी सोचा है? आप निरर्थक पाप के भागी क्यों बनते हैं?

चातुर्मास काल में आप निरर्थक जीव हिंसा के पाप से बचें। जितना छोड़ सकें आरम्भ छोड़ने का प्रयास करें। रात्रि-भोजन विराधना का कारण है। आज आपके भोजन का समय बदल गया। प्रातः 9 बजे नाश्ता, दो बजे भोजन और रात्रि में 9 बजे शाम का भोजन। रात्रि भोजन जो विराधना का बहुत बड़ा निमित्त है, उसे क्यों नहीं छोड़ते? आज जब यह प्रेरणा करते हैं तो प्रायः यही उत्तर मिलता है- महाराज! क्या करें घर पहुँचते-पहुँचते नौ बज जाते हैं। मैं आपसे पूछूँ- क्या आपके पूर्वज कमाते नहीं थे? बात समय की जितनी नहीं, आदत की है।

आंधो जीमण रात रो, करे अधर्मी जीव।
थोड़ा जीतव कारणे, देवे नरक में नींव।।

आप सुख चाहते हो तो दुःख देना छोड़ दो। लेने का देना लगा हुआ है। पावस के इस समय में कम-से-कम भ्रमण करें और जीव-यतना का ध्यान रखें। जीव विराधना के निमित्त को जितना बचा सकें, बचायें। काचरा छीलने वाले की खाल उतारी जा सकती है। आप सुनकर ही न रहें, जीवन में उतारने का प्रयास करेंगे तो पावसकाल आपके लिए सफल होगा। ■

आगमवाणी का शेषांश

दोनों जब आवेश में आकर भाषा का प्रयोग करने लगते हैं तो पुरानी बातें भी उभर कर सामने आती हैं, जिससे वातावरण विषमय एवं क्षोभजनक हो जाता है। इसलिए क्रोध आने पर साधक को भाषा का प्रयोग करने से बचना चाहिए, क्योंकि वह भाषा सावद्य होती है। इसी प्रकार मान, माया एवं लोभ में आकर बोली गई भाषा भी सावद्य कहलाती है। कई बार हँसी-मजाक में कहे गये वचन भी भारी पड़ जाते हैं। इसलिए ऐसा हास्य नहीं होना चाहिए जिससे किसी को ठेस पहुँचे। किसी से डर कर एवं किसी को डराने हेतु जिस भाषा का प्रयोग किया जाता है, वह भी सत्य नहीं होती, सावद्य होती है। आवश्यकता से अधिक बोलना मौखर्य है। मौखर्य का प्रयोग भी साधक के लिए वर्जित है। ज्यादा बोलने में गलत बोलने की संभावना रहती है। इसी प्रकार विकथा का वर्जन करना भी साधक के लिए अनिवार्य है। जिस विषय पर साधक को बात या चर्चा नहीं करनी चाहिए, उस विषय पर कृत चर्चा को विकथा कहा गया है। उदाहरण के लिए साधकों को स्त्रियों के शृंगार, हावभाव आदि के सम्बन्ध में, स्वादिष्ट भोजन एवं भांति-भांति के व्यंजनों के सम्बन्ध में, राजनीति, फिल्मों आदि के सम्बन्ध में बातें करना विकथा है। यह विकथा भी पूर्णतया त्याज्य है। साधु की वाणी की तीन विशेषताएँ होती हैं- 1. वह निर्दोष भाषा का प्रयोग करता है। 2. वह सीमित शब्दों में अपनी बात कहता है, अर्थात् वह अल्पभाषी होता है। 3. वह समय पर बोलता है, अनावश्यक नहीं बोलता। इस भाषा- समिति का प्रयोग जो साधु-साध्वी सजगतापूर्वक करते हैं, वे अपनी आत्मा का तो हित करते ही हैं, जिनके साथ रहते हैं या सम्पर्क में आते हैं उनका भी हित करते हैं। विवेकयुक्त भाषा या वचनों का प्रयोग वातावरण को आत्मीयता, माधुर्य एवं सरसता से सम्पन्न बनाता है। भाषा-समिति का यह विवेक गृहस्थ जीवन को भी सरस एवं मधुर बना सकता है।**-सम्पादक**

प्रवचन

द्रव्य शुद्धि और भाव शुद्धि

मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा.

मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. द्वारा वर्द्धमान भवन, पावटा-जोधपुर में 12 जनवरी, 2003 को फरमाए गए प्रवचन का आशुलेखन जिनवाणी के सहसम्पादक श्री नौरतन जी मेहता द्वारा किया गया है।-**सम्पादक**

प्रभु महावीर स्वामी की मंगलमय वाणी का स्वाध्याय चल रहा है। प्रभु ने जीवन को त्याग-वैराग्य, संयम और साधना से जोड़ने के लिए हमें आगमों के माध्यम से बहुमूल्य प्रेरणा दी है। आगम एक तरह से प्रभु के उपदेशों का प्रतिनिधित्व करते हैं। तीसरे पद के अधिकारी आचार्य का शासन-संघ में प्रमुख स्थान है और वे तीर्थंकर का प्रतिनिधित्व भी करते हैं, नमो आयरियाणं कह कर उन्हें नमस्कार किया जाता है, उनके नेतृत्व में चतुर्विध संघ साधना करता है। आचार्य भी आगम को प्रधानता देकर स्वयं पंचाचार का पालन करते हैं, दूसरों से करवाते हैं। नमस्कार मंत्र के तीन पद आचार्य, उपाध्याय और साधु आगमों की आज्ञा को लक्ष्य में रखकर स्वयं साधना करते हैं और दूसरों को संकेत-निर्देश करते हैं। आचार्य आते हैं और चले भी जाते हैं, लेकिन आगम अविच्छिन्न रूप से पंचम आरे के अन्त तक रहने वाले हैं।

हम भाग्यशाली हैं। हमको आगम वचनों को सुनने-सुनाने का अवसर मिल रहा है। कभी किसी के मन में चंचलता आ सकती है, कभी अस्थिरता का भाव बन सकता है उस समय सबसे बड़ा सम्बल आगम-स्वाध्याय से ही मिलता है। आगमों का स्वाध्याय करने का मतलब है- आत्मा के नजदीक रहना। उदाहरण के लिए बताया जाता है कि धागे में पिरोई हुई सूई भी गुम हो जाए तो पुनः शीघ्र मिल जाती है। धागा नहीं हो तो.....? ठीक इसी तरह आगमों से युक्त साधक अपने जीवन में कभी उदयभाव से गुमराह भी हो जाए तो उसे भविष्य में मार्ग मिलने की संभावना रहती है।

चित्तवृत्तियों को शान्त रखने में आगम सम्बल का काम करता है। भगवान ने संतों के लिए दिन के पहले प्रहर में स्वाध्याय की बात कही, वहीं अंतिम प्रहर में भी स्वाध्याय करने की बात कही। भगवान ने यहाँ तक कहा कि गोचरी लेकर आये संत आहार के पहले जिन-संस्तव रूप स्वाध्याय करे। यह नहीं कि सर्दी का मौसम है, आहार ठण्डा न हो जाय

इसलिये पहले पेट पूजा, फिर काम दूजा। संत गोचरी के पहले कायोत्सर्ग एवं जिन-संस्तव करे और रूखा-सूखा जो भी मिल जाए, उसे अग्लानभाव से सेवन करे।

जो पेट भरने के लिए खाते हैं वे पशु की श्रेणी में आते हैं, जो आरोग्य के लिए खाते हैं वे चतुर की श्रेणी में हैं और जो स्वाद के लिए खाते हैं वे मूर्ख की श्रेणी में हैं। जो मात्र साधना के लिए खाते हैं वे संत की श्रेणी में आते हैं। संत यह नहीं देखता कि आहार ठण्डा हो जायेगा, वह आहार के पहले स्वाध्याय करे। अंतिम प्रहर तथा प्रथम प्रहर में स्वाध्याय चलना चाहिये। कभी सन्नी पंचेन्द्रिय का शव भी पड़ा है, रात का समय है तब भी सौ हाथ दूर जाकर वह स्वाध्याय कर सकता है। भगवान् ने स्वाध्याय की महती प्रेरणा दी है।

अपनी चर्चा चल रही है घर-निर्माण को लेकर। मैं कड़ियाँ बोलूँ-

गुण सौरभ से रहे महकता, जहाँ जीवन सुखकर हो,
ऐसा अपना घर हो ।।
कथनी-करनी रहे एक-सी, नहीं जिसमें अंतर हो,
ऐसा अपना घर हो ।।
विनय-विवेक की नींव हो जिसमें, प्रेम-प्यार की छत हो,
रहे मधुर व्यवहार सभी से, वचनों में अमृत हो,
सहनशीलता का हो आंगन, कटुता का न ज़हर हो,
ऐसा अपना घर हो ।।

बन्धुओं! घर निर्माण को लेकर चर्चा चल रही है। हम नश्वर घर की चर्चा नहीं कर रहे हैं। हम ऐसे घर की चर्चा नहीं कर रहे हैं जो भूकम्प में मिटने वाला है, हम उस घर की चर्चा कर रहे हैं जिससे जीवन में सुकून मिले, शांति प्राप्त हो, गुणों की अभिवृद्धि हो। शाश्वत घर-निर्माण में आहार की बहुत बड़ी भूमिका होती है। आप हम अनाहारक बन जायें तब तो कहना ही क्या, पर अभी अनाहारक नहीं हैं। अनाहारक सिद्ध होते हैं ओर सिद्ध ही शाश्वत श्रेणी में आते हैं। हमारा आहार ऐसा हो कि हम आगे चलकर अनाहारक बन जायें।

आहार जहाँ बनता है उसे आप रसोई या चौका कहते हैं। चौका का मतलब होता है जहाँ चार प्रकार की शुद्धि होती है। द्रव्य-शुद्धि, क्षेत्र-शुद्धि और काल-शुद्धि की बात मैं आपके समक्ष रख गया, आज कुछ भाव शुद्धि को लेकर चर्चा करने की भावना है। वैसे दो मुख्य तत्त्व हैं-(1) द्रव्य एवं (2) भाव। साधना का प्राण भाव है। हमारी साधना की भूमिका भावों पर निर्भर है। हम यदि भावशून्य हो जायें और मात्र द्रव्य क्रिया ही करते रहें तो मामला अधूरा रह जायेगा। द्रव्य शुद्धि जरूरी है तो भाव शुद्धि भी जरूरी है। द्रव्यशुद्धि और

भावशुद्धि एक-दूसरे के पूरक हैं। द्रव्य शुद्धि है और भाव शुद्धि नहीं तो जैसा लाभ मिलना चाहिये नहीं मिलता। द्रव्य और भाव सहयोगी हैं, जरूरी हैं। एक सिक्के के दो पहलू हैं।

प्राचीन समय में बाजार में चाँदी के सिक्के चलते थे। सिक्के पर सरकारी मोहर होती। चाँदी का सिक्का है और उस पर मोहर नहीं तो वह उपयोगी नहीं, अतः मोहर भी जरूरी है। भगवान् ने द्रव्य शुद्धि और भाव शुद्धि दोनों को महत्त्व दिया। एक व्यवहार है, दूसरा निश्चय। व्यवहार क्या और निश्चय क्या? देव-गुरु-धर्म यह व्यवहार है। आत्मज्ञान और मोक्ष निश्चय है।

साधना भावों की शुद्धि के लिए की जाती है। उसके लिए द्रव्य भी जरूरी है। सामायिक का मतलब भावों की समता से है, फिर भी मुँहपत्ती-चोलपट्टा-दुपट्टा जरूरी है। द्रव्य की उपेक्षा नहीं की जा सकती। सामायिक का कोई यह अर्थ नहीं लगावे कि हमें तो राग-द्वेष से मुक्त होना है, आत्मा की शुद्धि करनी है, इसके लिए मुँहपत्ती की क्या जरूरत? वेष क्यों बदलना? कई-कई लोग हैं जो सोचते हैं कि सामायिक के लिए वेश की क्या जरूरत? पर नहीं, द्रव्य वेष के बिना भाव नहीं आते। भगवान ने द्रव्य की आवश्यकता भी बतलाई है। हम संत हैं यदि हमारे वस्त्र सफेद हैं, पर मुँह पर मुँहपत्ती है, हाथ में रजोहरण है और हम विहार में कहीं से निकल रहे हैं। पीछे से कोई भाई आया एवं लोगों से पूछा- क्या महाराज इधर से गये हैं? तुमने देखे हैं। तो वह कहेगा- हाँ! महाराज इधर से विहार करके गये हैं। यह कब होगा? जबकि देखने वाले ने संत को देखा। मतलब क्या? हम संत के द्रव्य रूप वस्त्रों में हैं तो व्यवहार रूप में कोई भी कह सकता है कि महाराज इधर से गये हैं।

आपकी सामायिक भी ऐसी ही है। आप सामायिक के दौरान मुँह पर मुँहपत्ती और इन रंग-बिरंगे कपड़ों के बजाय सामायिक वेष में हैं तो देखने वाला तुरन्त कह देगा कि अभी ये सामायिक में हैं। यदि वस्त्र परिवर्तन नहीं करो तो कोई नहीं कहता कि उनके सामायिक है। द्रव्य शुद्धि 'भाव शुद्धि' को जगाने का निमित्त भी है। गुरुदेव तो फरमाते थे कि जो वेष का परिवर्तन नहीं कर सकता वह मन को कैसे बदलेगा? मन के भावों में बदलाव द्रव्य सामायिक से आता है।

आप कल्पना करें- बिना सामायिक के आप बैठ गये, भले ही आप ध्यान कर रहे हैं, लेकिन सामायिक वेश में नहीं हैं तो देखने वाला कह देगा कि वे वहाँ बैठे हैं। क्या कर रहे हैं तो वह कहेगा बैठे हैं। आप यदि सामायिक के वेश में हों तो देखने वाला तुरन्त कह देगा कि वे सामायिक में बैठे हैं, सामायिक कर रहे हैं।

दो आदमी हैं। एक सामायिक लेकर बैठा है दूसरा यों ही बैठा है। पूछने वाला और देखने वाला सोचेगा कि जो सामायिक में बैठा है वह झूठ नहीं कह सकता और जो यों ही बैठा है वह टिप्पा भी मार सकता है। जो सामायिक में है उसकी विश्वसनीयता है, खुला है उस पर विश्वास आए यह जरूरी नहीं।

द्रव्य सामायिक से साधना का बल बढ़ता है। सैनिक अगर वर्दी में है और वह सीमा पर जाता है तो उसके भावों में सीमा की रक्षा का भाव कुछ और ही होता है। बिना वर्दी भावना है तो भी वर्दी वाले सैनिक की तरह वह नहीं माना जाता। सीमा पर सैनिक देखने का शायद सबको प्रसंग नहीं आता, पर चौराहे से निकलते आपने ट्रेफिक पुलिस को देखा है। ट्रेफिक पुलिस वाला अपनी ड्रेस में है तो उसके इशारे से वाहन गति करेंगे और आदमी भले ही वही है, किन्तु ड्रेस में नहीं तो आप समझेंगे कि यह तो रोड़ छाप आदमी है। उसके इशारे को कोई नहीं मानता। मतलब क्या? यूनिफार्म है तो उसकी पहिचान है। यूनिफार्म का महत्त्व है। यूनिफार्म बाहर की पहिचान है। बाहर की पहिचान को हम द्रव्य कहते हैं, लेकिन इसका महत्त्व कम नहीं। द्रव्य जरूरी है। द्रव्य सामायिक करते समय कभी मन में चंचलता आ सकती है, विकार पैदा हो सकता है। राजर्षि प्रसन्नचन्द्र का मन ध्यान-साधना में चंचल हो गया। उनका मन युद्ध भूमि में चला गया। मन में आर्त्त-रौद्र ध्यान पैदा हो गया। उस समय भगवान् से राजा श्रेणिक ने पूछा कि राजर्षि प्रसन्नचन्द्र इस समय मरे तो वे कहाँ जायेंगे? भगवान् ने कहा- अभी वे काल कर जायें तो नरक में जायेंगे। आप देखिये ज्यों ही राजर्षि के भावों में परिवर्तन आया तो वे कहाँ चले गए? उन्हें मन में युद्ध करते-करते भान हुआ कि मैंने सारे अस्त्र-शस्त्र काम में ले लिए हैं और मेरे सारे शस्त्र समाप्त हो गये, अब कोई हथियार नहीं तो कोई बात नहीं, मेरे पास मुकुट तो है मैं उसी का प्रहार करता हूँ। हाथ बढ़ाया, मस्तिष्क पर हाथ जाते ही भान हुआ कि मैं तो मुण्डित हूँ। मेरे पास न मुकुट है और न ही मैं युद्ध भूमि में हूँ। उसका द्रव्य मुण्डन से भाव मुण्डन जाग गया। सोचा- अरे, मैं संयमी हूँ। साधना में खड़ा हूँ, साधुपने में रमण हो रहा है, फिर मेरे में आर्त्त-रौद्र कहाँ से आ गया। द्रव्य मुण्डन का खयाल आते ही जग गया। कहने का मतलब है द्रव्य में कितनी बड़ी ताकत रही हुई है। उनके भाव बदले और उन्हें केवलज्ञान हो गया। एक अन्तर्मुहूर्त में उन्होंने अपना लक्ष्य हासिल कर लिया। अतः द्रव्य का महत्त्व है एवं भाव का भी महत्त्व है।

भरत चक्रवर्ती को आरसी महल में केवलज्ञान हो गया। केवलज्ञान होने के साथ देवता उपस्थित हुए। देवताओं ने पहले वस्त्र दिये, फिर नमन किया। अतः भावों के साथ द्रव्य का भी महत्त्व है।

अपनी चर्चा चल रही थी घर को लेकर। चौके के लिए द्रव्य-शुद्धि चाहिये, क्षेत्र-शुद्धि चाहिये, काल-शुद्धि चाहिये और भाव शुद्धि भी चाहिये। भाव शुद्धि का मतलब है आहार करते समय भावों की कैसी निर्मलता होनी चाहिये? आहर करते-करते गृहस्थ सोचे कि अभी कहीं से कोई संत-मुनिराज पधार जायें तो मैं उन्हें निर्दोष आहार देकर उनकी साधना में सहयोग करूँ। संत आए या नहीं, पर गृहस्थ इस तरह की भावना भाता है।

आहार शुद्ध हो और आहार करते समय भावना भी शुद्ध हो तो तन-मन में परम शांति मिलती है। आज प्रायः द्रव्य शुद्धि को महत्त्व मिल रहा है, भाव शुद्धि गौण होती जा रही है। आचार्य श्री फरमाते हैं- "आज धर्म साधना वेष की तरह होती जा रही है जबकि धर्म प्राण बनकर झलकना चाहिये। आज धर्म मात्र बाह्य वेष की तरह दिखाई पड़ रहा है। प्राचीन समय में इतनी तपश्चर्या नहीं होती थी जितनी आज हो रही है। पहले आज जितनी धार्मिक पाठशालाएँ नहीं थीं। प्रवचन सभा में जितनी उपस्थिति आज देखी जाती है शायद पहले इतनी उपस्थिति नहीं रही हो। आज चाहे सामायिक हो, स्वाध्याय हो, व्रत नियम हों बाहर की क्रियाओं में वृद्धि हो रही है, लेकिन भावों में वृद्धि नहीं है। आज धर्म गणित का आंकड़ा बनता जा रहा है जबकि धर्म आस्था का विषय है।"

हम प्रायः सुनते हैं बाबजी! चौमासे में बड़ो आनन्द रहियो। हमारा चातुर्मास ऐतिहासिक रहा। उनसे पूछें तो कहेंगे इतने मासखमण हुए, इतनी अट्ठाइयाँ हुईं। और न जाने कितने-कितने संघ आए। कहने वाले चातुर्मास को इसलिए स्वर्णिम कह रहे हैं कि वहां आने-जाने वालों का तांता लगा रहा। उनसे पूछा जाय कि चातुर्मास से तुम्हें क्या लाभ हुआ? तो वे कहते हैं बाबजी! मैं तो व्यवस्था में हा, म्हाने तो व्याख्यान सुनने की टाइम तक नहीं मिली। आपका ऐतिहासिक चातुर्मास का मापदण्ड बदल गया। आपको आंकड़ों का धर्म चाहिये। आप भी आज सरकारी आंकड़ों की तरह व्याख्यान में उपस्थिति, आने-जाने वालों की संख्या, तपस्या की बात कहते थकते नहीं। क्यों, तो आपको आकंड़ा चाहिये। आपने शायद कभी इस बात पर विचार तक नहीं किया कि मेरे कषाय कितने कम हुए हैं, मेरा क्रोध कम हुआ या नहीं? आप वर्षीतप और मासखमण की गिनती करते हैं, जीवन में राग-द्वेष विषय-कषाय पर विजय पाने का कभी आपने चिन्तन नहीं किया। आज तप करने वाले तो कई ऐसे भी हैं जो एक फोटोग्राफर नहीं लाने पर न जाने कितनी बार सुनाते हैं। आज त्याग-तप के फोटो का इतना प्रचलन हो गया कि वह हर आने वाले को दिखाता है। मैं पूछूँ- क्या तप फोटो खींचने और लोगों को दिखाने के लिए किया? कहना होगा- उसने आहार का त्याग तो किया, लेकिन ममत्व का त्याग नहीं किया, इसलिए तप अहंकार, कदाग्रह और पतन का कारण बन रहा है।

तप का मतलब है- कषायों को कृश करना। आज द्रव्य को तो महत्त्व मिल रहा है भाव गौण होता जा रहा है। अभवी जीव भी तप करते हैं, साधना करते हैं, पर उनकी तप-साधना फलदायी नहीं होती। अभवी जीव चतुर्विध संसार से मुक्ति नहीं पा सकता। आज तप का आंकड़ा तो बढ़ रहा है, लेकिन भाव-शुद्धि का प्रयास नहीं चलता। भावशुद्धि का प्रयास चले तो अनादि का मिथ्यात्व अन्तर्मुहूर्त में समाप्त किया जा सकता है। हम द्रव्य के साथ भाव के महत्त्व को भी समझें। जीवन का परिवर्तन भाव से हो सकता है। भावशून्य कोई भी साधना सफल नहीं होती। भाव की शुद्धि नहीं होने से द्रव्य सामायिक बदनाम हो जाती है और सामायिक से जीवन में जो परिवर्तन आना चाहिये, नहीं आता।

साधना का प्राण है- 'भाव'। आप चाहे सामायिक करें, तप करें, ध्यान करें, दया-संवर करें भाव शुद्धि का ध्यान रखें। साधना के हर क्षेत्र में भाव शुद्धि जरूरी है। आपने सुन रखा है परिणाम के कारण नरक की नींव खोदी जाती है तो मोक्ष के दरवाजे भी खोले जा सकते हैं।

एक छोटा-सा जीव मगरमच्छ के सिर पर बैठा है वह भावना से पाप-कर्म संचित करते-करते नरक गति का मेहमान बन सकता है। आप द्रव्य शुद्धि के साथ भावशुद्धि के महत्त्व को समझकर साधना करें। सामायिक में चित्त की शुद्धि, भावों की निर्मलता का असर घर-दुकान पर रहना चाहिये अन्यथा सामायिक बदनाम हो सकती है।

अपनी आहार-शुद्धि की बात चल रही थी। आपने कविता की कड़ियों के माध्यम से घर कैसा हो अभी उसका उच्चारण किया। भजन की एक-एक पंक्ति पर आप गंभीरता से विचार करेंगे तो घर स्वर्ग नज़र आयेगा। आप-हम शाश्वत घर चाहते हैं, ऐसा घर जो भूकम्प के झटकों में धराशायी न हो। शाश्वत घर कब मिलेगा? जब हम द्रव्य-शुद्धि के साथ भावशुद्धि पर ध्यान केन्द्रित कर साधना में आगे बढ़ेंगे। ■

आचार्यप्रवर श्री हीरा के संदेश का शेषांश

5. श्रावक-श्राविका आत्म-साधना के साथ संघ-उन्नयन के लिए भी समय निकालें। जो जिस प्रकार से सेवा दे सकता है उस प्रकार से सेवा दे, किन्तु साथ ही अपना समय निकालकर भी सन्त-सतियों एवं संघ-हित के लिए कार्य हेतु तत्पर रहे। माह में कोई एक दिन, कोई वर्ष में 15 दिन भी संघ की गतिविधियों के विकास में लगाए तो संघ का उन्नयन तो होगा ही, संघ में सौहार्द एवं आत्मीयता भी बढ़ेगी तथा स्वयं के कर्मों की निर्जरा भी होगी। समयदान की आज महती आवश्यकता है। कुछ प्रबुद्ध श्रद्धानिष्ठ समर्पित समयदानी हों तो संघ का अधिक हित हो सकता है।

-संकलन : श्री जगदीश जैन

अध्यात्म

दुःख-मुक्ति एवं सुख-समृद्धि के सूत्र (6)

श्री कन्हैयालाल लोढ़ा

139. गुणों का अभिमानी व्यक्ति अभिमान और दीनता की अग्नि में जलता रहता है।
140. गुण का अभिमान भंयकर दोष है, क्योंकि जो दोष 'दोष' के रूप में आता है उसे त्यागना सरल है, कारण कि कोई भी व्यक्ति दोषी कहलाना पसंद नहीं करता है।
141. जितेन्द्रियता, सेवा, त्याग और प्रेम से ही सच्चा सुख मिलता है।
142. वर्तमान में प्राप्त सामग्री, बल व योग्यता का सदुपयोग सेवा में करना अपने भविष्य को भी सुखद व उज्ज्वल करना है।
143. दूसरों के हित में रत रहने में अपना हित निहित है, कारण कि जैसा बीज वपन किया जाता है वैसा ही फल प्राप्त होता है।
144. सुखासक्ति का त्याग दुःख-मुक्ति का सरलतम उपाय है।
145. दुःख का भोग प्राणी को शक्तिहीन बनाता है और दुःख का प्रभाव सामर्थ्य प्रदान करता है।
146. दुःख के महत्त्व को न जानने से दुःख का भय होता है। दुःख का महत्त्व जान लेने पर दुःख का प्रभाव होता है।
147. दुःख के भय से प्राप्त सामर्थ्य का सदुपयोग नहीं हो पाता, शक्ति क्षीण होती है, आवश्यक विकास नहीं होता तथा असावधानी और प्रमाद पोषित होते हैं। अतः दुःख के भय का त्याग करना अनिवार्य है।
148. सुख की दासता करुणा का और दुःख का भय प्रसन्नता का अपहरण कर लेता है।
149. गहन निद्रा में हम कोई प्रवृत्ति नहीं करते हैं फिर भी विषय-सुख से अधिक मधुर सुख का अनुभव करते हैं। इससे यह प्रमाणित होता है कि कुछ न करने में हम सुख से वंचित हो जायेंगे, ऐसा नहीं है।
150. अपने अधिकारों का त्याग और दूसरों के अधिकारों की रक्षा करना स्वर्ग व अपवर्ग के सुख को पाना है।
151. दुःख का स्वतन्त्र अस्तित्व नहीं है। दुःख हमारी भूल का परिणाम है, अतः भूल का त्याग कर दुःख को सदा के लिए विदा किया जा सकता है।

-82/127, नीलगिरी पथ, मानसरोवर, जयपुर-302020 (राज.)

शोधालेख

आवश्यक के कर्त्ता कौन?

डॉ. पवनकुमार जैन

आत्म-विशुद्धि के लिए अवश्यकरणीय कार्य को आवश्यक कहा जाता है। जीवित रहने के लिए जिस प्रकार श्वास लेना जरूरी है, उसी प्रकार आध्यात्मिक क्षेत्र में जीवन की पवित्रता के लिए जो क्रिया अथवा साधना अनिवार्य है अर्थात् संयम-साधना के अंगभूत जो अनुष्ठान आवश्यक रूप से करणीय है, उसे ही आगम में आवश्यक की संज्ञा से अभिहित किया जाता है। 'आवश्यक' जैन साधना का मूल प्राण है तथा आवश्यक सूत्र के परिज्ञान से साधक अपनी आत्मा को निरखने-परखने का एक महान् उपाय प्राप्त करता है। साधु, साध्वी, श्रावक और श्राविका रूप चतुर्विध संघ द्वारा समाचरणीय नित्य कर्त्तव्य कर्म का स्वरूप आवश्यक सूत्र में प्रतिपादित है।

जिनभद्रगणि के अनुसार – 'आवश्यक' ज्ञानक्रियामय आचरण है, अत: मोक्षप्राप्ति का कारण है। जिस प्रकार कुशल वैद्य उपयुक्त पथ्य (आहार) के सेवन की आज्ञा देता है, वैसे ही भगवान् ने साधकों के लिए जिन आवश्यक क्रियाओं का विधान किया है, वे आवश्यक पथ्य हैं।[1]

अनुयोगद्वारचूर्णि में आवश्यक की परिभाषा इस प्रकार से दी गई है – '**सुण्णमप्पाणं तं पसत्थभावेहिं आवासेतीति आवासं**'– जो गुणशून्य आत्मा को प्रशस्त भावों से आवासित करता है, वह आवश्यक है। अनुयोगद्वार की टीका में– '**समग्रस्यापि गुणग्रामस्यावासक-मित्यावासकम्**'–जो समस्त गुणों का निवास स्थान है, वह आवश्यक है या यों कहें कि जो प्रशस्त गुणों से आत्मा को सम्पन्न करता है, वह आवश्यक है।[2]

मूलाचार के अनुसार जो राग-द्वेषादि विभावों के वशीभूत नहीं होता, वह अवश है। उस अवश का आचरण या कार्य आवश्यक कहलाता है।[3] ऐसे ही भाव नियमसार में भी प्राप्त होते हैं।[4]

अनुयोगद्वार के समान ही विशेषावश्यकभाष्य में आवश्यक के आठ पर्यायवाची नाम दिये हैं–आवश्यक, अवश्यकरणीय, ध्रुवनिग्रह, विशोधि, अध्ययनषट्कवर्ग, न्याय, आराधना और मार्ग, यथा–

आवस्सयं अवस्सकरणिज्जं, धुवनिग्गहो विसोही य।
अज्झयण-छक्कवग्गो, नाओ आराहणा मग्गो।।[5]

उपर्युक्त नाम आवश्यक के स्वरूप, महत्त्व एवं उसके विविध गुणों को प्रकट करते हैं। इस प्रकार इनमें किंचित् अर्थभेद होने पर भी नाम समान अर्थ को ही व्यक्त करते हैं। आवश्यक सूत्र का साधक-जीवन में महत्त्वपूर्ण स्थान है।

आवश्यक सूत्र के कर्त्ता

डॉ. समणी कुसुमप्रज्ञा के अनुसार आवश्यक के कर्त्ता के बारे में इतिहास मौन है और विद्वानों में भी मतैक्य नहीं है। यह सूत्र किसी एक स्थविर आचार्य की कृति है अथवा अनेक आचार्यों की, इस बारे में स्पष्टतया कुछ भी नहीं कहा जा सकता है। कुछ विद्वान् इसे किसी एक आचार्य की कृति नहीं मानते हैं। आचार्य भद्रबाहु के सामने भी इसके कर्तृत्व के बारे में कोई जानकारी नहीं थी, अन्यथा जैसे उन्होंने दशवैकालिक निर्युक्ति में दशवैकालिक के कर्त्ता रूप में आचार्य शय्यंभव का उल्लेख किया है वैसे ही आवश्यकनिर्युक्ति में भी आवश्यक के कर्त्ता का नामोल्लेख अवश्य करते। गणधरवाद की भूमिका में पंडित मालवणियाजी ने आवश्यक के कर्त्ता के बारे में विचार करते हुए इसे गणधर प्रणीत सिद्ध करने का प्रयत्न किया है।[6] इस प्रकार प्राचीन और अर्वाचीन मान्यताओं के आधार पर यहाँ आवश्यक सूत्र के कर्त्ता के बारे में विचार किया जा रहा है।

जैनागम के मुख्य रूप से अर्थागम और सूत्रागम ये दो भेद किये जाते हैं। अनुयोगद्वार के अनुसार तीर्थंकर अर्थागम के कर्ता हैं। उस अर्थागम के आधार से गणधर सूत्रों की रचना करते हैं इसलिए सूत्रागम या शब्दागम के प्रणेता गणधर कहे जाते हैं।[7]

आवश्यकसूत्र अंगबाह्य आगमों में परिगणित है, अत: इसकी रचना को लेकर दो मान्यताएं उभर कर आयी हैं - प्रथम मान्यता के अनुसार आवश्यकसूत्र तीर्थंकरों की अर्थरूप वाणी के आधार पर स्थविर आचार्य द्वारा रचित है। द्वितीय मान्यता इसे गणधरकृत स्वीकार करती है।

1. प्रथम मान्यता- अनुयोगद्वारसूत्र में तीर्थंकरों को आचारांग से लेकर दृष्टिवाद पर्यन्त बारह अंगों का प्रणेता बताया है। किन्तु यह कथन अर्थरूप आगम की दृष्टि से हुआ है। सूत्र रूप द्वादशांगी की रचना गणधरों ने की है। नंदीसूत्र[8] में भी ऐसा उल्लेख है। षट्खण्डागम की धवला टीका[9] और कसायपाहुड की जयधवला टीका[10] में द्वादशांगी और चौदहपूर्व के सूत्रकर्त्ता के रूप में गणधर गौतमस्वामी को मान्य किया गया है। इस मान्यता के समर्थन में आचार्य उमास्वाति ने तत्त्वार्थसूत्र में कहा है कि जो आगम गणधरकृत हैं, वे अंगसूत्र हैं और जो आगम स्थविरकृत हैं, वे अंगबाह्य कहलाते हैं।[11] बृहत्कल्पभाष्य[12], विशेषावश्यक-भाष्य[13] के अनुसार आगम के रचनाकार तीर्थंकर, गणधर एवं स्थविर आचार्य तीनों है।

आवश्यक सूत्र अंग बाह्य है, अतः यह स्थविर कृत है। यही प्राचीन परम्परा है।

आचारांग टीका के अनुसार '**आवश्यकान्तर्भूतः चतुर्विंशतिस्तव आरातीयकाल-भाविना भद्रबाहुस्वामिनाऽकारि**'[14] आवश्यक सूत्र के कुछ अध्ययन श्रुतकेवली आचार्य भद्रबाहु आदि एवं परवर्ती अनेक स्थविर आचार्यों की ज्ञान निधि के प्रतिफल रूप हैं। अतः निश्चय ही इसका वर्तमान रूप भगवान् महावीर के समय से ही प्रारम्भ होकर वि.सं.5-6ठी शताब्दी तक पूर्णता को प्राप्त हो चुका था। इस प्रकार आवश्यक के रचनाकार गणधर गौतम, भद्रबाहु आदि अनेक आचार्य हुए हैं।

पं. सुखलाल संघवी ने इसे ईसवीय पूर्व चौथी शताब्दी के प्रथम पाद तक रचित माना है।[15] अतः इसकी प्राचीनता स्वतः ही सिद्ध हो जाती है, क्योंकि निर्युक्तिकार भद्रबाहु ने सर्वप्रथम निर्युक्ति की रचना इसी सूत्र पर की है। ऐसी अवस्था में मूल 'आवश्यकसूत्र' अधिक से अधिक उनके कुछ पूर्ववर्ती या समकालीन किसी अन्य श्रुतधर का रचित हो सकता है।

पं. सुखलाल संघवी ने आवश्यक के कर्त्ता के सम्बन्ध में अपना निष्कर्ष लिखते हुए कहा है कि ''जो कुछ हो, पर इतना निश्चित जान पड़ता है कि तीर्थंकर के समकालीन स्थविरों से लेकर भद्रबाहु के पूर्ववर्ती या समकालीन स्थविरों तक में से ही किसी की कृति आवश्यक सूत्र है।''[16]

2. द्वितीय मान्यता– यह मान्यता आवश्यकसूत्र को गणधर प्रणीत मानने की है, जो कब से शुरु हुई यह तो ज्ञात नहीं होता है, लेकिन सर्वप्रथम यह परम्परा आवश्यकनिर्युक्ति में दिखाई दी है। निर्युक्तिकार के अनुसार सामायिकादि अध्ययनों की रचना भगवान् के उपदेश के आधार पर गणधरों ने की है। आचार्य भद्रबाहु ने भी इस बात को स्पष्ट करते हुए कहा है कि 'इसमें मैं जो कुछ कह रहा हूँ, वह परम्परा से प्राप्त हुआ है।' इसी बात का समर्थन जिनभद्रगणि ने किया है।[17] निर्युक्ति व भाष्य के मत का अनुसरण टीकाकार आचार्य हरिभद्र, मलयगिरि, मलधारी हेमचन्द्र ने भी किया है[18] एवं आवश्यकसूत्र की इस प्राचीन परम्परा का वर्णन अनुयोगद्वार में मिलता है। वहाँ भी आवश्यक के अध्ययनों के विषय में आवश्यक निर्युक्ति में आगत 'उद्देशादि' प्रदर्शक गाथाएं उसी रूप में हैं। आचार्य हरिभद्र ने आवश्यक टीका में आवश्यक निर्युक्ति के मत का अनुसरण किया है, इसी प्रकार मलधारी हेमचन्द्र ने भी इसी मत का समर्थन किया है।[19] अतः आवश्यक सूत्र गणधर-प्रणीत है, यह परम्परा टीकाकारों को मान्य है तथा यह परम्परा आवश्यकनिर्युक्ति जितनी ही प्राचीन है। नंदीसूत्र के चूर्णिकार जिनदासगणि और टीकाकार हरिभद्र दोनों ने 'अथवा' कहकर इस मान्यता से भिन्न

जो दूसरी मान्यता थी कि गणधर रचित द्वादशांगी है और स्थविर प्रणीत अंगबाह्य है, का भी कथन किया है, जिसके अनुसार अंगबाह्य आवश्यकसूत्र स्थविर प्रणीत सिद्ध होता है।[20]

संक्षेप में कहें तो प्राचीन मान्यता के अनुसार आवश्यक के अंगबाह्य होने से गणधर-प्रणीत नहीं माना जाता था, किन्तु बाद में आचार्य इसे भी गणधर-कृत मानने लगे। साथ ही यह भी मान्यता रही कि सर्वप्रथम आवश्यक सूत्र ही गणधर कृत है, बाद में अन्य अंगबाह्य आगमों को भी गणधर कृत स्वीकार किया जाने लगा। इसका भी कारण यह होगा कि आगम-ग्रंथों में अनेक स्थलों पर जहाँ-जहाँ भगवान् महावीर के शिष्यों के प्रायः श्रुत का वर्णन आता है वहाँ-वहाँ उन्होंने 'सामायिकादि ग्यारह अंगों का अध्ययन किया' ऐसा वर्णन मिलता है। सामायिक, यह आवश्यक का प्रथम अध्ययन है अतः अध्ययन क्रम में पहला स्थान होने से ग्यारह अंगों में पहला है, अतः पं. दलसुख मालवणिया आवश्यक को गणधर कृत[21] मानते हैं। आवश्यकनिर्युक्ति में सामायिक अध्ययन के विषय में उल्लेख है कि यह अध्ययन गुरुजनों के द्वारा उपदिष्ट और आचार्य परम्परा द्वारा आगत है।[22] जिनभद्रगणि और मलधारी हेमचन्द्र ने गुरुजन का अर्थ जिन, तीर्थंकर और गणधर किया है।[23]

समीक्षा-तीर्थंकर भगवान् केवलज्ञान होने के बाद चतुर्विध संघ की स्थापना करते हैं। जिस दिन संघ स्थापना होती है, उस दिन भी साधु-साध्विओं के लिए आवश्यक अवश्यकरणीय होता है एवं उस दिन दीक्षित सभी साधु-साध्वी विशिष्ट मति वाले हों यह आवश्यक नहीं, अतः उनके लिए आवश्यक की आवश्यकता होती ही है। अतः आवश्यक की भी रचना उसी दिन होना संभव है। कल्याणविजयजी का भी मानना है कि आवश्यक पहले गणधरकृत था तथा बाद में स्थविरकृत हो गया अर्थात् कुछ भाग गणधरकृत जैसा था, वैसा ही रख दिया गया तथा शेष भाग अपने भावानुसार रच दिये गए। किन्तु वर्तमान में जो आवश्यक प्राप्त होता है, वह पूर्णतः गणधर कृत नहीं है। उसमें काल क्रम से पूर्वाचार्यों ने परिवर्तन किया है। अतः वर्तमान में प्राप्त आवश्यक का कुछ भाग गणधरकृत और कुछ भाग स्थविरकृत हो सकता है। यही मानना अधिक तर्क संगत प्रतीत होता है।

पाद टिप्पण-

1. विशेषावश्यकभाष्य, गाथा 3-4
2. उद्धृत-युवाचार्य मधुकरमुनि, आवश्यकसूत्र, प्रस्तावना, पृ.16-17
3. ण वसो अवसो अवसस्स कम्मावस्सयंति बोधव्वा। - मूलाचार गाथा 515
4. नियमसार, गाथा 141
5. विशेषावश्यकभाष्य, गाथा 872

6. आवश्यक निर्युक्ति-भाग 1, भूमिका, पृ. 20

7. (अ) अत्थं भासइ अरहा सुत्तं गंथंति गणहरा निउणं। सासणस्स हियट्ठाए तओ सुत्तं पवत्तइ। - आवश्यकनिर्युक्ति, गाथा 92

(ब) सुत्तं गणधरगथिदं तहेव पत्तेयबुद्धकहियं च। सुदकेवलिणा कहियं अभिण्णदसपुव्विगथिदं च। - भगवती आराधना, गाथा 33

(स) पुणो तेणिंदभूदिणा भावसुदपज्जयपरिणदेण बारहंगाणं चौद्दहपुव्वाणं च गंथाणमेक्केण चेव मुहुत्तेण कमेण रयणा कदा। तदो भाव-सुदस्स अत्थ पदाणं च तित्थयरो कत्ता। तित्थयरादो सुद-पज्जाएण गोदमो परिणदो त्ति दव्व-सुदस्स गोदमो कत्ता। तत्तो गंथ-रयणा जादेत्ति। - षट्खण्डागम (धवला) पु. 1. सू. 1.1.1, पृ0 65,

(द) तदो तेण गोअमगोत्तेण इंदभूदिणा अंतोमुहुत्तेणावहारियदुवालसंगत्थेण तेणेव कालेण कयदुवालसंगगंथरयणेण गुणेहि सगसाणस्स सुहम्माइरियस्स गंथो वक्खाणिदो। - कसायपाहुड (जयधवल) भाग 1, गाथा 1, पृ. 76

8. नंदी सूत्र, सूत्र 76, पृ. 152

9. षट्खण्डागम (धवला) पु. 1. सू. 1.1.1, पृ0 65

10. कसायपाहुड (जयधवल) भाग 1, गाथा 1, पृ. 76

11. तत्त्वार्थभाष्य, 1.20

12. बृहत्कल्पभाष्य, गाथा 144

13. विशेषावश्यकभाष्य, गाथा 550

14. आचारांगटीका, पृ. 56

15. दर्शन और चिन्तन-भाग 2, पृ. 194-196

16. दर्शन और चिन्तन-भाग 2, पृ. 197

17. सामाइयनिज्जुत्तिं, वोच्छं उवएसियं गुरुजणेणं। आयरियपरंपरएण, आगयं आणुपुव्वीए। - आवश्यकनिर्युक्ति गाथा 87, विशेषावश्यकभाष्य, गाथा 1080

18. (अ) अनंगप्रविष्टमावश्यकादि, ततोऽर्हत्प्रणीतत्वात्। - हारिभद्रीया वृत्ति पृ. 78, मलयगिरि पृ. 193

(ब)इह चरणकरणक्रियाकलापतरूमूलकल्पं सामायिकादिषडध्ययनात्मक श्रुतस्कंधरूप-मावश्यकं तावदर्थतस्तीर्थकरैः सूत्रतस्तु गणधरैविरचितम्।-मलधारी हेमचन्द्र,बृहद्वृत्ति पृ. 1

19. गणधरवाद, प्रस्तावना, पृ. 8

20. नंदीचूर्णि- पृ. 78, हारिभद्रीया वृत्ति- पृ. 78, मलयगिरि- पृ. 193, जैन तर्कभाषा- पृ. 23

21. गणधरवाद, प्रस्तावना पृ. 9

22. आवश्यकनिर्युक्ति, गाथा 87, विशेषावश्यक भाष्य गाथा 1080

23. जिण-गणहरगुरुदेसियमायरियपरं परागयं तत्तो। - विशेषावश्यकभाष्य गाथा 1081 एवं वृत्ति

- केन्द्रीय सुधर्म जैन ग्रन्थालय एवं शोध संस्थान, ई-40, शास्त्रीनगर, जोधपुर(राज)

जीवन-व्यवहार

यतनाधर्म महान् (2)

श्री अरुण मेहता 'एफ.सी.ए., एफ.सी.एस.'

5. वनस्पतिकाय का स्वरूप

वनस्पति चेतना वाली है। इसमें पृथक्-पृथक् सत्ता वाले अनेक जीव रहे हुए हैं। सूक्ष्म, साधारण और प्रत्येक ऐसे वनस्पति के तीन भेद हैं। अग्रबीज, मूलबीज, पर्वबीज, स्कन्धबीज, बीजरुह, समूर्च्छिम, तृण और लता ये वनस्पति के आठ मुख्य प्रकार हैं। अग्नि, नमक आदि शस्त्रों से वनस्पतिकाय के जीव मरकर अचित्त हो जाते हैं। वनस्पतिकाय के जीव मनुष्य की भांति विविध अवस्थाओं को प्राप्त करते हैं। जैसे मनुष्य का जन्म होता है वैसे ही वनस्पति भी उत्पन्न होती है। मनुष्य का शरीर बढ़ता है वैसे ही वनस्पतिकाय भी पोषण पाकर बढ़ती है। मनुष्य चेतनायुक्त है ऐसे ही वनस्पति भी चेतनायुक्त है। मनुष्य आहार करता है वैसे ही वनस्पति भी आहार करती है। मनुष्य अंग कटने पर दुःखी होता है वैसे ही वनस्पति भी छेदन-भेदन-स्पर्शन करने पर दुःख को प्राप्त करती है। मनुष्य के तन में चय-उपचय होता है वैसे ही वनस्पति में भी चय-उपचय होता है।

वनस्पतिकाय की यतना

सभी प्रकार की वनस्पति, फल, सब्जियाँ, पेड़, पौधे, साबूत अनाज, फूल-पत्ते आदि की अधिक से अधिक यतना करना हमारा प्रयास व लक्ष्य होना चाहिये। जमीकन्द, नीगोद, लीलण-फूलण, काई आदि अनन्तकायिक हैं, इनका पूर्ण वर्जन करना चाहिये। बहुबीजी फल व सब्जियों के उपयोग करने पर पाप भी बहुत लगता है, अतः उनका कम-से-कम उपयोग करना चाहिये। गार्डन-दूब आदि नहीं लगाना चाहिये। हरी दूब पर नहीं चलना चाहिये। हरी दूब के आसरे अनेक त्रस जीव उसमें रहते हैं, दूब पर चलने से इन त्रस जीवों की भी हिंसा होती है। दूब में निरन्तर गीला रहने से अनेक स्थान पर हरी काई भी उत्पन्न हो जाती है, जो अनन्तकाय होती है और इस पर पैर आ जाने मात्र से अत्यधिक हिंसा होती है। जिस स्थान या पदार्थ पर निरन्तर गीला रहता है वहाँ पर दो-चार दिनों में वनस्पति व काई आदि पैदा हो जाती है, अतः इस बात का पूरा ध्यान रखना चाहिये कि कहीं पर भी निरन्तर गीला न रहे, उसे शीघ्र सुखा कर देना चाहिए। रोटी-सब्जी आदि भोजन को बासी नहीं रखना चाहिये। बासी रोटी-सब्जी, मिठाई-नमकीन आदि भोजन के पदार्थों में रसज जीव व लीलण-फूलण आदि पैदा हो जाती है। भोजन के पदार्थों का उपयोग कर लेने के बाद बची हुई सामग्री को किसी अन्य को उपयोगं हेतु समय रहते दे देना चाहिये, जिससे कि वे बासी न हों। अन्यथा

गर्मी के दिनों में इनमें रसज व वर्षाकाल में लीलण-फूलण आदि शीघ्र (एक या दो दिन में) उत्पन्न हो जाती है। घर में इकट्ठा किया हुआ भोजन की कच्ची सामग्री में भी सडान्ध होने पर रसज व लीलण-फूलण उत्पन्न हो सकती है, अतः इनकी पूरी यतना के साथ सार-सम्भाल रखनी चाहिए। घर में रखे फ्रिज में निरन्तर गीला होने से अगर नियमित सफाई आदि का विवेक नहीं रखा जाय तो काई, लीलण-फूलण आदि उत्पन्न होने का डर रहता है, अतः पूरी सावधानी रखनी चाहिये। फल-सब्जियाँ आदि एक साथ अधिक मात्रा में खरीदकर फिर अनेक दिनों तक उनका उपयोग करना भी लीलण फूलण आदि को उत्पन्न होने का मौका देना है, ऐसी अयतना से भी बहुत पापकर्मों का बंध होने का खतरा रहता है, अतः बचना चाहिये। वर्षाकाल में हरी सब्जियाँ, फल में विशेष लट आदि त्रस जीवों की उत्पत्ति हो जाती है। अतः अच्छी तरह देखभाल कर खरीदना व उपयोग करना चाहिये। वर्षाकाल में पत्ते की सब्जियों में सब्जी के रंग के ही लट आदि त्रस जीव उत्पन्न हो जाते हैं, अतः कम-से-कम वर्षाकाल में पत्ते की सब्जी का पूर्ण त्याग करना चाहिये।

वर्षाकाल में कच्ची भूमि पर विशेष रूप से अनेक प्रकार की वनस्पति व काई आदि लग जाती है, अतः गमनागमन में विशेष ध्यान रखकर यतना करनी चाहिये। पानी के हौद, टंकी आदि में जिसमें निरन्तर पानी पड़ा रहता है उसमें वनस्पति व काई की उत्पत्ति होने की नियमा मानी गई है, अतः इससे बचना चाहिये।

6. त्रसकाय का स्वरूप

हिलने, डुलने वाले, आगे-पीछे आने-जाने वाले, संकुचन-प्रसारण करने वाले, शब्द बोलने वाले, भयभीत होकर भागने-छुपने आदि लक्षण वाले जीव त्रसकाय के जीव होते हैं। त्रसकाय के जीवों के मुख्यरूप से आठ प्रकार हैं- 1. अण्डे से उत्पन्न होने वाले अंडज, 2. थैली से उत्पन्न होने वाले पोतज, 3. जर से लिपटे हुए उत्पन्न होने वाले जरायुज, 4. रस के विकार में उत्पन्न होने वाले रसज, 5. स्वेद अर्थात् पसीने से उत्पन्न होने वाले जूं, लीख, खटमल आदि स्वेदज। 6. बिना गर्भ के उत्पन्न होने वाले सम्मूर्च्छिम। 7. भूमि फोड़कर उत्पन्न होने वाले उद्भिज्ज तथा 8. उपपात से उत्पन्न होने वाले औपपातिक तथा द्वीन्द्रिय से लगाकर पंचेन्द्रिय तक के जीव त्रस जीव हैं।

त्रसकाय की यतना

त्रसकाय के जीव हलन-चलन वाले होते हैं, जिससे उनकी सत्ता का अहसास हमें हो जाता है तथा उनकी विराधना से बचना थोड़ा आसान हो जाता है, लेकिन फिर भी अनेक छोटे-छोटे त्रस जीव जैसे कीड़ी, कुंथुआ आदि होते हैं जो हमें आसानी से दिखाई नहीं देते

हैं। ऐसे छोटे-छोटे जीवों की सावधानी से चलने-फिरने आदि से रक्षा करना हमारा कर्त्तव्य बनता है, यह हमारा धर्म है। इसके अलावा अनेक त्रस जीवों की उत्पत्ति हमारी दैनिक जीवन की असावधानी से हो जाती है, अतः प्रथम तो सावधानी रखकर उनकी उत्पत्ति का कारण ही नहीं बनना चाहिये। इसके उपरान्त भी जो उत्पन्न हो जाते हैं उनकी विराधना से बचना चाहिये। गन्दगी, ठण्डे व गीले स्थानों पर जीवोत्पत्ति ज्यादा होती है, अतः गंदगी नहीं रखनी चाहिये। अनाज, दालें, मसाले आदि खाद्य सामग्री को पूर्ण सावधानी से सहेज कर रखना चाहिये, जिससे उसमें, इल्ली, लट, घुन आदि जीवों की उत्पत्ति ही न हो। जूठा न डालें, थाली धोकर पीने की आदत डालें। जूठा खाद्यान्न नाली, गटर में जाने से उनमें जीवोत्पत्ति होती है। खाने-पीने का सामान बर्तन में खुला नहीं रखें, ढककर रखें, जिससे उसमें जीव गिरने से भी बचेंगे, व उनकी महक से आकर्षित नहीं होंगे। खाने के पदार्थों को उनकी समय सीमा से अधिक न रखें व समय-समय पर धूप आदि देकर उनकी देखभाल करते रहना चाहिये। घर में सूर्य का प्रकाश उचित मात्रा में आना चाहिये अन्यथा घर में त्रस जीवों की उत्पत्ति बढ़ जाती है। घर की सफाई की उचित व्यवस्था करके जाले आदि पड़ने से रोका जा सकता है। फर्नीचर, कपड़े, बिस्तर, चादर, रजाई, कम्बल आदि का समय-समय पर प्रतिलेखन होने से उनमें जीवोत्पत्ति से बचा जा सकता है। झूठे बर्तन शीघ्रातिशीघ्र साफ कर लेने चाहिये, जिससे उनमें चींटी, तिलचट्टे आदि गिरकर मरें नहीं। घर के कार्य अंधेरे में नहीं कर उचित प्रकाश में करें जिससे कोई त्रस जीव हो तो नज़र आ सके। रात को भोजन नहीं करें व न ही बनायें। कोई भी खाने की सामग्री सड़क पर या बाहर इधर-उधर नहीं फैंकें। जानवरों के खाने के उचित स्थान पर रखें, तथा कभी भी प्लास्टिक की थैली में डालकर नहीं फैंकें। गाय-भैंस आदि जानवर अगर उनको थैली सहित खायेंगे तो वह प्लास्टिक उनके पेट में जाकर उनकी मृत्यु का कारण बनता है। अनाज, दालें, मसाले आदि घर की सामग्री में पारे की गोलियाँ डालकर एयर टाइट डिब्बे में रखने से उनमें जीवोत्पत्ति नहीं होती है। चींटियों के आने के स्थान पर राख या हल्दी डाल दी जाये तो चीटिंयाँ आनी बंद हो जाती हैं व उन्हें कष्ट भी नहीं होता है। वार्निश, रंग आदि लगा देने से लकड़ी के दरवाजे, फर्नीचर पर जीवोत्पत्ति नहीं होती है। खाद्य सामग्री को समय-समय पर धूप में रखने से भी उनमें जीवोत्पत्ति की संभावना कम हो जाती है। मक्खी-मच्छर की उत्पत्ति अस्वच्छ, ठंडे व गीले स्थान पर ज्यादा होती है, अतः इस बात की सावधानी रखनी चाहिये कि घर के हर भाग में धूप व हवा बराबर पहुँचे तथा गंदगी न रहे, जिससे मक्खी-मच्छर की उत्पत्ति न हों। उत्पत्ति होने पर पूर्ण सावधानी से उनकी रक्षा का उपाय करना चाहिये। घर की नालियों में जहाँ अंधेरा व गीलापन रहता है वहाँ कॉकरोच उत्पन्न होते हैं। नालियों में पानी इकट्ठा न हो तथा खाद्य पदार्थ नाली में नहीं गिराये जायें तो उनकी उत्पत्ति को रोका जा

सकता है। इनको मारने की दवा का उपयोग नहीं करना चाहिये। घर में खाट, गद्दे आदि में खटमल व दरवाजे, खिड़की, फर्नीचर आदि में उदइ (दीमक) की उत्पत्ति भी साफ सफाई नहीं रखने व अयतना से हो जाती है। पुस्तकों, कागज की फाइलों आदि में भी दीमक की उत्पत्ति असावधानी के कारण से हो जाती है। पूर्ण यतनापूर्वक साफ सफाई व नियमित प्रतिलेखना करते रह कर इनकी उत्पत्ति व विराधना से बचना चाहिये। चातुर्मास काल में जीवोत्पत्ति ज्यादा होती है अतः विशेष सावधानी रखने की आवश्यकता होती है। चातुर्मास काल में गमनागमन कम से कम व अतिआवश्यक होने पर ही करना चाहिये। पन्द्रह कर्मादान के व्यवसायों-व्यापारों से दूर रहना चाहिये।

उपर्युक्त कुछ उदाहरणों के माध्यम से यह समझने का प्रयास किया गया है कि कहाँ-कहाँ जीवोत्पत्ति और उनकी विराधना से बचा जा सकता है। पाठक स्वयं अपने जीवन व दिनचर्या का अवलोकन कर पहचानने की कोशिश करे कि वह कहाँ-कहाँ पर जीवोत्पत्ति और उनकी विराधना से बच सकता है। फिर ईमानदारी से शक्यता तक उनकी यतना करता हुआ अपना जीवनयापन करे, विराधना से बचे व अपने जीवन को बचाये, यही भावना है।

पृथ्वीकाय से लेकर त्रसकाय तक के जीवों की किसी भी प्रकार से हिंसा करना नहीं, करवाना नहीं तथा करने वाले का अनुमोदन नहीं करना मन-वचन-काया से यही उत्कृष्ट यतना धर्म है। एक-एक काय के जीवों की कैसे जाने-अनजाने में हिंसा हो जाती है, या हो सकती है, उसे समझकर उससे बचने का प्रयास करना ही, बचना ही यतना धर्म है।

उपर्युक्त लेख में छः काय का स्वरूप जैसा दशवैकालिक सूत्र में श्रद्धेय आचार्यप्रवर 1008 श्री हस्तीमल जी म.सा. ने विवेचन किया है, उसी के आधार पर दिया गया है तथा जो जानकारी और समझ मुझको गुरु भगवन्तों के सान्निध्य से प्राप्त हुई है वैसा ही प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। जो भी अच्छी बात है वह सब ज्ञानी गुरुभगवन्तों का कृपा प्रसाद है। जो कुछ भी त्रुटि या कमी रह गई है वह मेरी है।

-पूर्व महामंत्री, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ,
467-ए, 7 वीं 'ए' रोड़, सरदारपुरा, जोधपुर-342003 (राज.)

सूचना

जिनवाणी में प्रकाशनार्थ समाचार प्रत्येक माह की 25 तारीख के पूर्व हमें प्राप्त हो जाने चाहिए, अन्यथा वे समाचार सम्बद्ध माह की जिनवाणी में प्रकाशित नहीं हो पायेंगे। उसके आगामी अंक में ही उन्हें स्थान दिया जा सकेगा।

सम्पादक
जिनवाणी मासिक पत्रिका

विनयचन्द डागा-मंत्री
सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर

जीवन-व्यवहार

स्वाध्याय से होता जीवन श्रेष्ठ

प्रवर्तक श्री गणेशमुनि शास्त्री

एक बार किसी विद्वान् के साथ चर्चा चल रही थी। उनका अध्ययन कक्ष देखा। उसमें उन्होंने सैकड़ों फाइलें लगा रखी थीं। मैंने पूछा- "आप इन फाइलों में क्या रखते हैं?" विद्वान् मुस्कुराए और बोले- "इनमें मेरी इतने वर्षों की गाढ़ी कमाई है।"

मैंने पूछा- "क्या मतलब? क्या रुपया नोट आदि रखते हैं?"

विद्वान् ने अपनी फाइलें दिखाईं। उन पर भिन्न-भिन्न विषयों के शीर्षक लगे थे। फिर उनको खोला तो उनमें विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं, समाचार-पत्रों की कटिंग या जीरोक्स कॉपियाँ लगी थीं। ज्ञान, विज्ञान, मनोविज्ञान, राजनीति, व्यंग्य, हास्य, विविध जानकारियाँ, देश-विदेश की अनोखी आश्चर्य जनक घटनाएँ, संस्मरण, विविध विषयों के महत्त्वपूर्ण लेख, विशिष्ट व्यक्तियों के भाषण आदि इतने विविध विषय थे कि लगा ज्ञान का एक बहुत बड़ा दुर्लभ खजाना है। इसमें उनकी वर्षों की मेहनत, अध्ययन और चयन की कुशलता छिपी है।

समय पर इस प्रकार की सामग्री मिलना बहुत दुर्लभ और प्रायः असंभव बात लगती है। परन्तु धीरे-धीरे, बूँद-बूँद सहेजा ज्ञान उनकी प्रभावशाली लेखन-शैली और विद्वत्ता का राज प्रकट कर रहा था। स्वाध्यायशील व्यक्ति में ऐसी दीर्घदृष्टि, संयोजन-नियोजन की कुशलता, चयन करने की क्षमता और कार्य करने की निष्ठा होनी चाहिए। ऐसी स्वाध्यायशीलता सामान्य व्यक्तियों में दुर्लभ है। परन्तु फिर भी यह समझना चाहिए कि हम जो पुस्तक आज पढ़ रहे हैं वह कल शायद दुर्लभ हो जाय, इसलिए इसका पढ़ा हुआ महत्त्वपूर्ण अंश हमें अपनी डायरी में लिखकर उसे अपना बना लेना चाहिए। इससे स्वाध्याय दीर्घकालीन फल देता है और व्यक्ति को बहुआयामी विद्वत्ता प्रदान करता है।

सामान्य रूप से स्वाध्यायी को इतनी जागरूकता तो रखनी ही चाहिए कि अपने पढ़ने के लिए अच्छी से अच्छी श्रेष्ठ पुस्तकों का चयन करे। एक-एक पुस्तक पूरी पढ़े। मनोयोग से पढ़े। पढ़ने के साथ गुने। उस पर मनन करे और उसे समझने का प्रयास करे ताकि पढ़ा हुआ हृदय और मस्तिष्क में स्थायित्व ग्रहण कर ले।

इस प्रकार किया हुआ स्वाध्याय हमारे लिए दीर्घकाल तक फलदायी होता है। वह ज्ञान बढ़ाता है। मान बढ़ाता है और व्यक्तित्व में प्रखरता पैदा करता है।

आप बच्चों के लिए मिठाई, खिलौने खरीदते हैं। परिजनों के लिए वस्त्र बनवाते हैं।

मित्रों, अतिथियों पर खर्च करते हैं। उसी प्रकार आमदनी का एक निश्चित अंश पुस्तकों पर भी खर्च करने की आदत बनाएं। अर्थशास्त्र में तीन प्रकार की आवश्यकताओं का अध्ययन किया जाता है- 1. आवश्यक आवश्यकता, 2. आरामदायक आवश्यकता और 3. विलासितापूर्ण आवश्यकता। रोटी-कपड़ा-मकान को अनिवार्य या आवश्यक आवश्यकता माना गया है। पुस्तकों को भी आवश्यक आवश्यकता समझकर उन पर खर्च किया जाना चाहिए, क्योंकि पुस्तकें आत्मा, मन और बुद्धि की खुराक हैं। पुस्तकों से ऊर्जा मिलती है।

विचार की शक्ति सर्वोपरि

शारीरिक शक्ति का अपना महत्त्व है। एक पहलवान दस-बीस को पछाड़कर भयभीत कर सकता है। जनबल भी एक शक्ति है। फौज की शक्ति जनबल की शक्ति का प्रतीक है। धन बल का महत्त्व सभी जानते हैं लेकिन विचार शक्ति की बात ही कुछ और है।

महावीर के चरणों में बड़े-बड़े सम्राटों के मस्तक झुक गए। उनके पास न तो धन-बल और न ही इतना जनबल कि किसी को जीत सकें या कहीं पर अधिकार जमा सकें। उनके पास केवल विचार बल था। महात्मा गाँधी डेढ़ पसली के व्यक्ति थे। दुबले-पतले, पर अंग्रेजों ने उनके सामने घुटने टेक दिए। यह जो विचार शक्ति है, बड़े-बड़े धनवानों, पहलवानों और नायकों को झुका देती है। यह स्वाध्याय से प्राप्त होती है। चिन्तन-मनन भी स्वाध्याय के ही अंग हैं। अतः सबको गौण और तुच्छ समझकर स्वाध्याय की ओर बढ़िए, विचार शक्ति को बढ़ाइए। जिसके पास विचार शक्ति होती है, वह आसमान को भी झुका सकता है।

प्रवचन-मोती

आचार्यश्री विजयरत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.

1. पाप करने के बाद जो सच्चे दिल से प्रायश्चित्त करता है, वह पाप की सजा से मुक्त हो जाता है, परन्तु पाप करने के बाद जो पाप को अच्छा मानता है, वह अपने पाप और पाप की सजा को अनेक गुणा बढ़ा देता है।
2. पाप के पश्चात्ताप से पाप का भागाकार होता है और पाप की अनुमोदना करने से पाप का गुणाकार होता है।
3. दूसरों के सुकृतों को देखकर दिल से अनुमोदना करनी चाहिये। उस समय हृदय में ईर्ष्या की भावना न रखें। ईर्ष्या करने से हम अपने पुण्य को जला देते हैं।
4. पाप तो लकड़ी के ढ़ेर के समान है, जबकि पुण्य दियासलाई के समान है। पुण्य की एक ही चिनगारी पाप के ढेर को जलाकर खाक कर देती है।

जीवन-व्यवहार

जिसके पास धैर्यरूपी धन नहीं है, उसके जैसा निर्धन इस दुनिया में और कोई नहीं है

आचार्य श्री विजयरत्नसुन्दरसूरिजी

जमीन में तुम आज गुठली बोओ,
आम के दर्शन के लिए तुम्हें धीरज रखनी ही पड़ेगी।
बैंक में तुम आज पैसे जमा करो,
ब्याज पाने के लिए तुम्हें धीरज रखनी ही पड़ेगी।
स्त्री आज गर्भवती बने,
पुत्र दर्शन के लिए उसे धीरज रखनी ही पड़ेगी।
रात को वह दूध में जामन डालती है,
दही दर्शन के लिए उसे धीरज रखनी ही पड़ती है।
साधक आज साधना करता है,
सिद्धि के लिए उसे धीरज रखनी ही पड़ती है।
क्या कहूँ?
संपत्ति को, सत्ता को, सौंदर्य को,
सफलता को, 'धन' मानने के लिए
मन तैयार है,
पर धीरज को 'धन' मानने के लिए
वह तैयार नहीं है।
और इसका ही यह दुष्परिणाम है कि
आज का मनुष्य सतत अशांति में जी रहा है।
हताशा, निराशा और उद्विग्नता में जी रहा है।
हताशा, निराशा और उद्विग्नता मानो उसके
जीवन के अंग बन गए हैं।
पुरुषार्थ करने की उसमें जितनी लगन होनी चाहिए
उसकी अपेक्षा परिणाम प्राप्त कर लेने की लगन
उसमें अधिक दिखाई देती है।

परिणाम के लिए वह जितना अधिक बेसब्र बनता है
परिणाम उससे उतना ही दूर भागता है।
यह बात अच्छे से समझ लेना कि,
मनुष्य जितना अधिक अधीर
उतना ही अधिक अधूरा।
पानी की प्राप्ति के लिए एक व्यक्ति ने
पाँच फीट गहरा गड्ढा खोदा।
पानी नहीं दिखा।
वह गड्ढा अधूरा छोड़कर दूसरी जगह
पाँच फीट का गड्ढा खोदा।
वहाँ भी पानी नहीं मिला।
ऐसा करते-करते पचास जगह पर
पाँच-पाँच फीट के गड्ढे खोदे।
पर पानी कहीं नहीं मिला।
पुरुषार्थ पर पूर्णविराम लगाकर वह व्यक्ति
सिर पर हाथ रखकर बैठ गया।
थोड़ी धीरज रखी होती, एक ही जगह पर
गड्ढा खोदने का पुरुषार्थ जारी रखा होता तो
चालीस फीट, पचास फीट या
सौ फीट पर उसे पानी मिल ही जाता!
याद रखना,
संपत्ति के क्षेत्र की निर्धनता से
ज्यादा-से-ज्यादा क्या होता है?
जीवन में असुविधाएँ आती हैं।
परन्तु,
धीरज के क्षेत्र में निर्धनता तो जीवन में
अवगुणों को आमंत्रण दे बैठती है।
अंतिम संदेश-
"जीवन के मार्ग में जल्दबाजी नहीं किसी काम की,
चलने वाले पहुँचेंगे और दौड़ने वाले थकेंगे।"

-'शिक्षा के दूध में संस्कार की शक्कर' पुस्तक से साभार

English-Section

Jaina Perspective of Nature and Environment

Sh. Dulichand Jain

Jaina religion is most environment friendly religion. The philosophy of non-violence and ecological harmony are integral part of it from time immemorial. It formed a vital part of its ideology, ethics, art, literature, economics, politics and social life. It is represented in all its glory by the 24 Jinas or Tīrthaṅkaras (omniscient path finders) of this era whose example and teachings have been in living legacy through thousands of years. The last (24th) Tīrthaṅkara was Lord Mahavira, who was born in 599 B.C.

Although the ten million Jains estimated to live in India today constitute a small portion of its population, its message of reverence for all forms of life, its protection and preservation of nature and environment in the day-to-day life of householders, monks and nuns exerts a profound influence on Indian life and conduct. In the twentieth century, the most illustrious example of Jain influence was that of Mahatma Gandhi, who studied about Jaina thought and its philosophy of non-violence form Srimad Rajchandra, the great Jaina philosopher, poet and writer. His book "Atma Siddhi" had a great impact on the life and thought of Mahatma Gandhi.

The Jaina Doctrine of Nature

The Jaina doctrine of nature is quite unique. It states that the universe consists of two categories: Jīva and Ajīva. Among these, Jiva is the soul; it is the one that has conciousness. It does not have a form but is vested with a body. In the physical, material world, this soul is in bondage because of the influx of Karmic particles known as Āsrava. The Ajīva has no consciousness and consists of five substances:

Dharma	-	the medium of motion.
Adharma	-	the medium of rest
Ākāśa	-	space
kāla	-	time
Pudgala	-	matter

It is this last substance- the Pudgala- which has form. It consists of paramāṇu or individual atoms and skandha or conglomerates of atoms, which have sound, heat, light etc.

The Jivas are divided into six classes of beings and are further divided into two categories, viz. mobile (trasa-kāya) and immobile (sthāvar). The trasa-kayika jivas can be two-sensed, three-sensed, four-sensed and five-sensed with or without mind, which is the instrument of thinking. The other five classes of Jivas (living beings) are immobile beings. These are earth-bodied, water-bodied, air-bodied, fire-bodied and vegetation. These are said to have only the sense of touch and are the one-sensed beings.

It is noteworthy in the context of our discussion today to see that Jainas believed that the vegetation kingdom, trees and plants have life. As we all know, this has been proved scientifically by the great scientist Sir Jagadish Chandra Basu. The Jaina Ācārāṅga Sūtra gives elaborate details of these one-sensed beings and lays stress on their protection.

The Jaina Āgamas (scriptures) lay great stress on compassion to all these forms of life, whether mobile or immobile. Lord Mahāvīra protested against the evil practice of sacrifice of animals in the name of religion which was prevalent at that time. The Jaina saints have reiterated time and again that one should be merciful to all living beings.

The Jains are known to be strict vegetarians who will not consume non-vegetarian products like meat, fish or eggs for the simple reason that these are obtained by killing other beings. The Jainas endeavor to live a life of moderation and restraint. Dr. L.M. Singhvi, who was a eminent jurist, a distinguished diplomat and a parliamentarian wrote in this context, "In their use of earth's resources, Jains take their cue from the bee that sucks honey in the blossoms of a tree without hurting the blossom and strengthens itself. That is the real path of environmental protection, peace and harmony in the universe."[1]

Parasparopagraho Jīvānām

Lord Mahavira proclaimed, "One who neglects or disregards the existence of earth, air, fire, water and vegetation disregards his own existence which is entwined with them."[2] This is indeed a profound truth which holds good at all times, that of the past and the future. It is

indicated by the great Jaina doctrine of "Parasparopagraho Jīvānām"[3] which means that all aspects of nature belong together and bound in physical and biological relationship. This doctrine is indeed a powerful one for the protection of nature and environment.

Mahavira also laid great stress on non-violence. He said "All living beings love their life, they wish to relish pleasure, loath misery, shun annihilation, enjoy life and want to live long, life is dear to all" Further he stated, "Not to kill any living being is the quintessence of all wisdom. Certainly one has to understand that non-violence and equality of all living beings are essentials of Dharma."[4]

Ācārāṇga Sūtra says that there is intrisic equality among all living beings, i.e. plant, animal and human life. Lord Mahāvīra says" Oh, man! Think that the being whom you want to kill is non else but you, he too experiences happiness and misery just like you. Think about this- the being whom you wish to govern and enslave is none else but you. Also think about this - the being whom you wish to hurt and harm is none else but you, the being whom you want to punish and drive is also none else but you. Hence never desire to harm any living being."[5]

The Jaina Code of Conduct

The Jaina code of conduct fully reflects its ecological philosophy. There are five Mahāvratas (great vows for monks and nuns) and five Aṇuvratas (primary vows) for householders. These are as follows:

1. Ahiṃsā or non-violence in thought, word and deed.
2. Satya or to speak the truth.
3. Asteya or to behave honestly and never to take anything by theft or force.
4. Brahmacarya or the practice of chastity or restraint in thought, word and deed.
5. Aprigraha or to practice non-accumulation.

While Mahāvratas are greater vows which can be practiced by the monks, the Aṇuvratas are lesser vows for the householder. When we look at these with sensitivity, we can see that there is a code of conduct which emphasizes the notion of individual responsibility. The code is profoundly ecological in its secular thrust and its practical consequences.

In today's world, we are overwhelmed with the threats caused by environmental degradation, ecological imbalances and global warming. Let us now discuss the present situation and how it can be changed and made environmental friendly.

A Planet in Trouble

What we are witnessing today is a downfall brought about by the blind belief that nature exists for the benefit of mankind. According to this view, man is considered the supreme animal while all agencies of nature are his subordinates. So man can exploit and use them according to his whims and fancies. Francis Bacon wrote 400 years ago that the world is made up for man, not man for the world. The result of such an attitude is that the global economy is expanding amidst an all-round deterioration of the environment. This deterioration has reached such a high level that it threatens the very existence of the planet earth. The very aim of man to control nature speaks of his greed and exploitation. This is resulting in serious damages to nature and environment. Arnold Toynbee wrote in 1972 in the London Observer, "We are suffering from having sold out our souls to the pursuit of maximizing material wealth, a pursuit which is practically unattainable and spiritually wrong." In the recent world we have seen disastrous consequences of degradation of nature and its agencies. We have experienced the chocking air pollution in Mexico, the deadly aftermath of the Chernobyl accident in Ukraine, the destruction of the rain forests in Brazil, the death of Swedish lake from acid rain and heavy pollution in the mighty rivers like the Ganges. Wherever we look, we see our planet in trouble.

Wild Life

Unrestricted hunting of animals is threatening the very existence of many species. The share of the birds, mammals, and fish vulnerable or in immediate danger of extinction is now estimated at 11 percent of the world's 8,615 bird species, 25 percent of the world's 4,355 mammal species and 34 percent of all fish species. Smt. Menaka Gandhi, the then Minister for Social Justice and Empowerment, Government of India expressed concern in her millennium message in 2000 in the following words, "This past century has been the cruellest in history. Science was harnessed to business. Progress was measured by profits. we invented

factory farming, battery cages, vivisection, mechanised slaughter houses, marine parks, whaling and trawling. Billions of animals were slaughtered, mutilated, blinded, beaten and slaved." According to Green peace magazine, the population of African elephants came down drastically from 15 lacs to just 6 lacs within a period of 10 years from 1981 to 1990.[6]

Rain Forests

Rain forests are victims of timber and meat industries. Millions of acres are cleared and stripped annually to graze cattle for meat production and to grow billions of tons of soyabean to feed cattle. If the United States, Canada, Sweden and Russia continue chopping down their forests, the results could be just as devastating for the global eco-system as the destruction of rain forests in Africa or tropical forests in New Guinea.

Industrial Accidents

Major accidents have been caused by chemical industries. As is well known, a valve broke out in 1985 at the Union Carbide Chemical Plant at Bhopal in Madhya Pradesh, allowing 30 tons of lethal methyl-isocyanate gas to escape. Over 2000 people living nearby were killed and another 17000 received permanent injuries.

Nuclear Waste

Toxic chemicals are the regular sources of danger but the most toxic is nuclear waste, and its safe disposal is a problem that has yet to be solved. Nuclear plants in the United States are holding over 15000 metric tons of high level waste, which will remain harmful to human beings for thousands of years. The worst nuclear disaster happened in 1986 at chernobyl nuclear power station in Ukraine. An estimated 20000 people died and 500000 persons received high radiation doses as a result of this explosion. The blast was equivalent to 500 atomic bombs dropped on Hiroshima in 1945.

Meat and the Environment

Killing animals for food, fur, leather, ivory, cosmetics and other industrial uses is one of the most environmentally destructive practices taking place on the earth today. The meat industry is linked to

deforestation, decertification, water pollution, water shortages, air pollution and soil erosion. Neal D. Barnard, President of Physicians Committee for Responsible Medicine (U.Ṡ.A.) says-"If you are a meat eater, you are contributing to the destruction of the environment, whether you know it or not." Jeremy Rifkin rightly warned in 1992, "Today, millions of Americans, Europeans and Japanese are consuming countless hamburgers, steaks and roasts, oblivious to the impact their dietary habits are having on the biosphere and the very survivability of life on earth. About 40 percent of the land in the western United States is used for grazing cattle for getting beef. It takes sixteen pounds of grain and soyabeans to produce one pound of beef. About 20 vegetarians can be fed on the land that it takes to feed one meat eater.

Reducing or eliminating meat consumption would have substantial positive effects on environment. Fewer trees would be cut, less soil would be eroded and desertification would be substantially reduced. Further, eliminating meat eating would release a vast quantity of food grain for human consumption, thus helping solve the world food problem. On an ethical level, stopping the brutal killing of animals will help to induce a greater respect for all kinds of life.

Consumerism

The spread of consumerism is rooted in the western thought that more production is the solution of all problems and that this will bring economic and social advancement to all people. To enrich one's own life, one should increase his possessions and accumulation of goods. Today, people in America own and consume twice as much as they did in 1950. This philosophy of consumerism is based purely on amoral principles, where self-interest is predominant and social welfare occupies secondary place.

Lastly, I quote the following observation of Mr. Darrell Addison Posey, the editor of Culture and Spiritual Values of Bio-diversity, which is quite pertinent in this regard, "Jainism is fundamentally a religion of ecology and it has turned ecology into a religion. It has enabled Jains to create an environment-friendly value system and code of conduct. Because of the insistence of rationality in the Jain tradition, Jains are always ready and willing to look positively and with enthusiasm upon

environmental cause. In India and abroad, they are in the forefront of bringing greater awareness and putting into practice their cardinal principals of ecology."[7]

References:

1. Towards Global Togetherness by Dr. L. M. Singhvi, Page 195
2. Ācārāṇga Sūtra, 1.2.2.63
3. Taravārtha Sūtra, 5.21
4. Sūtrakṛtānga- Sūtra, 1.11.10
5. Ācārāṇga Sūtra, 1.5.5.101
6. Karuna International Annual Souvenir 2000, Chennai, Page 102
7. UN Environmental Programme, Cultural and Spiritual Values of Bio-Diversity, Page 623

-70, TTK Road, Alwarpet, Chennai-600018 (T.N.)

चातुर्मास आत्मकल्याण का काल

श्री राजेन्द्रसिंह चौधरी

धार्मिक जगत् की धुरी है 'चातुर्मास।' चातुर्मास एक प्रकार का सन्धिकाल है, संक्रमण काल है, जिसका प्रमुख लक्ष्य है- आत्मकल्याण, आत्मचिन्तन और कर्मों की निर्जरा। आत्म-शोधन करना व अध्यात्म चेतना लाना चातुर्मास का लक्ष्य है। इसमें प्राणी इन्द्रियों से ऊपर उठकर सूक्ष्म चेतना के स्तर तक पहुँचने का प्रयास करता है। अहिंसा के सिद्धान्तों पर चलते हुए वर्षा ऋतु में उत्पन्न जीवों को बचाने हेतु साधु-साध्वीवृन्द का इस समय एक स्थान पर रहकर अपने जीवन का शोधन करना, जीवन को मांजना, जीवन का अन्तःकरण से पर्यवलोकन करना, वीतराग प्रभु का चिन्तन, ध्यान करते हुए आध्यात्मिक विकास को निरन्तर प्रगति के पथ पर लाना, जन-जन को प्रभु के बताए जीवन जीने के मार्ग का प्रचार कर जनकल्याण करना, ज्ञान, दर्शन और चारित्र की आराधना करते हुए सभी के साथ मैत्री, प्रेम, करुणा, सहृदयता की गंगा बहाना ही मूल उद्देश्य होता है।

चातुर्मास काल में श्रावक-श्राविकाएँ सद्गुरु की संगति में मन की दिशा बदलते हैं। जीवन का रूपांतरण करते हैं। धार्मिक गतिविधियों में तल्लीन रहते हुए धर्म आराधना के विविध माध्यमों से जैसे जप, तप, सूत्रवाचन, आलोचना, आत्म-निरीक्षण, मौन-व्रत, सामायिक, प्रतिक्रमण आदि करते हुए अपने कर्मों की निर्जरा की कोशिश करते हैं। इसी काल में धार्मिक, आध्यात्मिक, सामाजिक, शैक्षणिक, नैतिक गतिविधियों पर विशेष ध्यान देकर आध्यात्मिक भूख में वृद्धि का तथा समाज में सुधार लाने का प्रयास किया जाता है।

-42, प्रेमनगर, खेमे का कुआ, पालरोड़, जोधपुर (राज.)

साधना

साधना का त्रिभुज : सामायिक

डॉ. दिलीप धींग

सामायिक जैन धर्म की आधारभूत और मौलिक साधना है। सामायिक एक ऐसी उत्कृष्ट साधना है, जो दुःखमुक्ति का अचूक उपाय है। जीवन में अधिकाधिक समभाव और समता का विकास करना सामायिक का लक्ष्य है। यह लक्ष्य वैयक्तिक और आध्यात्मिक जीवन के साथ ही पारिवारिक और सामाजिक जीवन में भी सुख-शान्ति की सृष्टि करता है। सच्ची सामायिक साधना से परिवार और समाज की अनेक समस्याओं को समूल नष्ट किया जा सकता है। द्रव्य सामायिक के साथ जब भाव सामायिक भी जुड़ जाती है तो साधक के विचार, वचन और व्यवहार में प्रेम और मैत्री के सुरभित सुमन खिल उठते हैं। फलतः उसके जीवन का मार्ग रचनात्मक और सकारात्मक हो जाता है।

आध्यात्मिक साधना

किसी भी तरह के कर्मकाण्ड या आडम्बर से परे सामायिक एक विशुद्ध आध्यात्मिक साधना है। इसलिए सहज ही यह असाम्प्रदायिक और सार्वभौमिक साधना है। धूप, दीप, बत्ती, जल, फल, फूल, धान्य, वस्त्र, डोरा, चित्र, मूर्ति, मुद्रा, घण्टा-ध्वनि आदि की इस साधना में आवश्यकता नहीं है। दैनन्दिन जीवन में मनुष्य का व्यवहार कई बार समता की सीमाओं का अतिक्रमण कर जाता है। वह राग, द्वेष, मोह और कषायों से आवेष्टित होकर स्वयं के साथ तथा दूसरे प्राणियों एवं मनुष्यों के साथ सम, सरस और निष्पक्ष व्यवहार नहीं कर पाता है। अपने व्यवहार की इस विषमता को घटाने तथा समाप्त करने के लक्ष्य से सामायिक की आराधना की जाती है। इस प्रकार सामायिक एक आध्यात्मिक साधना होने के साथ ही जीवन व्यवहार को सन्तुलित एवं प्रभावशाली बनाने का निरापद उपाय भी है।

सद्गुणों का अभ्यास

सामायिक से आत्मा की सुप्त शक्तियों का जागरण और व्यक्तित्व का रूपान्तरण होता है। सामायिक साधना का शुभारम्भ भी है और साधना की निष्पत्ति भी। जैन श्रमणाचार सामायिक की बुनियाद पर ही प्रतिष्ठित होता है। वस्तुतः जैन श्रमण के लिए जीवनपर्यन्त सामायिक की साधना होती है। जैन गृहस्थ के लिए नियमित सामायिक साधना करने का विधान है। श्रावक के बारह व्रतों में पाँच अणुव्रत, तीन गुणव्रत और चार शिक्षाव्रत हैं। सामायिक प्रथम शिक्षाव्रत है। शिक्षाव्रत का तात्पर्य ऐसे व्रत से है, जिसके माध्यम से

साधक अभ्यास करे और जिसका अभ्यास वह करे, उसके शिखर पर पहुँचने तक निरन्तर चलता रहे। इस शिक्षाव्रत में समभाव, समता, क्षमा और सहिष्णुता का अभ्यास किया जाता है। इन्हीं सद्गुणों की आज समाज और संसार को सर्वाधिक आवश्यकता है। यह आवश्यकता ही सामायिक साधना की महत्ता बहुगुणित कर देती है। यही वज़ह है कि छह आवश्यकों में सामायिक को प्रथम क्रम पर रखा गया है। शेष पाँच आवश्यकों की आराधना भी सामायिक के साथ सम्पन्न की जा सकती है।

भावों का संस्पर्श

अनेक व्यक्ति सामायिक करते हुए दिखाई पड़ते हैं, लेकिन उनके जीवन में सामायिक का यथेष्ट उजाला तथा आत्म-जागरण दिखाई नहीं पड़ता है। छल, अहंकार, कलह तथा तरह-तरह की गैर-वाजिब लालसाएँ उन्हें तथा दूसरों को नुकसान पहुँचाती हैं। सामायिक करते हुए भी वे सामायिक के लाभों से वंचित दिखाई देते हैं। इसका कारण है भावपूर्वक और बोधपूर्वक सामायिक नहीं करना। सही विधि और प्रविधि के साथ जब अर्थ और भाव जुड़ जाते हैं तो सामायिक के विविध सुप्रभाव प्रकट होने लगते हैं। सच्ची सामायिक से व्यक्ति स्वयं भी लाभान्वित होता है और किसी न किसी रूप में वह दूसरों के लिए भी लाभकारी बनता है। शब्द से आगे अर्थ और भाव की यात्रा के लिए सामायिक के तीन प्रकारों को समझना आवश्यक है। सामायिक के तीन प्रकार हैं- दर्शन सामायिक (श्रद्धा की सामायिक), श्रुत-सामायिक तथा चारित्र-सामायिक।

श्रद्धा की सामायिक

श्रद्धा की सामायिक साधना की नींव है, लेकिन उसका सम्यक् और अटूट होना अत्यन्त आवश्यक है। श्रुत-सामायिक तथा चारित्र-सामायिक से पूर्व श्रद्धा की सामायिक को समझपूर्वक करना अत्यन्त आवश्यक है। श्रद्धा किसके प्रति? श्रद्धा स्वयं के प्रति, आत्मा के अनन्त ज्ञान, अमित सुख और अटूट शक्तियों के प्रति हो। देव, गुरु और धर्म के अगणित उपकारों के कारण हमने आत्मा और अनात्मा का स्वरूप समझा और साधना का सन्मार्ग पाया, इसलिए श्रद्धा और विनय देव, गुरु और धर्म के प्रति हो। गहराई से विचार करें तो हमारा ज्ञान बहुत थोड़ा है और बल भी। श्रद्धा ही ऐसा परम बल और संबल है, जो हमें अल्पता में भी पूर्णता का साधक बनाता है।

श्रुत सामायिक

सम्यक् ज्ञान की निरन्तर आराधना से श्रुत सामायिक की आराधना होती है। स्वाध्याय इस आराधना में परम रसायन है। जब दर्शन सम्यक् या विशुद्ध होता है तो ज्ञानाराधना और

स्वाध्याय की साधना भी सम्यक् बन जाती है तथा वह जीवन के अनुत्तर उद्देश्यों से जुड़ जाती है। साधक ज्ञानाराधना में इतना तल्लीन हो जाता है कि बाहरी आकर्षण और प्रलोभन उसे प्रभावित नहीं कर पाते हैं। श्रुतज्ञान और स्वाध्याय के प्रति ऐसा अटूट समर्पण 'सामायिक' की संज्ञा से अभिहित किया जाता है। श्रुत सामायिक के तीन सुफल हैं- आत्मज्ञान का जागरण, श्रुतज्ञान का संरक्षण और श्रुतज्ञान का संवर्द्धन। श्रुत-सामायिक से सदाचार के प्रचार-प्रसार और विस्तार हेतु विचार, गति और ऊर्जा मिलती है। श्रुत सामायिक श्रद्धा और चारित्र, दोनों की रक्षा करती है।

चारित्र सामायिक

श्रद्धा और श्रुत में लीन साधक को अपने जीवन में चारित्र का उजाला भी प्रकट करना चाहिये। हालांकि श्रद्धा और श्रुत का अपना स्वतंत्र महत्त्व भी है, लेकिन चारित्र के साथ जुड़कर यह महत्त्व बहुगुणित हो जाता है। श्रद्धा और श्रुत के बाद शुष्क क्रिया नहीं, अपितु सच्चा चारित्र प्रकट होता है। चारित्र से जुड़ जाने पर ज्ञान शुष्क नहीं रहता है और श्रद्धा भी। चारित्र सामायिक के द्वारा व्यक्ति प्रयोगधर्मी, अधिक सजग, विवेकशील और सद्गुणी बनने का अभ्यास करता है। वह अपने मन, वचन और व्यवहार को सामायिक की कसौटी पर परखता है तथा उन्हें अधिकाधिक निखारता है। फलतः चारित्र से सम्पन्न का अल्पश्रुत भी बहुफलदायी बन जाता है।

सामायिक-त्रिभुज

सामायिक जीवन साधना का एक विलक्षण त्रिभुज है। इस त्रिभुज में तीन त्रिपदियाँ हैं। तीन त्रिपदियों का त्रिभुज तीनों प्रकार की सामायिक को गहराई तक ले जाकर सुपरिणामदायी बना देता है। इस त्रिभुज की तीन त्रिपदियाँ इस प्रकार हैं-

1. देव-गुरु-धर्म (तीन तत्त्व)
2. ज्ञान-दर्शन-चारित्र (तीन रत्न)
3. मन-वचन-काया (तीन योग)

सामायिक में तीनों योगों से तीन तत्त्वों के प्रति अखण्ड आस्था के साथ रत्नत्रय की आराधना की जाती है, करनी चाहिये। इस 'सामायिक-त्रिभुज' में तीनों प्रकार की सामायिक की आराधना हो जाती है। किसी भी प्रकार की सामायिक यदि उक्त त्रिपदी के साथ की जाए तो थोड़ी-बहुत तीनों प्रकार की सामायिक की आराधनाएँ सम्पन्न होती हैं। ऐसी समग्र सामायिक जीवन को भीतर और बाहर से हरा-भरा, खिला-खिला, महकता उपवन बना देती है। ऐसा उपवन अपने और दूसरों के जीवन को अपार खुशियों और खूंशबू से भर देता है।

तीनों प्रकार के सामायिक के वृत्त में ऊपर प्रदत्त त्रिपदियों के त्रिभुज को चित्र या रेखाचित्र से भी समझा और समझाया जा सकता है। रेखाचित्र इस प्रकार है-

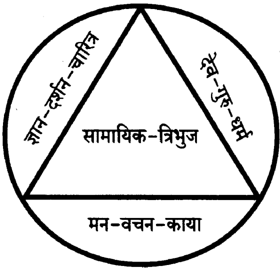

इस वृत्त को किसी भी दिशा में घुमाये जाने पर भी सामायिक की साधना और सामायिक के सुफलों में कोई अन्तर नहीं आता है। साधना की पराकाष्ठा पर तीनों त्रिपदियों के साथ तीनों प्रकार की सामायिक एकमेक/अभिन्न हो जाती है। भेद में अभेद की यह अनुभूति सामायिक का परम लक्ष्य है।

-निदेशक, अंतरराष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन व शोध केन्द्र,
18, रामानुजा अय्यर स्ट्रीट, साहुकारपेट, चेन्नई (तमिलनाडु)

उम्र थोड़ी सी हमको

(तर्जः- एक दिन आप यूँ हमको....।)

उम्र थोड़ी सी हमको मिली थी मगर,
वो भी घटने लगी देखते-देखते।।टेर।।

ये करूँ, वो करूँ, कुछ न मैं कर सका,
श्वास रुकने लगी देखते-देखते।।टेर।।

कितना काया का शृंगार मैंने किया,
कितनी माया से भण्डार मैंने भरा,
काया बेनूर थी, माया भी दूर थी,
माटी गलने लगी देखते-देखते।।1।।

काया अकड़ी हुई भी बदल जायेगी,
जो बची थी अकड़ वह निकल जायेगी,
लो तकाजा हुआ और जनाजा उठा,
डोली चलने लगी देखते-देखते।।2।।

इस जहाँ ने मुझे ऐसा ठुकरा दिया,
आग ने मुझको सीने से लिपटा लिया,
राख को छोड़ परिजन चले सब गये,
वह भी उड़ने लगी देखते-देखते।।3।।

-संकलनकर्त्ता- श्री नवरतन डागा,
पूर्व महामंत्री, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर (राज.)

काव्य

वीर प्रभु की अन्तिम वाणी (13)

मधुर व्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा.

श्रद्धेय मुनिश्री द्वारा रचित यह पद्यानुवाद सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के कार्याध्यक्ष एवं उत्कृष्ट कवि श्री सम्पतराजजी चौधरी-दिल्ली द्वारा संशोधित-सम्पादित है।-सम्पादक

(तर्जः- गुण सौरभ से रहे महकता, ऐसा अपना घर हो)
वीर प्रभु की अन्तिम वाणी, सुनलो और सुनालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।
उत्तराध्ययन में गुंजित होती, प्रभु शिक्षा अपनालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।

तीव्र रागद्वेष मोहादि, पाश बड़े है भयंकर,
त्याग तपस्या से काटा है, ज्ञान-क्रिया में रमकर,
लघुभूत हो विचरण करके, भव का पाश छुड़ालो।।338।।
विषफल देती एक लता जो, अन्तर्मन में रहती,
खाने में उसका फल घातक, कैसे पाई मुक्ति,
तृष्णा ही है विष की बेलि, इससे खुद को बचालो।।339।।
दुष्कर्मों के दुष्फल लगते, लोभवृत्ति अधमाई,
मैंने जड़ से काटी तृष्णा, विचरण है सुखदाई,
भव की लता उरवाडो जड़ से, सिद्धि अमृत पा लो।।340।।
धधक रही हैं घोर अग्नियाँ, तन को सदा जलातीं,
कैसे तुमने उन्हें बुझाया, क्या इनके प्रतिघाती,
दूर करो अब ये भी संशय, अपना सत्त्व बचालो।।341।।
महामेघ के उत्तम जल से, अविरल सिंचन करता,
नहीं जलाता है ये मुझको, अगन नीर से बुझता,
जलने से यदि बचना हो तो, पावक सभी बुझालो।।342।।
क्रोध, मान और लोभादि को, जलती अग्नि बताया,
श्रुत, शील और तपचर्या को, उत्तम जल बतलाया,
श्रुत की शीतल जलधारा से मन को शांत बनाओ।।343।।

चढ़े हुए तुम दुष्ट अश्व पर, इधर-उधर वह जाता,
फिर भी कैसे गौतम तुझको, कुपथ नहीं ले जाता,
चंचल और भयानक है वो, सावधान बन चालो।।344।।
जाने को उन्मार्ग कभी भी, जब होता वह उद्यत,
शास्त्रज्ञान की रस्सी लेकर, करता उसको संयत,
कुपथ नहीं ले जाता फिर वो, सावधान बन चालो।।345।।
मन ही रौद्र दुष्ट अश्व है, इधर-उधर जो दौड़े,
आधीन किया है उसको मैंने, सुपथ कभी ना छोड़े,
श्रुत शिक्षा से उत्तम बनता, मन को सदा सम्भालो।।346।।
कुपथ बहुत है इस जगती में, जीव भ्रमित हो जाते,
सत्पथ से वे च्युत हो जाते, नाना दुःख को पाते,
फिर भी तुम नहीं भटके गौतम, इसका राज निकालो।।347।।
जिन प्ररूपित पथ जो चलता, अथवा उत्पथ जाता,
उन सबको ही जान लिया है, जिससे नहीं भटकाता,
सुपथ-कुपथ का ज्ञान कराके, कुपथ सदा ही टालो।।348।।
एकान्तवाद का व्रती पाखण्डी, उन्मार्गी कहलाता,
जिनकथित ही मार्ग है उत्तम, मुक्ति में ले जाता,
अनेकान्त है 'जिन' की शिक्षा उसको ही अपनालो।।348।।
जरा मृत्यु के वेग में बहते, उनका द्वीप कहाँ है?,
धर्म-द्वीप आधार है उनका, उत्तम शरण वहाँ है,
धर्म प्रतिष्ठा का कारण है, इसका बोध करालो।।350।।
महाप्रवाह के इस सिन्धु में, डोल रही है नौका,
चढ़ के कैसे पार करोगे, नहीं भरोसा पल का,
अतिशय ज्ञानी जो बतलाते, उसको मन में धरालो।।351।।
भवसागर के पार करन को, जिस नौका को थामा,
छिद्र नहीं है उसमें कोई, पार करे अविरामा,
बीच मार्ग में डूबे नौका, छिद्र को बंद करालो।।352।।
तन को नौका कहा गया है, जीव है उसमें नाविक,
कहा है इस संसार को सागर, पार करे मुनि तात्त्विक,
तिरने को नौका है साधन, छिद्र रहित ले चालो।।353।।

भटक रहे हैं जीव जगत में, अंधकार में गहरे,
गहन तिमिर में अन्धे हो गए, कौन प्रकाश बिखेरे,
घोर अन्धेरा सूरज हरता, उससे संग जुड़ालो।।354।।
लोक प्रकाशित करने वाला उदित हुआ है भास्कर,
जीवों को सम्पूर्ण लोक में, पथ दिखलाता सुखकर,
निर्मल उगा सूरज जग में, पा जाओ उजियाला।।355।।
रागद्वेष सब छोड़ चुके जो, वे अर्हत् हैं भास्कर,
नष्ट करे अज्ञान तिमिर को, वर्धमान जिनेश्वर,
सर्वज्ञ-सर्वदर्शी तीर्थंकर, ज्योति उनसे पा लो।।356।।
तन-मन के दुःखों से पीड़ित, जगत जीव हैं यहाँ पर,
क्षेम शिवंकर निराबाध हो, वो स्थान कहाँ पर,
जन्म-मरण से मुक्ति मिलती, उसका पता लगालो।।357।।
इसी लोक में अग्रभाग में, शाश्वत एक जगह है,
जहाँ मृत्यु और जरा कष्ट की, किंचित् नहीं वंजह है,
बड़ा कठिन है वहाँ पहुँचना, उसका ज्ञान करालो।।358।।
नाश करे जो जन्म-मरण का, वे जाते हैं वहाँ पर,
शोक मुक्त वे हो जाते हैं, निजानन्द में रमकर,
रत्नत्रयी का पालन करके, खुद को वहाँ बसालो।।359।।
श्रेष्ठ तुम्हारी प्रज्ञा गौतम, हर उत्तर ये उत्तम,
छिन्न हुए सब संशय मेरे, धन्य-धन्य हो गौतम,
युग-युग तक सद्‌बोध मिलेगा, सुनकर सुपथ पा लो।।360।।
केशी श्रमण ने वंदन करके, गौतम का यश गाया,
पंच महाव्रत वीर का शासन, केशी ने अपनाया,
सत्य धर्म के बनो उपासक, विनय से सत्य जगालो।।361।।
हुआ धर्म का अभ्युदय वहाँ, फैली महिमा घर-घर,
केशी-गौतम दोनों भगवन्त, सदा प्रसन्न हों हम पर,
श्रुत संयम व्रत नियम लेकर, गुरुवर के गुण पा लो।।362।।

(चौबीसवाँ अध्ययन- प्रवचन माता)

पाँच समिति तीन है गुप्ति, अष्ट है प्रवचन माता,

सम्यक् पालन करके साधक, परम लक्ष्य को पाता,
माता के सम रक्षा करती, इनका ध्यान रखालो।।363।।
ईर्या, भाषा और एषणा, आदानम् उच्चारम्,
मन, वचन, काया की गुप्ति से, है साधु आचारम्,
अन्तर्हित है प्रवचन इनमें, पथ का बोध करालो।।364।।
ईर्या की परिशुद्धि करले, कारण चार से साधक,
काल मार्ग और आलम्बन, यतना से हो पालक,
बोध अहिंसा का हो सबमें, ईर्या शुद्धि पालो।।365।।
दर्शन, ज्ञान, चारित्र कहा है, ईर्या का आलम्बन,
उचित कहा है दिन में विचरण, मार्ग है उत्पथ वर्जन,
निरालम्ब से संयम हानि, निष्ठापूर्वक पालो।।366।।
द्रव्य, क्षेत्र और काल भाव से, प्रतिपल यतना करना,
चलो देखके चार हाथ तक, कोई प्राण न हरना,
बिना ध्येय के गमन नहीं हो, अयतना को टालो।।367।।
इन्द्रियादि विषयों का वर्जन, गमन क्रिया में रखना,
पाँच तरह का स्वाध्याय भी, चलते वक्त न करना,
गमन सदा उपयोग सहित हो, एकतान हो चालो।।368।।
त्यागे साधक वाक् चपलता, हास्य और भय विकथा,
क्रोध, मान, माया भी त्यागे, और लोभ विकलता,
परिमित वाणी दोष रहित हो, हित-मित वचन सजालो।।369।।
ग्रहण, गवेषण, परिभोगैषण, इनमें रहे सजगता,
शय्या, उपधि और आहार के, शोधन में हो कुशलता,
सम्यक् करे प्रवृत्ति इनमें, दोष सैंतालीस टालो।।370।।
क्यूं कैसे किसलिए बनाया, क्या आहार प्रयोजन,
लेने के पहले मुनि करले, उपयोग सहित अन्वेषण,
उपधि और शय्या आदि में, यही दृष्टि अपनालो।।371।।
भण्डोपकरण लेने-रखने में, साधक करले शोधन,
रजोहरण से करे प्रमार्जन, चक्षु से प्रतिलेखन,
विधिपूर्वक इनका पालन कर, अशुभ कर्म को टालो।।372।।

परिष्ठापन के योग्य वस्तु को, यतना से ही परठे,
जहाँ न कोई आवे देखे, जीव की हिंसा वरजे,
सभ्यजनों के सम्मत हो उस, योग्य भूमि पर डालो।।373।।
मन, वाणी और काया का, गोपन गुप्ति कहलाता,
अशुभ कर्म का निग्रह होता, जिन प्रवचन फरमाता,
संयम में निर्मलता आती, अयोगी बन चालो।।374।।
मनोगुप्ति के चार भेद हैं, इनके रूप को जानो,
विद्यमान सत्ता का चिन्तन, उसको सत्य मानो,
असत् चिन्तन मृषायोग है, उसका चिन्तन टालो।।375।।
सत्-असत् दोनों का चिन्तन, मिश्रयोग कहलाता,
सत्-असत् दोनों नहीं जिसमें, व्यवहार योग कहलाता,
नीर-क्षीर विवेकी बनकर, असत् दृष्टि छुडालो।।376।।
समारम्भ, संरम्भ और, आरम्भ दोष निवारो,
सोच नहीं हो पर पीडा की, अशुभ ध्यान को टारो,
प्राण हरण के भाव न लाओ, शुभ संकल्प जगालो।।377।।
इसी तरह से वचन गुप्ति के, चार भेद बतलाये,
सत्य, असत्य, मिश्र, व्यवहार, वचन रूप गिनाये,
मनोगुप्ति से अर्थ समझ के, असत् वचन को टालो।।378।।
काया के व्यापार में साधक, रखले पूरी यतना,
समारम्भ, संरम्भ तथा, आरम्भ से पूरी बचना,
हिंसाजनक क्रियाएँ हैं ये, अवधजीवी बन चालो।।379।।
पर को चोट नहीं पहुँचाये, ना उसमें हो उद्यत,
प्राण हरे नहीं कभी किसी के, हिंसा में नहीं शिरकत,
मन, वचन, काया से आश्रव के, द्वार बन्द कर डालो।।380।।
प्रवृत्ति रूप समिति जानो, निवृत्ति रूप है गुप्ति,
चारित्र साधना की शुद्धि है, मुक्ति की है युक्ति,
इनके सम्यक् आराधन से, क्षायिक दीप जलालो।।381।।

(क्रमशः)

संकलनकर्ता- नवरतन डागा, पूर्व महामंत्री, अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ,
'लक्ष्य' 76, नेहरुपार्क, बखतसागर स्कीम, जोधपुर-342003 (राज)

आचार्यपद रजत वर्ष

आचार्य श्री हीरा पर भावाभिव्यक्तियाँ (4)

साधना धरा के साधक वीर

महासती श्री भाग्यप्रभा जी म.सा.

हे साधना भूमि के साधक वीर!
मोह राजा पर कर दी चढ़ाई।
संयोग सेना को धरा दिखलाई।
समता अस्त्र से क्रोध सेनापति की पराजय कराई।
विनय शस्त्र से मान की सेना उलटे पग भगाई।
माया-लोभ की छाती धुजाई।
सैकड़ों, हजारों विकल्पों-विकारों,
विद्वेषों, विकृति की चतुरंगिणी सेना पर वीरता प्रकटाई।
शौर्य के नगाडे संग रणभेरी शास्त्र धुन से पुनःपुनः बजवाई,
सिद्ध पूर्वजों की शैली खूब अपनाई,
मोह की चढ़ती तरुणाई निज एड़ी नीचे दबाई,
हे मोहिनी-लाल हीरा!
आपकी जन्मदात्री की सबने यशगाथा गाई,
यह युद्धकला गुरु हस्ती ने सिखलाई,
गत 50 वर्षों से निरन्तर मोह ने हार ही खाई।
धर्मभूमि की आपने आन बचाई।
शूरवीरों की गौरवगाथा में आपकी कथा भी समाई।
मोह ने जब-जब षड्यन्त्र की वेला रचाई,
तब-तब आपने **मुणिणो सया जागरंति** से की है रखवाई।
पणया वीरा महावीहिं की उक्ति सार्थ
पंचम आरे वालों को सिखलाई।
मोह राजा को किया कैद, ना दी रिहाई,

ऐसी शूरवीरता ही धर्मयोद्धाओं को सुहाई।
जुग-जुग जीओ शासनभूमि से आवाज आई।
जल्दी होंगे विअट्टछउमाणं,
पहीणजरमरणा ऐसी सिद्धशिला के ऊपर से आवाज आई!!

चातुर्मास मिल गया हमको

श्री मगनचन्द जैन

चातुर्मास मिल गया हमको पूर्ण हुई है आशा।
गुरुदेव की असीम कृपा से आराधन होगा खासा।।
मिल बैठकर कार्य-योजना आज बनायें हम सब।
कर्त्तव्य समझकर कार्य करें, सुन्दर होगा कारज तब।
प्रेम-प्रीति का भाव जगायें, पूरी होगी अभिलाषा।।
चातुर्मास मिल गया.....।।1।।

दानी, तपसी, सेवाभावी सब जाग्रत हो जाओ।
उत्साह उमंग की लहर उठे धर्म की ज्योति जगाओ।
सकारात्मक हो सोच सभी की, पड़े न कोई फासा।।
चातुर्मास मिल गया.....।।2।।

बाल, युवा, नर-नारी सब मिल स्थानक में आओ।
संतों के दर्शन-वन्दन का पूरा लाभ उठाओ।
धर्म देशना सुनो ध्यान से होगी नहीं निराशा।।
चातुर्मास मिल गया.....।।3।।

कर्म-निर्जरा हेतु करो तप शुद्ध बनेगा आतम।
सामायिक कर समता पाओ दूर हटे सब मातम।
स्वाध्याय से ज्ञान बढ़ाओ, अन्तर बढ़े प्रकाशा।।
चातुर्मास मिल गया.....।।4।।

स्वधर्मी वात्सल्य लाभ लो, करलो गुरुवर की सेवा।
अर्जन होगा पुण्य सभी को प्रसन्न होयेंगे देवा।
'मगन' धर्म-करनी कर लो सब करो न व्यर्थ तमाशा।।5।।
चातुर्मास मिल गया हमको पूर्ण हुई आशा।

गुरुदेव की असीम कृपा से आराधन होगा खासा।।

-सेवानिवृत्त अध्यापक, ग्राम-फाजिलाबाद, (हिण्डौन) जिला-करौली (राज.)

सदा रहे संयम का ठाट

श्रीमती कमला सुराणा

(तर्जः- महावीर भगवान सदा रहे आपका ध्यान)

हीरा गुरु महाराज सदा रहे, संयम का ठाट
ज्ञान-ध्यान की महिमा अपार, सदा रहे गुरु का ध्यान
निर्व्यसनी हो प्रामाणिक हो, आपका है आह्वान
सदा रहे चारित्र का ठाट, हीरा गुरु महाराज.....।।1।।
दृढ़ संयमी क्रिया पक्की, किया जिनशासन का उत्थान।
हम पर है आपका उपकार, हीरा गुरु महाराज.....।।2।।
मृदु-ऋजु भाषी, करुणा सरोवर, शीतल है स्वभाव।
सदा बसो हमारे प्राण, हीरा गुरु महाराज.....।।3।।
नेतृत्व की है अदम्य शक्ति, किया संघ का विकास।
जैन धर्म की हो शान, हीरा गुरु महाराज.....।।4।।
लाख-लाख प्रणाम तुम्हें, स्वीकार करो महाराज।
'कमला' की विनति है हजार, हीरा गुरु महाराज.....।।5।।

-ई-123, नेहरू पार्क, जोधपुर-342003 (राज.)

मेरे गुरुवर हीरा, तुमको ही ध्याएं

श्री अक्षय जैन

(तर्जः- गुरुवर हस्ती का दुनिया में नाम था....।)

गुरुवर हीरा के चरणों में जाएं, शरण में जाएं।
मेरे गुरुवर हीरा, तुमको ही ध्याएं।।
तुम मालिक हो मेरे, आज मैंने स्वीकारा है,
मेरी नाव तिराने में, सिर्फ तेरा सहारा है।
मस्तक झुकाएँ, ध्यान लगाएं। मेरे गुरुवर हीरा.....।।1।।
जब-जब संकट आए, तूने उनसे उबारा है,
मेरे गुरुवर मेरा हर एक, काम तूने संवारा है।

धर्म बढ़ाएं, ज्ञान जुटाएं। मेरे गुरुवर हीरा.....।।2।।
गुरु हस्ती ने तुझमें एक, सुख-स्वप्न देखा है,
तुम मिले मुझको गुरुवर, यही मेरे कर्मों की रेखा है।
पाप हटाएं, पुण्य कमाएं। मेरे गुरुवर हीरा.....।।3।।
संयम तेरा मेरे गुरुवर, वज्र जैसा है,
जो कभी न टूट सके गुरु, तेरा संयम ऐसा है।
'अक्षय' गाए, श्रद्धा दिखाएं। मेरे गुरुवर हीरा.....।।4।।

-सुपुत्र श्री चान्दमलजी जैन, जैनविहार कॉलोनी, अलीगढ़, जिला-टोंक-304023 (राज.)

हीरा गुरुवर आपका जीवन गहरा सागर है

श्रीमती मोनिका डांगी

साधना से आलोकित है जीवन का आंगन,
रत्नत्रय से शोभित है, जीवन का हर कण,
स्वस्थ एवं तंदुरुस्त रहो गुरुवर, आप हर पल,
खुशियों से पूरित हो, जीवन का हर क्षण,
गुरुवर आपकी कृपा और आशीष हमें सदा मिलती रहे,
आपके कुशल नेतृत्व में रत्न संघ निखरता रहे,
चादर महोत्सव के 25 वें वर्ष के मंगल अवसर पर,
मंगलकामना लिए गुरुवर स्वीकारो मेरा भावपूर्वक वंदन।।

-धर्मपत्नी श्री मनीष जी डांगी, ओसवाली मौहल्ला, मदनगंज-किशनगढ़ (राज.)

वन्दन! अभिनन्दन!!

श्री प्रदीप जैन

आसमान से एक फरिश्ते ने आकर बतलाया है।
'हस्ती गुरु' का रूप लिये, 'हीरा' धरती पर आया है।।1।।
तप नियम कराने में कठोर हैं, संयम में हैं दृढ़ श्रद्धावान।
चल रहे हैं मोक्ष की राह पर, ऐसे 'गुरु हीरा' हैं महान्।।2।।
'व्यसन मुक्ति' ही जिनका फरमान है, जो करते लोगों का कल्याण हैं।
ऐसे 'गुरु हीरा' स्वीकारो मेरा भावपूर्ण वंदन! अभिनन्दन।।3।।

ए-9, महावीर उद्यान पथ, बजाजनगर, जयपुर-302015 (राज.)

शोधालेख

हिंसा के भेद-प्रभेद

डॉ. वीरसागर जैन

'अहिंसा' शब्द निषेधपरक है- 'न हिंसा इति अहिंसा', अतः अहिंसा के स्वरूप को भलीभाँति समझने के लिए 'हिंसा' के स्वरूप को समझना अनिवार्य है। 'हिंसा' के स्वरूप को भलीभाँति समझे बिना अहिंसा के स्वरूप का समुचित ज्ञान नहीं हो सकता।

हिंसा का स्वरूप भी अत्यन्त सूक्ष्म है, उसे समझने में प्रायः लोगों को बड़ी भ्रान्ति होती है। ऐसी स्थिति में हम समझते हैं कि यदि हम हिंसा के भेद-प्रभेदों को ही भलीभाँति समझ लें तो हमारे चित्त में हिंसा का स्वरूप काफी कुछ स्पष्ट हो जाएगा। हिंसा के स्वरूपबोध में उसके भेद-प्रभेद के बोध की महती भूमिका है। खेद है कि आजकल हिंसा के भेद-प्रभेदों की चर्चा प्रायः उपेक्षित रहती है। लोग अहिंसा के गीत तो बहुत गाते हैं, पर उसका स्वरूप समझने का प्रयत्न कम ही करते हैं। अतः यहाँ हिंसा के भेद-प्रभेदों के माध्यम से हिंसा के स्वरूप को समझने का प्रयत्न किया जाता है। हिंसा के भेद-प्रभेदों का ऐसा सूक्ष्म विवेचन जैनवाङ्मय में ही उपलब्ध होता है।

जैनाचार्यों ने हिंसा के भेद-प्रभेद विभिन्न दृष्टियों से किये हैं, यथा-

1. निश्चय और व्यवहार हिंसा-

(1) **निश्चय हिंसा-** आत्मा में रागादि की उत्पत्ति होना निश्चय हिंसा है।[1]

(2) **व्यवहारहिंसा-** किसी प्राणी को पीड़ा देना, सताना या मारना व्यवहार हिंसा है।[2]

ध्यान देने योग्य है कि व्यवहार हिंसा को तो सारा जगत् हिंसा मानता है, पर आत्मा में रागादि भावों का उत्पन्न होना भी हिंसा है, न केवल हिंसा है, अपितु निश्चय हिंसा है। ऐसा जैनदर्शन में ही माना गया है।

2. द्रव्य और भाव हिंसा-

(1) **द्रव्य हिंसा-** किसी प्राणी को मारना, सताना या किसी भी प्रकार से दुःख देना द्रव्यहिंसा है।

(2) **भाव हिंसा-** किसी को कष्ट देने का मन में भाव उत्पन्न होना भाव हिंसा है।

द्रव्य हिंसा शरीर या वाणी से होती है, पर भावहिंसा अपने भावों में होती है। प्रधानतः भावहिंसा ही हिंसा हैं, द्रव्यहिंसा तो भावहिंसा पूर्वक ही होती है, भावहिंसा के बिना नहीं।

3. स्व और पर हिंसा-

(1) **स्वहिंसा-** कषायभाव से अस्त्र-शस्त्रादि द्वारा अपना घात करना स्वहिंसा है।

(2) **परहिंसा-** अन्य प्राणी को मारना या सताना परहिंसा है।

प्रधानतः स्वहिंसा ही हिंसा है, परहिंसा तो बाद में होती है।[3]

4. मानसिक, वाचिक और कायिक हिंसा-

(1) **मानसिक हिंसा-** मन के द्वारा किसी का अहित-चिन्तन करना आदि मानसिक हिंसा है। क्रोध, मान, माया, लोभ आदि कषायें भी मानसिक हिंसा में आती हैं।

(2) **वाचिक हिंसा-** दुःखदायक वचन बोलना आदि वाचिक हिंसा है।

(3) **कायिक हिंसा-** अस्त्र-शस्त्र या हाथ-पैर आदि के द्वारा किसी को मारना या दुःख देना कायिक हिंसा है।

इसके अतिरिक्त कृत (करना), कारित (करवाना), अनुमोदन (प्रशंसा) रूप भी तीन प्रकार की हिंसा होती है।

5. कृत, कारित, अनुमोदनरूप हिंसा-

(1) स्वयं हिंसा करना कृतरूप हिंसा है।

(2) अन्य से हिंसा कराना कारितरूप हिंसा है।

(3) होती हुई हिंसा को उचित कहना/ मानना अनुमोदनरूप हिंसा है।

6. स्थूल एवं सूक्ष्म हिंसा-

(1) **स्थूल हिंसा-** व्यवहारहिंसा या द्रव्यहिंसा को स्थूल हिंसा कहते हैं।

(2) **सूक्ष्म हिंसा-** निश्चय हिंसा या भावहिंसा को सूक्ष्म हिंसा कहते हैं। अथवा- हिंसा को ही मानना स्थूल हिंसा है और असत्य, चौर्य, अब्रह्मचर्य एवं परिग्रह सूक्ष्महिंसा है।

7. त्रस और स्थावर हिंसा-

(1) **त्रसहिंसा-** द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय या पञ्चेन्द्रिय जीव की हिंसा को त्रस हिंसा कहते हैं।

(2) **स्थावरहिंसा-** पृथिवीकायिक, जलकायिक, वायुकायिक, अग्निकायिक एवं वनस्पतिकायिक जीव की हिंसा को स्थावर हिंसा कहते हैं।

8. संकल्पी, विरोधी, आरंभी और उद्योगी हिंसा[4]-

(1) **संकल्पी हिंसा-** बिना प्रयोजन किसी निर्दोष प्राणी को जानबूझकर मारना या सताना संकल्पी हिंसा है।

(2) **विरोधी हिंसा**– शत्रु के द्वारा आक्रमण कर देने पर, देश, परिवार या स्वयं की रक्षा के लिए जो हिंसा होती है, उसे विरोधी हिंसा कहते हैं।

(3) **आरम्भी हिंसा**– भोजनादि बनाने में, स्नानादि करने में, साफ-सफाई आदि घरेलू कार्यों में होने वाली हिंसा आरम्भी हिंसा है।

(4) **उद्योगी हिंसा**– आजीविका हेतु किये जाने वाले व्यापार-उद्योगादि में जो हिंसा होती है, उसे उद्योगी हिंसा कहते हैं।

ज्ञानी गृहस्थ मात्र केवल संकल्पी हिंसा का त्यागी होता है, शेष तीन प्रकार की हिंसाएँ उसके जीवन में पाई जा सकती हैं।

9. परिणमन एवं अविरमणरूप हिंसा–

(1) **परिणमनरूप हिंसा**– जो हिंसा हम करते हैं, वह परिणमनरूप हिंसा है।

(2) **अविरमणरूप हिंसा**– जो हिंसा हम करते तो नहीं, परन्तु उसके त्याग का संकल्प भी नहीं लेते, वह अविरमणरूप हिंसा है।

उक्त भेद-प्रभेदों के अतिरिक्त भी हिंसा के अन्य अनेक भेद-प्रभेदों की चर्चा आगम में मिलती है। हमें उसे भी समझने का प्रयत्न करना चाहिए। 'भगवती आराधना' में आचार्य शिवार्य ने हिंसा की क्रियाओं के पाँच भेद बतलाए हैं, यथा–

पादोसिय अधिकरणीय कायिय परिदावणादिवादाए।
एदे पंच पओगा किरियाओ होंति हिंसाओ।।80।।

अर्थात् द्वेषिकी, आधिकरणिकी, कायिकी, पारितापकी, प्राणघातिकी[1]– ऐसी पाँच प्रकार की क्रियाओं को हिंसा क्रिया कहते हैं।

इसी प्रकार के अन्य भी वर्णन उपलब्ध होते हैं। हमें उन सबके माध्यम से हिंसा का और फिर उसके माध्यम से अहिंसा का समीचीन स्वरूप समझना चाहिए, तभी भगवती अहिंसा की उपासना भलीभाँति हो सकेगी।

संदर्भः–

1. (क) कसायपाहुड, गाथा 42/102 (ख) पुरुषार्थसिद्ध्युपाय, श्लोक 44
(ग) परमात्मप्रकाशटीका 2/125 (घ) अनगारधर्मामृत 4/26
2. (क) तत्त्वार्थ सूत्र 7/13 (ख) पुरुषार्थसिद्ध्युपाय 43
3. (क) भगवती आराधना, 803 एवं 1363
(ख) सर्वार्थसिद्धि, 7/13/352
4. जैनेन्द्रसिद्धान्तकोश 4/532

–जैन दर्शन विभाग, श्री लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ,
कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, नई दिल्ली-110016

धारावाहिक

लगन की वेला (13)

आचार्य श्री उमेशमुनि जी 'अणु'

अरुण पर नियन्त्रण

पिता-पुत्र दोनों सभा-स्थल से बाहर आए। लोग कोई रथ से, कोई शिविका से तो कोई पैदल जा रहे थे। रथिक ने श्रेष्ठी को बाहर निकलते देखा। वह रथ को उनके समीप ले आया। पिता ने कहा- "अरुण! रथ में ही चलो।" पिता-पुत्र दोनों रथ में आरूढ़ हो गये। दोनों ही अपने-अपने विचारों में खोये थे। श्रेष्ठी सोच रहे थे- "आज अरुण को यहाँ ले आया, यह अच्छा ही हुआ। यह भी संयोग की बात है कि इसका अध्ययन भी आज ही पूर्ण हुआ है। है तो यहाँ भी अष्टवर्षीय अभ्यास। फिर इसे यहाँ एक वर्ष अधिक क्यों लग गया? इसका अध्ययन तो एक वर्ष पूर्व ही पूर्ण हो जाना चाहिये था। अरे! हाँ! इसे कलायतन में छह मास विलम्ब से ही भेजा था और हो सकता है कि छह मास इसने विशेष योग्यता के लिये पुनरध्ययन के लिये बिताये हों। कलाचार्य ने ठीक ही कहा कि अरुण की यहाँ अनौपचारिक परीक्षा हो गयी। इसने गीत की मात्र चार पंक्तियों में आज की समस्त परीक्षाओं का सार अंकित कर दिया। बिना किसी विशिष्ट अध्ययन के यह सम्भव नहीं है। कलाचार्य ने प्रसन्न होकर इसे कितना सुन्दर आशीर्वाद दिया! वह दृश्य देखकर मैं भाव-विह्वल हो गया।"

इधर अरुण भी विचारों में खोया था- 'आज तात ने मुझे इस परीक्षण सभा में लाकर अच्छा ही किया। लाये तो थे वे मुझे नीचा दिखाने के लिये और प्रमुख कलायतन में अधीत छात्रों का गौरव बताने के लिये। मैंने उनका गौरव-सत्कार-सम्मान देख ही लिया। उनके अध्ययन की विशेषता भी दृष्टिगत हुई। वस्तुतः वह देश का प्रमुख कलायतन ही है और उसकी अपनी विशेषता के कारण ही उसकी प्रसिद्धि है- महिमा है। परन्तु मुझे लगा कि मैं भी कोई घाटे में नहीं रहा हूँ। वहाँ के प्रमुख कलाचार्य ने मुझे कितना उत्तम आशीर्वाद प्रदान किया? उस समय मैं तो भाव-विभोर हो गया। उन्होंने मुझे बोलने की प्रेरणा दी थी। मैं मूक-सा ही शिवसुन्दर और गंगेश को मालाएँ प्रदान करने जा रहा था। दोनों ही लगते हैं विचारक। परन्तु दोनों के चिन्तन में मौलिक अन्तर है। शिवसुन्दर अन्तर्मुखी लगता है और गंगेश बहिर्मुखी....ठीक है- अपने को क्या मतलब इन बातों से। क्या वे मेरे सुहृद् हो सकते हैं?.... ऊँऽऽ मैं भी कैसा हूँ। अभी मेरा उनसे कुछ परिचय है नहीं और उनसे मैत्री की

सूझ रही है। मेरे बचपन के मित्र ही मुझसे दूर हो गये.....।' इस प्रकार पिता-पुत्र का अपने-अपने ढँग से चिन्तन चलता रहा। पूरे मार्ग में उनमें कोई वार्तालाप नहीं हुआ। रथिक ने जब रथ रोका, तब वे अपने विचारों से बाहर आये और रथ से उतरकर गृह में प्रविष्ट हो गये।

वे घर आये, तब डेढ़ मुहूर्त्त के लगभग दिन शेष रहा होगा। भोजन के लिये उनकी प्रतीक्षा हो रही थी। सागरचन्द्र को रात्रिभोजन के प्रत्याख्यान नहीं थे, परन्तु अरुण ने आचार्यदेव के विराजमान होने के बाद रात्रि-भोजन नहीं किया। वह एक-एक वर्ष के प्रत्याख्यान बढ़ाता रहा। अब उसका मन जीवन-भर रात्रि-भोजन के प्रत्याख्यान का हो रहा था, परन्तु संकल्प दृढ़ नहीं हुआ, अतः ऐसी भावना ही चल रही थी। यों तो अभी भी वर्ष भर के प्रत्याख्यान चल ही रहे हैं। सिद्धिदेवी उसकी प्रतीक्षा कर रही थी। उसने उसे देखते ही कहा- "अरुण! इतनी देर कहाँ लगा दी? जा जल्दी भोजन कर ले।"

"अभी कर लेता हूँ"- यह कहकर वह हाथ मुँह धोकर जल्दी ही भोजन गृह में चला गया। जल्दी ही भोजन से निवृत्त हुआ। कुछ क्षण विश्राम लिया और वह कहीं जाने का उपक्रम करने लगा।

समय सायंकाल का हो गया था। अरुण चलने के लिये उद्यत हुआ, तब सागरचन्द्र की दृष्टि उस पर पड़ी। वे समझ गये कि वह कहाँ जा रहा है? उन्होंने उसे टोकना उचित नहीं समझा, परन्तु वे विचार में डूब गये-"यह नित्य-क्रम के अनुसार स्थानक जा रहा होगा- प्रतिक्रमण करने! बहुत मन लगता है इसका वहाँ। पर अब यह सयाना हो गया है। इसे घर में, दुकान में मन लगाना चाहिये। मैंने अभी तक इसे स्थानक जाते नहीं रोका। पर अब सीमा पार हो रही है। इसका रहन-सहन विचित्र हो रहा है। कहीं वैराग्य के चक्कर में नहीं फँस जाय....।" आज की घटना से उन्हें अपने पुत्र पर विशेष ममत्व जाग गया- "यह मेरा लघु पुत्र है। चारों पुत्रों में विशेष बुद्धिमान है- सुन्दर है। शील स्वभाव सभी में योग्य है। यह मेरे घर का रत्न है। इतने दिन तो सब कुछ चलता रहा। धर्म-आराधना में अन्तराय देने का मन नहीं है। परन्तु इसे घर की मर्यादा का ध्यान तो दिलाना होगा....।" वे स्वयं कुछ-न-कुछ नियमित धर्म-आराधना करते थे। परन्तु लगभग एक वर्ष से उनके स्थानक जाने में शैथिल्य आ गया था। प्रतिदिन एक सामायिक तो वे घर पर कर लेते थे, स्थानक नहीं जा पाते थे। कभी-कभी तो उन्हें आचार्यश्री के दर्शन किए कई-कई दिन हो जाते थे। कुछ दिन बीत जाने पर यह भाव आने लगते- 'कैसे जाऊँ? आचार्यश्री पूछेंगे तो क्या उत्तर दूँगा?' इस संकोच में कुछ दिन और बीत जाते, परन्तु गुरु-दर्शन आत्मिक कर्त्तव्य तो था ही, उसके साथ यह सामाजिक कर्त्तव्य भी हो गया। यदि वे लम्बे समय तक स्थानक नहीं जाते तो

समाज में उनकी टीका-टिप्पणी प्रारम्भ हो जाती। लोग उनके पद का भी गौरव नहीं रखते और मुँह पर ही उन्हें टोकने लग जाते। इसलिए ऐसी स्थिति आने के पहले ही मन को दृढ़ करके, आचार्यदेव के दर्शन के लिये जाना पड़ता था, परन्तु आचार्यदेव कितने गम्भीर थे। कभी उन्हें नहीं टोकते। उन्हें वंदना करते हुए देखकर वे प्रसन्नता से कहते- ''दया पालो! सागर सेठ!'' और उनके मन का सारा संकोच दूर हो जाता। वे श्रद्धा से पूज्यवर के चरणों में झुक जाते और गुरुदेव के बिना पूछे स्पष्टीकरण देने लग जाते- ''क्या करूँ, गुरुदेव! प्रमाद में फँस गया था। इतने दिन नहीं आ सका। क्षमा करें।''

गुरुदेव सहज भाव से फरमाते- ''देवानुप्रिय! संसार तो प्रमाद का ही स्थान है। जो जितना प्रमाद को त्यागता है, वह उतना ही धन्य है।'' वे आचार्यदेव के इस सौम्य स्वभाव से ही तो प्रभावित थे। कोई उपालम्भ नहीं। कोई चुभती हुई बात नहीं। कुछ दिन तो दर्शन का क्रम चलता और फिर क्रम भंग हो जाता। पहले अरुण स्थानक जाता तो उन्हें भी आमन्त्रित करता था। परन्तु अब उसने भी ऐसा करना छोड़ दिया, क्योंकि उसने अनुभव किया था कि उन्हें आमंत्रण देने में उसकी अपनी आराधना में भी विघ्न उत्पन्न हो जाता था। इसलिए आज भी अरुण ने स्थानक जाते हुए उनकी ओर देखा तक नहीं। ऐसा पहले भी कई बार हुआ था। परन्तु उस समय उन्हें कोई विचार नहीं होता था, परन्तु आज तो विविध विपरीत विचारों में बह रहे थे।

जब रात्रि में अरुण लौटा, तब लगभग पौन प्रहर रात्रि बीत गयी थी। सागरचन्द्र किसी तात्कालिक कार्य से निवृत्त होकर बैठे ही थे। उन्होंने अरुण को देखा तो उसे पुकारा- ''अरुण! यहाँ आओ तो।'' अरुण आकर शान्ति से खड़ा हो गया। वे बोले- ''बैठो!'' तो वह बैठ गया। उन्होंने दुलार भरे स्वर में कहा-''वत्स! ऐसे कैसे हो रहे हो?''

''क्यों? तात! क्या हुआ? मैं तो बिल्कुल स्वस्थ हूँ।''

''यह तो मैं देख ही रहा हूँ। मैं तुम्हारे रहन-सहन के बारे में कह रहा हूँ। आज जब मैंने परीक्षण-सभा के बाहर इस वेश में देखा, तब मुझे बड़ी लज्जा आयी। ऐसे तुच्छ वस्त्र तो मेरे सेवकों के भी नहीं हैं।''

''तात! मैं तो सदा ऐसे ही वस्त्र पहनता हूँ। आज ही पहने, ऐसी बात नहीं है।''- उसने शान्त स्वर में कहा-''क्योंकि मुझे अन्य वस्त्र सुहाते नहीं हैं। सेवक अपनी रुचि के अनुसार वस्त्र पहनने में स्वतंत्र हैं। तात! यह तो अपनी-अपनी रुचि है।''

उसके कथन में रही हुई उदासीनता और अपनी बात की उपेक्षा से सागरचन्द्र के हृदय में किंचित् आवेश आ गया। छोटे के द्वारा की गई अवहेलना समर्थ व्यक्ति सहन नहीं कर पाते, परन्तु जो सुन्दर परिणाम लाना चाहते हैं, वे अपने आप पर नियन्त्रण रखते हैं।

सागरचन्द्र ने अपने आवेश को प्रकट नहीं होने दिया। पर उन्हें अरुण का उत्तर अच्छा नहीं लगा। वे बोले- "वत्स! पहले तो तुम्हारी ऐसी रुचि नहीं थी। अब ऐसी क्यों हो गयी?"

"तात! रुचि तो परिवर्तनशील है। समझ के विकास के अनुसार रुचि बदलती रहती है। ऐसा ही मेरे साथ हुआ है।"

"पर वत्स! कुछ सोचो तो सही, ऐसे वस्त्र पहनना हमारे- तुम्हारे लिये शोभास्पद है? मर्यादा के अनुकूल है? शान्ति से सोचो।"

"तात! आप पूज्यजन हैं। आपसे ज्यादा क्या कहूँ? छोटे मुँह बड़ी बात होगी।" - संकोच से अरुण कह रहा था- "वस्त्र मात्र तन ढँकने के लिये हैं। परन्तु दुर्भाग्य से इनके साथ शोभा और उच्चता-निम्नता की बातें जुड़ गयी हैं। हम वस्त्रों से सुन्दर दिखाई दें- इस भावना से वस्त्र-परिधान का मूल उद्देश्य मारा जाता है और तात! उच्चकोटि के वस्त्र पहनकर मैं अन्य साधारणजनों से उच्च दिखायी दूँ- उनसे अलग दिखायी दूँ- यह मुझे नहीं सुहाता है।"

यह बात श्रेष्ठी की बात पर टिप्पणी जैसी थी। परन्तु सागरचन्द्र जरा भी रुष्ट नहीं हुए। वे अपने पुत्र को समझाते हुए बोले- "लाल! मैं तुझे भेद करने की बात नहीं सिखा रहा हूँ। पर अपने-अपने घर का स्तर होता है। प्रत्येक वर्ग की स्थिति भिन्न होती है। और एक वर्ग में भी विभिन्न स्तर होते हैं। उस स्तर के अनुसार उन्हें रहना होता है। उस स्तर के अनुसार रहना-अहंकार के पोषण की बात नहीं है। उस स्तर के साथ समाज के व्यवहार, व्यापार, आजीविका के साधन, उद्योग आदि का तारतम्य जुड़ा हुआ है। तुम इस विषय में तत्सम्बन्धी कला में अध्ययन कर चुके हो। तुम स्वयं सुज्ञ हो। विशेष क्या समझाऊँ तुम्हें?"

अरुण ने पिता की बात का उत्तर नहीं दिया, मात्र मुस्करा दिया।

दूसरे दिन सागरचन्द्र ने उच्चकोटि के वस्त्र-युगल, मुक्तामाला, अंगद आदि आभूषण भिजवा दिए। पिता का मन रखने के लिये उसने वे सब पहन लिये। उस दिन उस पर सागरचन्द्र बहुत प्रसन्न हुए। परन्तु दूसरे ही दिन उसके शरीर पर पुराने वस्त्र ही दिखायी दिये।

(क्रमशः)

सुविचार

सफलता की कहानियाँ मत पढ़ो, उससे केवल एक सन्देश मिलेगा।
असफलता की कहानियाँ पढ़ो, उससे सफल होने के अनेक उपाय मिलेंगे।।

-डॉ. ए.पी.जे.अब्दुल कलाम, पूर्व राष्ट्रपति, भारत

संघ-हितार्थ सन्देश

उत्साह के अतिरेक में भावुक भक्त संघ-व्यवस्था नहीं भूलें

श्री मानेन्द्र ओस्तवाल

जैन समाज में अनेकानेक परम्पराएँ हैं। कुछ परम्पराओं में कार्यक्रमों की क्रियान्विति कैसे करनी, बिना संकोच किए बतलाई जाती है। कुछ परम्पराएँ क्रिया को महत्त्व देती हैं और समाचारी के सम्यक् परिपालन के प्रति सजग रहती हैं। कुछ परम्पराएँ न क्रियापालन के प्रति जागरूक हैं और न ही परिणामों के प्रति चिंतित। अलग-अलग परम्पराओं की रीति-नीति, कार्य-पद्धति, विचारधारा और प्रवाह में बहने की प्रवृत्ति देखने, सुनने, समझने को मिलती है। कुछ परम्पराएँ मर्यादा-रक्षण को सर्वोच्च प्राथमिकता देती है।

रत्नसंघीय परम्परा में संत-सतीवृन्द संघनायक से चातुर्मास प्रवेश विषयक आवश्यक दिशा-निर्देश प्राप्त करके चातुर्मासिक प्रवेश करते हैं। संत-सतीवृन्द किसी गृहस्थ के माध्यम से संघनायक को पत्र-प्रेषित कर चातुर्मास-प्रवेश विषयक तिथि-समय आदि मंगवाते हैं। संघनायक प्रत्युत्तर में किस दिन किस दिशा से प्रवेश करना है, इस सन्दर्भ में यथोचित मार्गदर्शन करते हैं। संघनायक का प्रत्युत्तर पत्र के माध्यम से पत्र-लेखक को मिलता है। वही पत्र संत-सतीवर्ग की सेवा में प्रस्तुत किया जाता है। चातुर्मासिक प्रवेश का यह क्रम आचार्य भगवन्त पूज्य गुरुदेव श्री हस्तीमल जी म.सा. के शासनकाल से चलता आ रहा है। आचार्य श्री हीरा गुरु हस्ती की रीति-नीति पर चलते रहे हैं।

संत-सतीवर्ग के चातुर्मास प्रवेश की तिथि की जानकारी का माध्यम गृहस्थवर्ग के पत्राचार से होता है, इसलिए चातुर्मासिक प्रवेश तिथि की जानकारी चातुर्मास करवाने वाले संघ सदस्यों को सहजता से ज्ञात हो जाती है। प्रवचन सभा में श्रावकवर्ग को यथोचित जानकारी समय के साथ होती रहती है।

संघनायक का चातुर्मासिक प्रवेश विगत कुछ वर्षों से पहले से घोषित नहीं किया जाता है। हाँ, कल का प्रवचन कहाँ होगा, इस सूचना के रूप में चातुर्मासार्थ प्रवेश की जानकारी एक दिन पहले होती है, अन्यथा श्रावक-श्राविकाओं को तो क्या, संत-मुनिराजों तक को चातुर्मास प्रवेश की पूर्व से जानकारी नहीं होती।

वर्तमान में संचार माध्यमों की बहुलता है। फोन, मोबाइल, इण्टरनेट, वाट्स-अप जैसे कई ऐसे साधन सुलभ हैं, जिनसे समाचारों का संप्रेषण तुरन्त प्रभाव से होता है। फिर,

उत्साह के अतिरेक में भावुकजन बिना सोचे-समझे प्रायः प्रतिदिन मैसेज करने में अपनी शान समझते हैं।

हमारे संघनायक परम्परा के पोषण-रक्षण-संवर्धन के हामी हैं। देखा-देखी प्रवाह में बहने की प्रवृत्ति को संयम-साधकों के लिए ही नहीं, श्रमणोपासकों के लिए भी हितावह नहीं, यह बात आचार्य श्री खुलकर कहते हैं। संघ महामंत्री द्वारा एक विज्ञप्ति जारी कर संघ-सदस्यों से अपील की गई थी कि संत-सतीवृन्द के विचरण-विहार, ग्राम, नग़र, शहर में प्रवेश, चातुर्मासिक प्रवेश अथवा संत-सतीवृन्द के सन्दर्भ में समाचारों का प्रचार-माध्यमों से सम्प्रेषण नहीं किया जाय।

संघ सदस्यों में देखा-देखी का भाव उत्तरोत्तर बढ़ता जा रहा है। मैं किसी से कम नहीं, इस मानसिकता में भक्त बिना सोचे-समझे लोगों को विहार में बुलाते हैं, उन्हें नाश्ता-खाना आदि का आतिथ्य-सत्कार देते हैं। स्वागत और प्रभावना के प्रलोभन से न केवल जैन, अपितु जैनेतर समुदायों के लोग भी एकत्रित होते हैं और खा-पीकर एक दूसरा-एक दूसरे की तारीफ करके समझते हैं कि हम शासन की प्रभावना कर रहे हैं। यह विशुद्ध रूप से मिथ्या मान्यता है। खोटे सिक्के का प्रचलन तुरन्त होता है, ठीक ऐसे ही विकृति दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ती है।

आचार्यप्रवर पूज्य गुरुदेव श्री हीराचन्द्र जी म.सा. पल्लीवाल क्षेत्र के छोटे-से-छोटे ग्राम में धर्मोद्योत-धर्मप्रभावना करते हुए 13 जुलाई 2015 को हिण्डौन के वर्द्धमान नगर स्थित सामायिक-स्वाध्याय भवन में पधार गए। आचार्य श्री हिण्डौन शहर में चातुर्मासार्थ प्रवेश कब करेंगे, इसकी पृच्छा बराबर चलती रही, किन्तु हर वर्ष की तरह इस बार भी प्रवेश तिथि विषयक कहीं से कोई सूचना नहीं मिल सकी। प्रवचन सभा में मंत्रीजी आवश्यक सूचनाओं का प्रसारण तो बराबर करते, किन्तु कल का प्रवचन कहाँ होगा, इस सन्दर्भ में कोई जानकारी या सूचना नहीं की जाती। 21 जुलाई 2015 को प्रवचन-सभा में सूचना की गई कि कल का प्रवचन हिण्डौनसिटी स्थानक में होगा, इसलिए कल सवेरे विहार की संभावना है।

प्रवचन सभा में की गई सार्वजनिक सूचना समीपवर्ती क्षेत्रों तक ही नहीं, सूदूरवर्ती क्षेत्रों तक पहुँच गई। उत्साह के अतिरेक में गृहस्थ वर्ग ने प्रवचन पश्चात् स्वधर्मी वात्सल्य भोज के आयोजन की सूचना भी प्रसारित कर दी। मैसेज पर मैसेज चलते रहे। संघ में सूचना की प्रतिक्रिया होना स्वाभाविक है।

संघ के शीर्ष पदाधिकारियों व प्रबुद्धजनों ने स्वधर्मि-वात्सल्य भोज की सूचना को न केवल अप्रासंगिक माना, अपितु उत्साह के अतिरेक में बड़ी चूक होने को संघहित में

अनुचित समझा। आचार्य श्री हीरा की सेवा में पत्राचार करने वाले बन्धु से इस विषयक बात की गई तो उन्होंने अपनी अनभिज्ञता बताई, साथ-ही-साथ संघनायक के श्री चरणों में भक्तों के मन की बात कह सुनाई।

आचार्य श्री हीरा शुद्ध साध्वाचार के पालक हैं, संघ-समाज में जैनत्व का गौरव बढ़े एतदर्थ शुद्धाचरण की प्रभावी प्रेरणा करने वाले महापुरुष ने भावुक भक्त के उत्साह के अतिरेक में हुई चूक को संघहित में अनुचित मानते हुए हिण्डौन के दर्जनों श्रावकों के समक्ष स्पष्ट उद्घोषणा कर दी कि आज प्रवचन-सभा में बताए समयानुसार मेरा विहार नहीं होगा। अर्थात् मैं प्रातःकालीन वेला में विहार नहीं करके प्रवचनादि कार्यक्रम प्रतिदिन की भाँति यही करूँगा।

आचार्यश्री की घोषणा से श्रावक संघ के पदाधिकारियों को गहरा आघात लगा। श्रावक संघ के प्रबुद्धजनों ने संघनायक के श्रीचरणों में पुनःपुनः प्रार्थना रखी कि आपश्री हमारी भूल के लिए अपने घोषित कार्यक्रम में परिवर्तन नहीं करें। हाँ, हमारी भूल का हमें प्रायश्चित्त प्रदान करें। हम आप द्वारा प्रदत्त प्रायश्चित्त सहर्ष स्वीकार करेंगे।

दूरदर्शी संघनायक ने मन-ही-मन संकल्प कर लिया था कि मुझे संघ-सदस्यों की प्रकृति व प्रवृत्ति रोकनी है, इसलिए मैं ही अपना कार्यक्रम स्थगित रखूँ। आचार्यश्री ने बार-बार किए गए आग्रह-अनुरोध पर इतना ही कहा कि मैं भावुक भक्तों को कैसे रोकूँ, यह समस्या साधारण नहीं है। मैं अपनी स्थिति स्पष्ट करना ही एकमात्र उपाय समझता हूँ कि मैं 22 जुलाई को प्रातः निर्धारित समय पर विहार नहीं करूँगा और प्रवचनादि कार्यक्रम भी प्रतिदिन की तरह यहीं सम्पादित होंगे।

वचन के धनी महापुरुष ने जैसा कहा वैसा किया। 22 जुलाई को वर्द्धमान नगर स्थित सामायिक-स्वाध्याय भवन के निकट विद्यालय में प्रवचन हुआ। आचार्यश्री के इस कदम से न केवल हिण्डौन वासियों को अपितु अन्यान्य ग्राम-नगर और महानगर के भक्तों को स्पष्ट सन्देश मिल गया कि परम्परा की रीति-नीति, सिद्धान्त व मान्यता का रक्षण करना सबका फर्ज है।

संघ हितैषी-संघहितचिन्तक संघनायक की सार्थक पहल पर जन समुदाय को भले ही असुविधा हुई हो, किन्तु आचार की निर्मलता-पवित्रता का भाव जन-जन के जहन में जग गया।

आचार्य श्री ने प्रातः 11 बजे विहार किया, हिण्डौनसिटी स्थित स्थानक तक के पूरे रास्ते श्रमण भगवान महावीर की जय, जैन धर्म की जय, पूज्य आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा. की जय, पूज्य आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा, उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा., निर्ग्रंथ संत-मुनिराजों की जय-जय के गगनभेदी जयनाद चलते रहे।

प्रातः 11.30 बजे सामायिक-स्वाध्याय भवन हिण्डौन शहर में मंगल-प्रवेश हुआ।

आचार्य श्री ने परम्परा के रक्षण में श्रावक समाज के सहयोग की आवश्यकता बताते हुए कहा कि चतुर्विध संघ की जाहोजलाली में श्रावक-श्राविकावर्ग की भूमिका व भागीदारी तभी साकार होगी जबकि आप उत्साह के अतिरेक से बचकर, देखादेखी की दौड़ से अपने-आपको अलग करेंगे।

हिण्डौन संघ की ओर से हुई त्रुटि के लिए क्षमायाचना की गई। आचार्यश्री का हिण्डौन शहर का चातुर्मास पल्लीवाल क्षेत्र के साथ सकल समाज के लिए प्रेरणादायी होगा, ऐसा विश्वास है। *-संयुक्त महामंत्री, अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर (राज.)*

चातुर्मास का मूल्यांकन

डॉ. पुष्पेन्द्र मुनि

चातुर्मास का सही मूल्यांकन श्रावकों और श्राविकाओं के द्वारा लिए गए स्थायी संकल्पों एवं व्रत प्रत्याख्यानों से होता है। यह समय आध्यात्मिक क्षेत्र में लगातार नई ऊँचाइयों को छूने हेतु प्रेरित करने के लिए है, अध्यात्म जीवन-विकास की वह पगडण्डी है जिस पर अग्रसर होकर हम अपने आत्मस्वरूप को पहचानने की चेष्टा कर सकते हैं। साधु-साध्वियों के सकारात्मक प्रयासों की बदौलत कई युवा धर्म की ओर उन्मुख होकर ज्ञान-ध्यान सीखकर स्वयं के साथ दूसरों के कल्याण की सोच रखते हैं, कई सुश्रावक-सुश्राविकाएँ धर्म-प्रचार में पारंगत होकर स्वाध्यायी बनकर जिन क्षेत्रों में साधु-साध्वी विचरण नहीं कर रहे हैं, वहाँ जाकर स्वाध्याय तथा जन-कल्याण की भावना का प्रचार-प्रसार कर अपना जीवन संवार लेते हैं।

सैकड़ों जिज्ञासाओं को शांत करने का सुअवसर है, चातुर्मास।
स्वधर्मी के कल्याण की अलख जगाता है, चातुर्मास।
जीवदया की ओर उन्मुख करता है चातुर्मास।
जन से जैन बने, प्रेरणादायी है चातुर्मास।
साहित्य की पुस्तकों से रूबरू होने का जरिया है, चातुर्मास।
उपवास से कर्म-निर्जरा का सन्मार्ग दिखाता है, चातुर्मास।
सम्यग्ज्ञान, दर्शन और चारित्र की पाटी पढ़ाता है, चातुर्मास।
कई धार्मिक शैक्षणिक शिविरों का जन्मदाता है, चातुर्मास।
तपस्वी तथा आचार्य भगवन्तों के पावन दर्शन से लाभान्वित होने का मार्ग है, चातुर्मास।

-प्रेषक: श्री ऋषभ नाहटा, न्यासी-अभय जैन ग्रंथालय

युवा-स्तम्भ

मुस्कराते चेहरे पर दर्द की इंतहा नहीं

श्रीमती भारती जैन

उम्र 19 वर्ष, लेकिन पहली नज़र में देखने पर 2 साल की बच्ची जैसी, वजन 12 किलो, लम्बाई 2.5 फुट, काफी के कप से ज्यादा भारी चीज उठाने में असमर्थ, जरा सा शरीर हिला तो हड्डी टूटने का डर, जन्मजात बीमारी के चलते शरीर का विकास नहीं होने के कारण हमेशा लेटे रहने को मजबूर- पर कुदरत के इस फैसले को कूची से बदलती गिरिजा लेटे-लेटे ही अपने हाथों से पेंटिग बनाकर हर महीने लगभग 10 हजार कमा लेती है और परिवार तथा खुद के इलाज में प्रति माह हो रहे 15 हजार के खर्चे में हाथ बँटाती है। कोई दया दिखाये यह गिरिजा को बिल्कुल पसंद नहीं, चाहत है विदेश में अपनी कला का प्रदर्शन कर सके।

बंधुआ मजदूर का बेटा, किन्तु पढ़ाई की ललक रखने के कारण सामाजिक रूप से बहिष्कृत, स्कूल के लिये 11 किमी की दूरी प्रतिदिन नंगे पैर तय, साइकिल के पंक्चर लगाकर फीस एवं किताबों का खर्च वहन, मानसून के दौरान कपड़े भीग जाने के कारण स्कूल से छुट्टी लेने को मजबूर, AIIMS से नेशनल मेमोरियल अवार्ड एवं Who's Who for the year 2010 से सम्मानित अपने गाँव का पहला डॉक्टर सूर्य बाली, जिनका एकमात्र लक्ष्य है अब गरीबों की सेवा।

दर्द इतना मिला सहा न गया,
ज़ख्म गहरा लगा, भर न सका।
दर्द के हमसफर बन, खुशी बाँटने चले जब,
ज़ख्म पर मरहम खुद-ब-खुद लग गया।
इम्तिहान चाहे जितने ले अब जिन्दगी,
ज़िद है कि हर दर्द को मुस्कराते हुए हराना है।।

उपर्युक्त दोनों उदाहरण इन पंक्तियों के हर शब्द को सार्थक करते प्रतीत होते हैं या यह कहना गलत नहीं होगा कि इनसे प्रेरित होकर ही मेरी इस कविता का सृजन हुआ है। गिरिजा एवं डॉ. बाली उदारहण मात्र हैं ऐसे लोगों के जो कभी न हारने का जज्बा लिये असीम दर्द को अपने अन्दर समेटे हुए चहुँ ओर खुशियाँ बिखेर रहे हैं।

ज़िन्दगी की जद्दोजहद में जीना ही भूल गये हम।
बिन मांगे मिल गया, उसकी कद्र करना ही भूल गये हम।।

कुछ और पाने, भविष्य के लिये कुछ और संगृहीत कर लेने की कश्मकश में हम उलझ कर रह जाते हैं और सहज उपलब्ध बहुत सी ऐसी नियामतें हमारे लिए गौण हो जाती हैं, जिनके न होने की स्थिति में शायद जीवन का सुगमतापूर्ण संचालन अत्यन्त कठिन हो जाता है। वहीं दूसरी ओर इन सहज उपलब्ध नियामतों से वंचित लोग इनका महत्त्व बखूबी समझते हैं और पूरी शिद्दत से वह प्राप्त करने की कोशिश करते हैं, जिससे वे भीड़ से अलग एक विशिष्ट व्यक्तित्व के रूप में अपनी पहचान कायम कर सकें और उनके इस व्यक्तित्व के समक्ष समस्त कमियाँ बौनी नज़र आयें।

असाध्य रोग से पीड़ित व्यक्ति, मुखिया या किसी अतिप्रिय की मृत्यु पर सदमे में परिवारजन, पढ़े-लिखे डिग्रीधारी, किन्तु बेरोजगारी की समस्या से झूझते नवयुवक-युवतियाँ, कमरतोड़ महंगाई से सामंजस्य न बिठा पाने से हताश लोग सामान्य परिस्थितियों में इनका सामना न कर पाने की स्थिति में, इनमें से कुछ लोग आत्महत्या जैसा आत्मघाती कदम उठा लेते हैं, कुछ सिस्टम से आक्रोशित होकर गलत राहों को चुन लेते हैं, कुछ खराब परिस्थितियों और हर वक्त दूसरों के समक्ष अपने दुःखों का राग अलापकर हमेशा दया और सहानुभूति का पात्र बने रहना पसंद करते हैं और कुछ लोग निराश होकर जैसे-तैसे अपना शेष जीवन व्यतीत करते हैं।

बाजुओं में मेरे कभी, इतनी ताकत तो न थी।
पर जंग जिन्दगी की लड़ने को, हौंसलों में कोई कसर न थी।।

इसके विपरीत गिरिजा और डॉ. सूर्य बाली जैसे लोग पग-पग पर बिछे तमाम अवरोधों और कठिनाइयों के बावजूद जीवन से हार नहीं मानते और निराशा तथा हताशा को अपने जीवन में कोई स्थान नहीं देते। आखिर ऐसी कौनसी बातें हैं जो इन्हें अधिसंख्य लोगों में से कुछ चुनिन्दा लोगों की श्रेणी में लाकर खड़ा करती हैं। क्या वजह है कि अंतहीन वेदना और प्रतिकूल परिस्थितियाँ भी उनके हौंसले डिगा नहीं पाती हैं। क्या प्रकृति ने इन्हें असहनीय दर्द और दुःख सहन करने के लिये कुछ दिव्य अलौकिक शक्तियाँ प्रदान की हैं। बहुत करीब से ऐसे लोगों से मिलने, देखने और सुनने पर यह समझ आता है कि कुछ अलग करने का जुनून उन पर इस कदर हावी रहता है कि हर पल की तकलीफ से जूझने में वे असीम आनन्द का अनुभव करते हैं। मुश्किलों पर विजय पाने के उनके हर प्रयास से ऐसा प्रतीत होता है मानो वे प्राप्त की अपूर्णता को चुनौती दे रहे हों।

शायद यही है दर्द की इंतहा लिये मुस्कराते चेहरों की कहानी।

-धर्मपत्नी श्री सुरेन्द्रकुमार जैन, 325, महावीर नगर द्वितीय, दुर्गापुरा, जयपुर (राज.)

नारी-स्तम्भ

जीवन की रक्षा कवच हैं मर्यादाएँ

श्री हस्तीमल झेलावत

प्रत्येक मनुष्य के जीवन में मर्यादाओं के पालन का विशिष्ट महत्त्व है। मर्यादाहीन व्यक्ति दुःखी एवं तनावग्रस्त जीवन जीता है। मर्यादा वह लक्ष्मण रेखा है, जो व्यक्ति को सभी तरह से सुरक्षित करती है। अमर्यादा से सद्गुणों का नाश होता है। मर्यादा जीवन का रक्षाकवच है, जीवन का अमृत है, जो व्यक्ति को जीवन के हर क्षेत्र में सुरक्षा प्रदान करती है।

संत जीवन हो अथवा गृहस्थ जीवन, दोनों के लिए कदम-कदम पर मर्यादा का होना आवश्यक है। संत-जीवन में रहते हुए शिष्य अपने सद्गुरु के प्रति विनय एवं आदर का व्यवहार करेगा, तभी वह उनसे ज्ञान प्राप्त कर सकेगा। उनके अनुशासन और आज्ञाओं को समर्पण भाव से शिरोधार्य करके ही वह शिष्य गुरु कृपा से पूजनीय तथा वंदनीय बनता है। संत जीवन की मर्यादाओं का विनय और विवेकपूर्वक पालन करने वाला संत जन-जन की श्रद्धा का पात्र बन जाता है।

संयमी जीवन में रहते हुए जो साधक अमर्यादित व्यवहार करता है, वह अपने पवित्र लक्ष्य से भटक जाता है। कई बार साधक अपने को श्रेष्ठ व ज्येष्ठ बताने के अहंकार के भाव से ग्रसित हो जाने के कारण अपने से वरिष्ठों के प्रति उपेक्षा व अविवेकपूर्ण व्यवहार करता है। इस प्रकार से अमर्यादित व्यवहार से ऐसा साधक तिरस्कार का पात्र बन जाता है। इसलिए साधक जीवन में भी सदैव जागरूक रहकर मर्यादाओं का पालन करना आवश्यक है।

प्रकृति में भी हम मर्यादा के स्वरूप को स्पष्टतया देख सकते हैं। जब नदी मर्यादा में रहते हुए शांतभाव से बहती है, तो चारों ओर हरियाली व खुशहाली का सुन्दर वातावरण बना रहता है। यही नदी बाढ़ के ताण्डव से विनाशकारी बनकर सबकुछ बरबाद कर देती है। इसी प्रकार विशाल समुद्र जब अपनी मर्यादा भंग कर देता है, तो सुनामी जैसे विनाशकारी तूफान से जन-जीवन पूरी तरह से अस्त-व्यस्त हो जाता है। जब पृथ्वी अमर्यादित हो जाती है, तो ज्वालामुखी फटने और भूकंप के झटकों से चन्द मिनिटों में चारों ओर हाहाकार व तबाही मच जाती है। आसमान से भी जब अतिवृष्टि होती है, तो आंधी, तूफान व बाढ़ से कई क्षेत्रों में भारी नुकसान व जन-धन की हानि हो जाती है।

प्रकृति हो या मनुष्य का जीवन, सभी के लिए मर्यादा आवश्यक है। गृहस्थ जीवन में भी परिवार के सदस्यों में मर्यादापूर्ण व्यवहार होगा तो वहाँ शान्ति व सौहार्द का वातावरण

होगा। एक दूसरे के प्रति प्रेम, आदर व सहयोग की भावना ही परिवार की एकता का मूलमंत्र है। सामाजिक क्षेत्र में भी संगठन की सुदृढ़ता व एकता के लिए आपस में मर्यादित व्यवहार आवश्यक है। समाज व संघ के गौरव में अभिवृद्धि हेतु एक दूसरे के प्रति आदरभाव, वाणी की मधुरता व हृदय की सरलता का होना अति आवश्यक है।

जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में मर्यादापूर्ण व्यवहार से ही सुखद वातावरण का निर्माण हो सकेगा। प्रतिकूल परिस्थितियों में भी भाषा-संयम व विवेकपूर्ण व्यवहार अहंकार के अंधे कुंए में हमें गिरने से बचा लेता है। जीवन में हठाग्रह व दुराग्रह से प्रेरित हुए बिना विनयभाव से विवेक की आँखें खुली रखकर मर्यादित व्यवहार करेंगे तो जीवन में आनन्द व शान्ति की अनुभूति होगी। याद रहे! मर्यादा बंधन नहीं, अपितु सुखी व सुरक्षित जीवन जीने का राजमार्ग है।

-21, सुभाष चौक, इन्दौर-452001 (मध्यप्रदेश)

जीवन-बोध क्षणिकाएँ

श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी

सत्य

कर ले इस सत्य को स्वीकार,
त्राण नहीं देगा धन व परिवार।

सफल

सफल होता वही सज्जन,
जो करता समय का समायोजन।

आसक्ति

आसक्ति ही दुःख का मूल है,
आत्मा के लिए घातक त्रिशूल है।

अशरण

माता हो या भ्राता
ये नहीं बनेंगे त्राता,
अतः बन जाइए द्रष्टा व ज्ञाता।

आगम

'आ' मिटा ले सारे 'गम',
कहता है आगम।

लय

स्वरूप में लगा लय,
स्वतः होगा विकारों का विलय।

समता

समझ का सार है समता,
सुज्ञ तो इसी में रमता।

अन्तर का ज्ञान

आओ करें अन्तर का ज्ञान,
समझें आत्मा को तलवार,
और शरीर को म्यान।

चेतना

चेतना शक्ति का पूर्ण विकास,
अर्थात् सिद्धि में शाश्वत निवास।

स्पष्टता

निज दोषों को मत छुपाना,
वरना मुश्किल होगा
आत्म गुणों को छू पाना।

-संकलित

बाल-स्तम्भ

आप बीती घटना एवं जियो और जीने दो

बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित इस रचना को पढ़कर अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर 20 वर्ष की आयु तक के पाठक 15 सितम्बर 2015 तक जिनवाणी संपादकीय कार्यालय, सामायिक-स्वाध्याय भवन, कुम्हार छात्रावास के सामने, प्लॉट नं. 2, नेहरु पार्क, जोधपुर-342003(राज.) के पते पर प्रेषित करें। **उत्तर के साथ अपनी आयु तथा पूर्ण पते का भी उल्लेख करें।** श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को श्री महावीरचन्द जी बाफना, जोधपुर द्वारा अपनी धर्मपत्नी एवं श्रीमती अरुणा जी, श्री मनोजकुमार जी, श्री कमलेश कुमार जी बाफना की माताश्री स्व. श्रीमती मोहिनीदेवी जी बाफना की पुण्य-स्मृति में पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-500 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-300 रुपये, तृतीय पुरस्कार- 200 रुपये तथा 150 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार। पुरस्कार राशि सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल,जयपुर द्वारा भिजवाई जाती है।

आप बीती घटना

सुश्री हिमांशी कांकरिया

हम अपने पिता की दो संतान हैं। मैं छोटी बहन हिमांशी हूँ और मेरी बड़ी बहन सुनीता है। मेरी बड़ी बहन बहुत ही अच्छी और विनयशील है। वह सभी बड़ों का आदर करती है। सभी लोग उन्हें पसंद करते हैं। हम जहाँ पर जाते हैं सभी लोग सिर्फ उन्हीं की प्रशंसा करते हैं। जो भी काम उन्हें करने के लिए कहते हैं, वह तुरन्त ही कर देती है। लेकिन मेरा स्वभाव नकचढ़ा रहा। जो काम मुझसे कहा जाता, मैं तुरन्त ही मना कर देती। मैं अपनी दीदी से बिलकुल ही विपरीत थी। बात-बात पर गुस्सा करती तथा जो मुँह में आता वह बोल देती। उस समय मैं यह नहीं सोचती कि मेरे सामने कौन है। बस बोलती चली जाती और सभी का अनादर करती, लेकिन मेरी दीदी का स्वभाव बहुत अच्छा होने के कारण सब उन्हें पसंद करते। यह सब देखकर मुझे जलन होने लगी। मैं उनसे जलती थी कि सब उन्हें ही अच्छा क्यों बोलते हैं। आखिर मुझे क्यों नहीं? मेरा स्वभाव ऐसा क्यों? इस प्रश्न का उत्तर ढूंढ़ने के लिए मैंने कई प्रयास किये, लेकिन वे प्रयास व्यर्थ गये।

एक दिन हम दोनों किसी सहेली के घर गए। सहेली की माँ बीमार थी और वह भी घर पर नहीं थी। फिर क्या, मेरी दीदी उनकी सेवा में लग गई और उनका सारा काम कर दिया, लेकिन मैंने कुछ नहीं किया। बस उन्हें देखती रह गई। फिर उन्होंने दीदी को आशीर्वाद और प्यार दिया। दीदी ने उनका दिल जीत लिया। यह सब देखकर मेरे मन में एक ज्योत जगी

तथा मैंने ठान लिया कि मैं उनकी जैसी बनकर रहूँगी तथा मैंने अपने स्वभाव को निर्मल बनाने और अपने दीदी के जैसे बनने की कोशिश की और मैं उसमें कामयाब हुई। मेरा यह स्वभाव देखकर सब आश्चर्यचकित रह गए। मुझे यह सब देखकर अपने आप में खुशी होने लगी और मेरी ईर्ष्या भावना वहीं समाप्त हो गई। कहा गया है-

''भलाई दूसरों की करो, अपनी भलाई स्वयं हो जाती है।
और सुधारो अपने को तो, पूरी कायनात सुधर जाती है।।''

-सुपुत्री श्री भंवरलालजी कांकरिया, गणेश चौक, सांवा की गली, नागौर (राज.)

(2) जियो और जीने दो

डॉ. दिलीप धींग

इस जगती में सबसे ऊँचा धर्म अहिंसा प्यारा है।
'जियो और जीने दो' यह, मानवता का नारा है।।

सुख चाहते हम, लगती हमको, जैसे प्यारी अपनी जान।
वैसे ही हर जीव को लगती, बेहद प्यारी अपनी जान।
अत: किसी को मत मारो तुम, सन्तों ने पुकारा है।
'जियो और जीने दो' यह, मानवता का नारा है।।1।।

बुरा काम है मार डालना, और बचाना अच्छा काम।
आओ! अच्छा काम करें हम, और कमाएँ जग में नाम।
राह अहिंसा चलने वालों से जग में उजियारा है।
'जियो और जीने दो' यह, मानवता का नारा है।।2।।

महापुरुष कहते-समझाते, पशु-पक्षी हैं सच्चे दोस्त।
दोस्त से दोस्ती निभाओ, इंसां हो, मत खाओ गोश्त।
रिश्ता मूक बचाओ इसमें, धड़क रहा जहां सारा है।
'जियो और जीने दो' यह, मानवता का नारा है।।3।।

खोल दिये हैं बूचड़खाने, बेकसूर का खूं बहता है।
बेबस जानवरों की हत्या, बर्बरता है, कायरता है।
इन जीवों की हत्याओं से बढ़ता दु:ख अंधियारा है।
'जियो और जीने दो' यह, मानवता का नारा है।।4।।

सुनो चीख कटते पशुओं की, देखो हृदयविदारक तड़पन!
महसूस करो वह अनन्त पीड़ा, फिर थम जातीं साँसें-धड़कन!

जिसने इन जीवों को मारा, उसने खुद को भी मारा है।
'जियो और जीने दो' यह, मानवता का नारा है।।5।।

भोले-भाले सुन्दर-सुन्दर, जीव धरा के भूषण हैं।
वन-उपवन आबाद हैं इनसे, हरते कष्ट-प्रदूषण हैं।
जीवों की त्रिकाल महत्ता, को सबने स्वीकारा है।
'जियो और जीने दो' यह, मानवता का नारा है।।6।।

शांति का पैगाम अहिंसा, समता का संगान अहिंसा।
जीने की सर्वोच्च कला यह, जीवन का विज्ञान अहिंसा।
जिसने तत्त्व अहिंसा समझा, उसने सत्य विचारा है।
'जियो और जीने दो' यह, मानवता का नारा है।।8।।

जहाँ अहिंसा वहाँ हमेशा, ढेरों खुशियाँ आती हैं।
हिंसा सब पापों की जननी, जग में प्रलय मचाती है।
सत्य अहिंसा फूल सुगंधित, हिंसा जलता अंगारा है।
'जियो और जीने दो' यह, मानवता का नारा है।।7।।

मारकाट हिंसा-हत्या के, छोड़ो सारे क्रूर रिवाज़।
बन सको तो बनो साथियों, मूक प्राणियों की आवाज़।
जब-जब हुई उपेक्षा इनकी, तब-तब मानव हारा है।
'जियो और जीने दो' यह, मानवता का नारा है।।9।।

कभी किसी को नहीं सताएँ, सदा गीत प्रेम के गाएँ।
खुद की, जीव जगत की खातिर, शाकाहार करें-करवाएँ।
छोटा-सा संकल्प हमारा, सबका बड़ा सहारा है।
'जियो और जीने दो' यह, मानवता का नारा है।।10।।

-अन्तरराष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन व शोध केन्द्र,
सुगन हाउस, 18, रामानुजा अय्यर स्ट्रीट, साहुकारपेट, चेन्नई-600079 (तमिलनाडू)

प्रश्नः-

1. सुनीता को लोग क्यों पसन्द करते थे?
2. शब्दों को शुद्ध कीजिए- आर्शीवाद, वीनयशील, सकंल्प, कानयात, इर्ष्या, कोशीश, विपरित, बहोत, अंहिसा, निमर्ल।
3. 'जियो और जीने दो' का संदेश किसने दिया? (कविता में उत्तर नहीं है।)
4. धरा के भूषण कौन हैं?
5. जीवन का विज्ञान क्या है?

6. प्रस्तुत कविता से क्या शिक्षा मिली? (कोई पाँच शिक्षाएँ लिखें)

बाल-स्तम्भ [जून-2015] का परिणाम

जिनवाणी के जून-2015 के अंक में बाल-स्तम्भ के अंतर्गत 'ब्रह्म मुहूर्त्त में उठिए' और 'मैं हूँ निडर साहसी बालक' के प्रश्नों के उत्तर 37 बालक-बालिकाओं से प्राप्त हुए। पूर्णांक 30 हैं।

पुरस्कार एवं राशि	नाम	अंक
प्रथम पुरस्कार-500/-	अर्पित जैन-जोधपुर (राज.)	27.5
द्वितीय पुरस्कार-300/-	लक्की कांकरिया-दौडबालापुर (कर्नाटक)	26
तृतीय पुरस्कार- 200/-	भूमि सिंघवी-जोधपुर (राज.)	25.5
सान्त्वना पुरस्कार- 150/-	मयंक जैन-सवाईमाधोपुर (राज.)	25
	ऋषभ चौपड़ा-जोधपुर (राज.)	24.5
	आर.टी. जैन-भुसावल (महा.)	24
	वैभव जैन-हिण्डौनसिटी (राज.)	22.5
	प्रीतम रांका-भीलवाड़ा(राज.)	22.5

करें क्षमायाचना

श्री दिलीप गाँधी

अहं भूल खुश रहो, कर थोड़ा उपकार।
दुःख से बचने का यही, एक मात्र उपचार।।
गुस्सा, नफरत छोड़ दे, करे ना तिरस्कार।
तन-मन-नित स्वस्थ रहे, सुख का यही आधार।।
आपसी रंजिश भूल, रिश्ते नये रचा।
'मिच्छामि दुक्कडं' कहो, जीवन दो सजा।।
माफ करना सीखिए, भूल दोष इंसान।
धन-दौलत ये कुछ नहीं, जब हो क्षमादान।।
अक्षम्य कोई जुर्म नहीं, विवेक की है बात।
त्याग-समन्वय संग चले तो, मिट जाये आघात।।
संवत्सरी पर्व पर, माँगें क्षमा का दान।
'क्षमा वीरस्य भूषणं' मान ले तू नादान।।
दिल दुःखाया हो यदि, दी कोई यातना।
भूल करें ना फिर कभी, करें क्षमा-याचना।।

-117, कैलाशपुरी, निम्बाहेड़ा रोड़, चित्तौड़गढ़ (राज.)

स्वास्थ्य-विज्ञान

प्रभावशाली चुम्बकीय चिकित्सा (2)

डॉ. चंचलमल चोरडिया

(गतांक से आगे)

चुम्बकीय उपचार की मुख्य तीन विधियाँ

हमारे शरीर के चारों ओर चुम्बकीय प्रभाव क्षेत्र होता है, जिसे आभा मण्डल भी कहते हैं। प्राय: दाहिने हाथ से हम अधिक कार्य करते हैं। अत: दाहिने भाग में दक्षिणी ध्रुव के गुण वाली ऊर्जा तथा बांये भाग में उत्तरी ध्रुव के गुण वाली ऊर्जा का प्राय: अधिक प्रभाव होता है। अत: चुम्बकीय ऊर्जा के संतुलन हेतु बायीं तरफ दक्षिणी ध्रुव एवं दाहिनी तरफ चुम्बक के उत्तरी ध्रुव का स्पर्श करने से बहुत लाभ होता है। शरीर के चुम्बक का चुम्बक उपकरण से आकर्षण होने लगता है और शरीर में चुम्बकीय ऊर्जा का संतुलन होने लगता है। परन्तु यह सिद्धान्त सदैव सभी परिस्थितियों में विशेषकर रोगावस्था में पूर्ण रूप से लागू हो, आवश्यक नहीं। स्थानीय रोगों में आवश्यकतानुसार चुम्बकों का स्पर्श भी करना पड़ता है। उपचार करते समय दक्षिण ध्रुव को घड़ी की दिशा में एवं उत्तरी ध्रुव को घड़ी की उल्टी दिशा में घुमाने से उपचार और अधिक प्रभावशाली हो जाता है। चुम्बकीय उपचार की निम्नलिखित तीन मुख्य विधियाँ होती हैं-

1. रोगग्रस्त अंग पर आवश्यकतानुसार चुम्बक का स्पर्श करने से, चुम्बकीय ऊर्जा उस क्षेत्र में संतुलित की जा सकती है। स्थानीय रोगों, दर्द आदि में इससे काफी राहत मिलती है।
2. एक्यूप्रेशर की रिफ्लेक्सोलॉजी एवं सुजोक के सिद्धान्तानुसार शरीर की सभी नाड़ियों के अंतिम सिरे दोनों हथेली एवं दोनों पगथली के आसपास होते हैं। इन क्षेत्रों को चुम्बकीय प्रभाव क्षेत्र में रखने से वहाँ पर जमे विजातीय पदार्थ दूर हो जाते हैं तथा रक्त एवं प्राण ऊर्जा का शरीर में प्रवाह संतुलित होने लगता है, जिससे रोग दूर हो जाते हैं। इस विधि के अनुसार दोनों हथेली एवं दोनों पगथली के नीचे चुम्बक का स्पर्श कराया जाता है। शरीर में नाभि के ऊपर के भागों के रोगों के उपचार हेतु दाहिनी हथेली के नीचे चुम्बक का उत्तरी ध्रुव एवं बायीं हथेली के नीचे चुम्बक का दक्षिणी ध्रुव स्पर्श करना चाहिए। शरीर में नाभि के नीचे के रोगों में उपचार हेतु पैर के दायें तलवे के नीचे चुम्बक का उत्तरी ध्रुव तथा बायें तलवे के नीचे चुम्बक का दक्षिणी ध्रुव स्पर्श करना

चाहिए। चुम्बक अथवा हथेली या पगथली में जहाँ चुम्बक का स्पर्श हो रहा है, उस स्थान को हिलाते रहने से चुम्बक का प्रभाव बढ़ जाता है।

3. चुम्बकीय प्रभाव क्षेत्र में जल,किसी पदार्थ अथवा द्रव्य, तरल पदार्थों को रखने से उसमें चुम्बकीय गुण शीघ्र प्रकट होने लगते हैं, जैसे- जल, दूध, तेल,शिवाम्बु, पेय, सूर्य तप्त पानी की दवा आदि तरल पदार्थों में चुम्बकीय ऊर्जा का प्रभाव बढ़ाकर उपयोग करने से काफी लाभ पहुँचता है।

चुम्बकीय जल का उपयोग

चुम्बकीय क्षेत्र के प्रभाव से जल के अनेक भौतिक एवं रासायनिक गुणों में परिवर्तन होने लगता है। जैसे तापमान, घनत्व, विद्युत् प्रवाह की क्षमता, गाढ़ापन आदि। ऐसा पानी पीने से रक्त संचार सुधरता है, रक्त में हिमोग्लोबिन का उचित स्तर बना रहता है। जिससे रक्त वाहिनियों में अनावश्यक केल्शियम और कॉलेस्ट्रोल जमा नहीं होता एवं हृदय की कार्य क्षमता नियमित होने लगती है। अम्ल एवं पित्त का संतुलन बना रहता है। फलतः पाचन तंत्र बराबर कार्य करने लगता है। चुम्बकीय पानी पीने से माहवारी नियमित होने लगती है। शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ने लगती है। साथ ही स्नायुओं का तनाव दूर होने लगता है जो वर्तमान में बुद्धिजीवियों, प्रशासनिक अधिकारियों, प्रबन्धकों, परीक्षार्थियों आदि की समस्याओं का समाधान करता है। नियमित ऐसा पानी पीने से उनकी थकान दूर होती है, तनाव कम होता है, उनका मनोबल बढ़ता है, सोच सकारात्मक होती है। आवेग मंद हो जाते हैं, गुर्दे की पथरी को निकालने में भी यह जल बहुत लाभकारी होता है। चुम्बक के पानी से घाव साफ करने पर वे जल्दी ठीक होते हैं।

शक्तिशाली चुम्बकों के सम्पर्क में आने से थोड़े समय में ही पानी में चुम्बकीय गुण आने लगते हैं। जितनी देर उसको चुम्बकीय प्रभाव में रखा जाता है, चुम्बक हटाने के पश्चात् लगभग उतने लम्बे समय तक उसमें चुम्बकीय प्रभाव रहता है। प्रारम्भ के 10-15 मिनटों में ही 60 से 70 प्रतिशत चुम्बकीय प्रभाव आ जाता है। परन्तु पूर्ण प्रभावित करने के लिये पानी को शक्तिशाली चुम्बकों के प्रभाव में कम से कम 6 से 8 घंटे तक रखना पड़ता है। चुम्बक को हटाने के पश्चात् धीरे-धीरे उस जल में चुम्बकीय प्रभाव क्षीण होता जाता है। चुम्बकीय जल बनाने के लिये पानी को स्वच्छ कांच की गिलास अथवा बोतलों में भरकर लकड़ी के पट्टे पर शक्तिशाली चुम्बकों के ऊपर रख दिया जाता है। 8-10 घंटे चुम्बकीय क्षेत्र में रहने से उस पानी में चुम्बकीय गुण आ जाते हैं। उत्तरी ध्रुव के सम्पर्क वाला उत्तरी ध्रुव का पानी तथा दक्षिणी ध्रुव के सम्पर्क वाला दक्षिणी ध्रुव के गुणों वाला पानी बन जाता है। दोनों के संपर्क में रखने से जो पानी बनता है उसमें दोनों ध्रुवों के गुण आ जाते हैं। पानी में चुम्बकीय

ऊर्जा का संग्रहण पानी की मात्रा एवं चुम्बकीय क्षेत्र के घनत्व पर निर्भर करता है। तांबे के बर्तन में दक्षिणी ध्रुव (South Pole) तथा चांदी के बर्तन में उत्तरी ध्रुव (North Pole) द्वारा ऊर्जा प्राप्त पानी अधिक प्रभावशाली एवं गुणकारी होता है। चुम्बक में मानव शरीर के सारे हानिकारक द्रवों को निकालने की क्षमता होती है। इस कारण सभी प्रकार की सूजन और अन्त:स्रावी ग्रन्थियों के स्रावों से संबंधित रोगों में चुम्बकीय उपचार अत्यधिक प्रभावशाली होता है। चुम्बकीय पानी पीने से गुर्दे की पथरी मूत्र के साथ निकल जाती है।

चुम्बक के अन्य उपचारों के साथ आवश्यकतानुसार चुम्बकीय पानी पीने से उपचार की प्रभावशालिता बढ़ जाती है। चुम्बकीय जल की भांति यदि दूध को भी चंद मिनट तक चुम्बकीय प्रभाव वाले क्षेत्र में रखा जाये तो, वह शक्तिवर्द्धक बन जाता है। दक्षिणी ध्रुव से प्रभावित दूध विकसित होते हुए बच्चों के लिये लाभप्रद होता है। दोनों ध्रुवों से प्रभावित दूध शक्तिवर्धक होता है। इसी प्रकार किसी भी तेल को 45 से 60 दिन चुम्बकीय क्षेत्र में लगातार रखने से उसकी ताकत बढ़ जाती है। ऐसा तेल बालों में इस्तेमाल करने से बालों संबंधी रोग जैसे गंजापन, समय से पूर्व सफेद होना ठीक होते हैं। दोनों ध्रुवों से प्रभावित तेल बालों की सभी विसंगतियां दूर करता है। चुम्बकीय तेल की मालिश भी साधरण तेल से ज्यादा प्रभावकारी होती है। जितने लम्बे समय तक तेल को चुम्बकीय प्रभाव क्षेत्र में रखा जाता है, उतनी लम्बी अवधि तक उसमें चुम्बकीय गुण रहते हैं। थोड़े-थोड़े समय पश्चात् पुन: थोड़े समय के लिये चुम्बकीय क्षेत्र में ऐसा तेल रखने से उसकी शक्ति पुन: बढ़ायी जा सकती है। जोड़ों के दर्द में ऐसे तेल की मालिश अत्यधिक लाभप्रद होती है। सिर पर लगाने अथवा मानसिक रोगों के लिये चुम्बकीय ऊर्जा के उत्तरी ध्रुव से ऊर्जित नारियल का तेल तथा जोड़ों के दर्द हेतु सूर्यमुखी, सरसों अथवा तिल्ली का दक्षिणी ध्रुव से ऊर्जित चुम्बकीय तेल अधिक गुणकारी होता है। चुम्बक ऊर्जित स्वमूत्र सेवन से शिवाम्बु चिकित्सा का प्रभाव अत्यधिक प्रभावशाली होने लगता है।

चुम्बकीय चिकित्सा के प्रभावशाली प्रयोग

सामान्यतया चुम्बक चिकित्सा करते समय रोग में वृद्धि नहीं होती, परन्तु प्रारम्भ में यदि पीड़ा कुछ बढ़ जाए तो, उसका कारण यह हो सकता है कि चुम्बक पीड़ा को दूर करने के लिये, विकारों को शरीर से बाहर निकाल रहा है। पीड़ा पुन: थोड़े समय पश्चात् स्वत: कम हो जाती है और उसको घटाने के लिये किसी अलग उपचार की आवश्यकता नहीं होती। चुम्बकीय उपचार करते समय इस बात का ध्यान रहे कि रोगी को सिर में भारीपन न लगे, चक्कर आदि न आए। ऐसी स्थिति में तुरन्त चुम्बक हटाकर धरती पर नंगे पैर घूमना चाहिये अथवा एल्यूमिनियम या जस्ते पर खड़े रहने अथवा स्पर्श करने से शरीर में से चुम्बक

चिकित्सा द्वारा किया गया अतिरिक्त चुम्बकीय प्रभाव कम हो जाता है। रक्त के अधिक दबाव वाले रोगियों को चुम्बक चिकित्सा का समय धीरे-धीरे बढ़ाना चाहिये। दाहिनी हथेली के नीचे और गले के दाहिने भाग में धड़कन वाले स्थान पर उत्तरी ध्रुव स्पर्श करने से उच्च रक्तचाप तुरन्त कम होने लगता है। यदि इस चुम्बक को किसी तेज गति वाले वाइब्रेटर में लगाकर उपचार किया जाये तो चन्द मिनटों में उच्च रक्त चाप साधारण हो जाता है। एक्यूप्रेशर के प्रतिवेदन बिन्दुओं पर चुम्बक स्पर्श करने से शरीर में उस स्थान पर जमे विजातीय तत्त्व दूर होने लगते हैं एवं प्राण ऊर्जा का प्रवाह बराबर होने से रोग से मुक्ति मिलती है। सुजोक बियोल मेरिडियन चिकित्सा में इसी सिद्धान्तानुसार उपचार किया जाता है।

पेन्क्रियाज पर चुम्बक का दक्षिणी ध्रुव लगाने से पेन्क्रियाज सक्रिय हो जाता है, और मधुमेह के रोगियों को दवा और इंजेक्शन के माध्यम से इंसुलिन की आवश्यकता कम की जा सकती है। चुम्बक अत्यधिक प्रभावशाली दर्दनाशक होता है। दर्द वाले भाग पर उत्तरी ध्रुव को स्पर्श करते हुए Anti clockwise घुमाने से तुरन्त लाभ मिलता है। चुम्बक का स्पर्श करने से शरीर की हीलिंग क्षमता बहुत बढ़ जाती है। शरीर के कमजोर अंग-उपांगों पर दक्षिणी ध्रुव को स्पर्श करने से उन अंगों की कार्य क्षमता बढ़ने लगती है।

नाभि पर उच्च शक्ति के चुम्बक के दक्षिणी ध्रुव को रोगी के Clockwise (घड़ी की सीधी दिशा में) 5-10 मिनट घुमाने से कब्ज़ दूर हो जाती है। इसी प्रकार चुम्बक के उत्तरी ध्रुव को Anti Clock wise (घड़ी की उल्टी दिशा में) घुमाने से दस्त में तुरन्त राहत मिलती है। जलन अथवा खुजली वाले स्थान पर चुम्बक का उत्तरी ध्रुव फेरने से शीघ्र आराम मिलता है। हाथ और पैर संबंधी रोगों में हृदय की दिशा में चुम्बक का आवश्यकतानुसार मसाज करने से रक्त में आया अवरोध दूर होने से उपचार अधिक सक्रिय हो जाता है। जैसे साइटिका के रोगियों को उत्तरी ध्रुव का मसाज करना चाहिए, जबकि लकवे (पक्षाघात) के रोगी को दक्षिणी ध्रुव का मसाज करना चाहिये। यदि शरीर के किसी भाग में गांठ हो गई हो तो, वहां स्थायी चुम्बक के उत्तरी और दक्षिणी ध्रुव को बारी-बारी में स्पर्श द्वारा उपचार करने से गांठ का फैलाव और संकोचन होने लगता है और धीरे-धीरे वह गांठ बिखर जाती है।

मेरुदण्ड के उपचार हेतु मेरुदण्ड पर नीचे की तरफ चुम्बक का दक्षिणी ध्रुव तथा ऊपर उत्तरी ध्रुव लगाना चाहिए। दक्षिणी ध्रुव पर सीधी कमर बैठने से मूलाधार चक्र सक्रिय होता है। मल द्वार की मांसपेशियाँ सक्रिय होती हैं और कब्ज़ दूर होती है।

चन्द असाध्य रोगों में चुम्बकीय उपचार

कैन्सर का उपचार

सामान्य रूप से स्वस्थ व्यक्ति की सभी कोशिकाएँ एक विशेष अन्तराल पर गति

करती हैं, लेकिन कैन्सर की कोशिकाओं की गति अत्यधिक बढ़ जाती है। चुम्बकीय उत्तरी ध्रुव के उपचार से उसे सामान्य स्थिति में लाया जा सकता है। अमेरिका के डॉ. मैकलीन ने सैकड़ों कैंसर के रोगियों का उपचार करने के पश्चात् अपना अभिमत देते हुए स्पष्ट कहा– ''शक्तिशाली चुम्बकीय क्षेत्र में कैंसर के सेल विकसित नहीं हो सकते और जो पहले से शरीर में उपस्थित हैं, वे दूर होने लगते हैं।''। जितना शक्तिशाली चुम्बक होगा उपचार उतना ही अधिक प्रभावशाली होगा। विदेशों में इस हेतु विशेष प्रकार के शक्तिशाली चुम्बकों का निर्माण हो रहा है।

जोड़ों का उपचार

चुम्बक का प्रभाव हड्डी जैसे कठोरतम भाग को पार कर सकता है, अतः हड्डी सम्बन्धी दर्द निवारण में चुम्बकीय चिकित्सा रामबाण के तुल्य सिद्ध होती है। विशेषकर दर्द दूर करने एवं फ्रेक्चर के पश्चात् हड्डियों को पुनः जल्दी जोड़ने में अत्यधिक प्रभावशाली है। घुटनों में शल्य चिकित्सा की आवश्यकता नहीं होती। हड्डियों के जुड़ने के समय में कमी आ जाती है।

रक्तस्राव सम्बन्धी रोग

महिलाओं के मोनोपॉज की अवस्था में रक्तस्राव अनियन्त्रित होने लगता है। परिणामस्वरूप उन्हें शल्य चिकित्सा द्वारा गर्भाशय निकालने का परामर्श दिया जाता है। परिणामस्वरूप भविष्य में हारमोन्स असंतुलन के कारण अनेक समस्याएँ उत्पन्न होने की संभावना रहती है। यदि ऐसी स्थिति में महिलाएँ रक्तस्राव प्रारम्भ होते ही अपने दोनों पेडुओं पर शक्तिशाली उत्तरी ध्रुव का उपचार करे तो समस्या से चन्द दिनों में ही समाधान मिल सकता है। इसी प्रकार जिनके माहवारी समय से पूर्व होती हो तो दोनों पेडुओं पर उत्तरी ध्रुव लगाकर उपचार करना चाहिए। अगर माहवारी देर से होती है तो दोनों पेडुओं पर दक्षिणी ध्रुव का स्पर्श कर उपचार करना चाहिए।

चुम्बकीय चिकित्सा के अनुभूत प्रयोग

मेरे 1990 में ट्रक से दुर्घटना होने पर चेहरे की दो हड्डियों में फ्रेक्चर हो गया। अहमदाबाद में शल्य चिकित्सा के पश्चात् जबड़े पर 26 टांके आए। तीन दिनों के बाद डॉक्टर ने अस्पताल से छुट्टी देते हुए 45 दिनों तक आवश्यक दवा लेते रहने के पश्चात् टांके खुलवाने हेतु पुनः वापस आने का परामर्श दिया। मैंने डॉक्टर से दवा का कारण एवं अन्य जिज्ञासाएँ रखीं, जिसका मुझे संतोषप्रद समाधान नहीं मिला। फलतः मैंने परिजनों के विरोध के बावजूद दवा लेना उचित नहीं समझा। अपना उपचार 15 से 20 दिनों में बिना दवा मात्र चुम्बकीय चिकित्सा की सामान्य जानकारी होते हुए भी करने में पूर्ण सफलता प्राप्त की।

2 अप्रेल 1991 को मेरे दायें पैर की हिप्सबोन पर स्कूटर दुर्घटना के कारण लगभग दो

इंच की दरार पड़ गई तथा मुझे असहनीय वेदना होने लगी। डॉक्टरों ने कम से कम 21 दिनों तक बिना हलन-चलन आराम करने का परामर्श दिया। परन्तु चुम्बकों के निरन्तर प्रयोग से बिना दवा पीड़ा तुरन्त शान्त होने लगी। मात्र 4-5 दिनों में ही मैंने अपना उपचार स्वयं कर नियमित कार्य करना प्रारम्भ कर दिया। जीवन की इन दोनों घटनाओं के कारण ही मैंने अपने इंजीनियरिंग व्यवसाय से निवृत्ति ले, स्वावलम्बी, प्रभावशाली, अहिंसात्मक चिकित्सा पद्धतियों के प्रति जनसाधारण में सजगता पैदा करने का मानस बनाया।

मेरी माताजी के पक्षाघात एवं मेरे हृदयाघात के समय भी चुम्बकीय उपचार के चमत्कारिक प्रभाव का मुझे सुखद अनुभव हुआ।

स्वास्थ्य मंत्रालय से अपेक्षाएँ

सारांश यही है कि चुम्बक अपने प्रभाव क्षेत्र में चुम्बकीय क्षेत्र बना लेता है, जिसका प्रभाव सभी चेतनाशील प्राणियों पर विशेष रूप से पड़ता है, फिर चाहे मनुष्य हो, पशु हो या पेड़-पौधे आदि। यदि चुम्बक का उपयोग रोगों के रोकथाम एवं उपचार में किया जाए तो सभी जीवों का जीवनकाल बढ़ जाने की बहुत अधिक संभावना रहती है। जिन-जिन देशों में चुम्बकीय चिकित्सा का तीव्र गति से विकास हो रहा है, वहाँ के वैज्ञानिकों, चिकित्सकों से स्वास्थ्य मंत्रालय सम्पर्क करे, उनकी शोधों का अध्ययन करे एवं भारत में इस चिकित्सा पद्धति की क्रियान्विति की योजना बना व्यवस्थित कार्यक्रम बनाये तब ही इस पद्धति के प्रति अज्ञानतावश फैली निराधार शंकायें दूर हो सकेंगी। इस सहज, सरल, निरापद, सस्ती, प्रभावशाली अहिंसक चिकित्सा पद्धति के प्रति जन साधारण का विश्वास बढ़ सकेगा एवं चुम्बकीय चिकित्सा जन-साधारण में लोकप्रिय बन सकेगी। चिकित्सा पद्धतियों में आपसी सामंजस्य, विचार-विमर्श एवं जन-जागरण से ही पीड़ित मानव समाज रोगमुक्त बन सकता है।

चुम्बक चिकित्सा के बारे में मेरा व्यक्तिगत अनुभव

स्वयं द्वारा चुम्बक का उपचार करते समय मात्र इस बात की सजगता आवश्यक है कि हृदय एवं मस्तिष्क जैसे संवेदनशील भागों पर यथासंभव प्रारम्भ में उच्च शक्ति के चुम्बकों का प्रयोग न किया जाए, उपचार की अवधि धीरे-धीरे बढ़ाएं तथा उपचार उतना ही करें, जिससे सिर में भारीपन न बढ़े। उपचार करते समय यदि गलती से चुम्बक का सही चयन न हो अथवा आवश्यकता से अधिक समय तक उपचार किया जाए तो सिर में भारीपन होना प्रारम्भ होने लगता है। ऐसे समय नंगें पांव चलने अथवा एल्युमीनियम/ जस्ते धातु का स्पर्श कर लें तो सिर का भारीपन दूर हो जाता है।

चुम्बक चिकित्सा के उपचार एवं अन्तराल की अवधि के सम्बन्ध में विभिन्न चिकित्सकों का अलग-अलग अभिमत है। अधिकांश चुम्बकीय चिकित्सा पद्धतियों की

पुस्तकों में उपचार हेतु चुम्बकों को चन्द मिनटों तक दिन में एक या दो बार से अधिक स्पर्श करने का निषेध बताया गया है। 25 वर्ष के व्यक्तिगत अनुभव के आधार पर मैं दृढ़तापूर्वक कह सकता हूँ कि असाध्य एवं पुराने रोगों में तो चुम्बक का उपचार अपनी अनुकूलतानुसार बार-बार एवं अधिक समय तक पूर्ण करना चाहिए। उपचार न करने से अपेक्षित स्थायी लाभ नहीं मिलता, अपितु उपचार राहत तक ही सीमित हो सकता है। मैंने चुम्बकों का प्रयोग रोग की अवस्था में स्वयं पर बार-बार लम्बे समय तक किया है एवं अनेक रोगियों से भी करवाया है। जिसका कोई प्रत्यक्ष दुष्प्रभाव आज तक ध्यान में नहीं आया एवं बहुत कम समय में ही अपेक्षित परिणाम प्राप्त हुए। पूर्ण उपचार न करने से चुम्बकीय उपचार की भी अवधि बढ़ जाती है और उसकी प्रभावशालिता के सारे दावे खोखले लगने लगते हैं। कहने का आशय यह है कि चुम्बक आपका विश्वसनीय डॉक्टर एवं दवा है। जो इसका विधिवत् प्रयोग करने लगते हैं, वे स्वयं के लिए रोगों का सुरक्षा कवच बना लेते हैं। अब हमको ही निर्णय करना होगा कि- "हम चुम्बक का सही उपयोग कर स्वस्थ रहें या उपेक्षा करके रोगी"।

-चोरडिया भवन, जालोरी गेट के बाहर, जोधपुर-342003 (राज.)

E-mail: cmchordia.jodhpur@gmail.com, Website: www.chordiahealthzone.in

स्वास्थ्य-आलेख प्रश्नोत्तर प्रतियोगिता

जिनवाणी के इस अंक में प्रकाशित 'स्वास्थ्य-विज्ञान' स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित उपर्युक्त आलेख पर कुछ प्रश्न दिए जा रहे हैं, आप इनका उत्तर **15 सितम्बर 2015** तक डॉ चंचलमल जी चोरडिया के उपर्युक्त पते पर अपने फोन नं., ई-मेल एवं डाक पते सहित सीधे प्रेषित कर सकते हैं। विलम्ब से प्राप्त उत्तरों को प्रतियोगिता में सम्मिलित नहीं किया जाएगा। इस प्रतियोगिता में किसी भी वय का व्यक्ति भाग ले सकता है। सर्वाधिक अंक प्राप्तकर्ताओं को प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार के अन्तर्गत 1000/-, 750/- एवं 500/- की राशि प्रेषित की जाएगी।

प्रश्न:-

1. चुम्बकीय चिकित्सा में अन्य चिकित्सा पद्धतियों की अपेक्षा क्या विशेषताएँ हैं?
2. चुम्बक चिकित्सा से रोग क्यों और कैसे ठीक होते हैं?
3. चुम्बकीय जल की क्या विशेषताएँ होती हैं?
4. शक्तिशाली चुम्बकीय क्षेत्र में कैन्सर का रोग क्यों विकसित नहीं हो सकता?
5. हड्डियों एवं जोड़ों के रोगों में चुम्बकीय चिकित्सा क्यों प्रभावशाली होती है?
6. क्या स्वास्थ्य मंत्रालय स्वास्थ्य के प्रति सजग है? आपकी मंत्रालय से क्या अपेक्षाएँ हैं?
7. चुम्बकीय चिकित्सा के बारे में आपकी क्या धारणाएँ हैं?

कविता

जाना किधर है हमको और कहाँ जा रहे हैं?

श्री मोहन कोठारी 'विनर'

जाना किधर है हमको और कहाँ जा रहे हैं?
ऊँचा मिला है जीवन, नहीं समझ पा रहे हैं।
जाना किधर है हमको.....।।टेर।।

विषयों की बस्तियों में, भटकता है जीवन,
भौतिकता को, कर दिया है अर्पण।
हीरा सा जीवन-2 यूं ही लुटा रहे हैं,
जाना किधर है हमको.....।।1।।

आसान नहीं है प्यारे, मंज़िल को पाना,
आत्मा की कीमत को, नहीं हमने जाना।
नहीं चैन जीवन में-2 दुःख पा रहे हैं,
जाना किधर है हमको.....।।2।।

ज्ञानियों की बातों को, हमने भूलाया,
साधना की राह पर, नहीं कदम बढ़ाया।
अज़नबी हैं खुद से-2 नहीं समझ पा रहे हैं,
जाना किधर है हमको.....।।3।।

तप-त्याग से अपना, बहुत दूर जीवन,
महकेगा कैसे, खुशियों का गुलशन।
कांटों से डर कर-2, नहीं खिल पा रहे हैं,
जाना किधर है हमको.....।।4।।

शासन यह ऊँचा, लो हमने पाया,
बात समझ आई तो हृदय जगाया।
धर्म साधना से-2, मन सजा रहे हैं,
जाना किधर है हमको.....।।5।।

-जनता साड़ी सेण्टर, स्टेशन रोड़, दुर्ग-491001 (छत्तीसगढ़)

युवक परिषद्

आओ स्वाध्याय करें (षष्ठ प्रतियोगिता)

भगवान महावीर सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् के तत्त्वावधान में 'आओ स्वाध्याय करें' शीर्षक से 'द्विमासिक आगम प्रश्नोत्तरी' प्रतियोगिता इस बार 'भगवान महावीर' की जीवनी पर आधारित है, जिसमें सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'भगवान महावीर' की सहायता ली जा सकती है। प्रतियोगिता का स्वरूप इस प्रकार है-

1. इस प्रतियोगिता का आयोजन पाँच संभागों के आधार पर किया जाएगा- 1. पल्लीवाल क्षेत्र, दिल्ली, पंजाब क्षेत्र, 2. मारवाड़, गुजरात क्षेत्र, 3. कर्नाटक, तमिलनाडु, आंध्रप्रदेश क्षेत्र, 4. जयपुर, पोरवाल क्षेत्र, मध्यप्रदेश क्षेत्र, 5. महाराष्ट्र एवं अन्य क्षेत्र।
2. प्रत्येक संभाग में 15-45 वर्ष तक एवं 45 वर्ष से अधिक के दो आयु वर्ग के ग्रुप रहेंगे, जिनमें प्रत्येक ग्रुप में प्रथम विजेता को- 1100/- रुपये, द्वितीय को- 500/- रुपये, तृतीय को-250/- रुपये की प्रोत्साहन राशि दी जाएगी।
3. इस प्रतियोगिता में कम से कम एक व्यक्ति एवं अधिकाधिक पाँच व्यक्तियों तक का ग्रुप भाग ले सकता है। प्रत्येक व्यक्ति अथवा ग्रुप होने पर ग्रुप के प्रत्येक सदस्य का नाम एवं आयु का उल्लेख अपने उत्तर पत्रक के साथ करना आवश्यक है।

आशा है आप इसमें पूर्ण उत्साह से भाग लेकर अपने आगम-ज्ञान का वर्धन करेंगे। उत्तर-पत्रक प्राप्त होने की अंतिम तिथि 5 नवम्बर, 2015 है।

पुस्तक-प्राप्ति का पता- श्री सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, दुकान नं. 182-183 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.), फोन : 0141-2575997, फैक्स-0141-2570753

उत्तर भेजने का पता- श्री अनिल जी, कार्यालय प्रभारी, अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद्, घोड़ों का चौक, वर्द्धमान अस्पताल के पीछे, जोधपुर-342001 (राज.) मोबाइल नं. 094141-40373

प्रश्न-पत्र सम्बन्धी समस्या के समाधान हेतु सम्पर्क सूत्र- श्री राजीव जी नाहर, सूरत-093751-65765

विशेष- Whatsapp पर भी युवक-परिषद् के सदस्यों द्वारा जिज्ञासा-समाधान का कार्य किया जा रहा है।

निम्न प्रश्नों के उत्तर दीजिये-

1. भगवान महावीर, भगवान पार्श्वनाथ के निर्वाण के कितने वर्ष पश्चात् हुए?
2. भगवान महावीर ने दीक्षा के पश्चात् कितना काल छद्मस्थ अवस्था में बिताया?
3. भगवान से आयुष्य बढ़ाने की प्रार्थना किसने की?

4. भगवान महावीर के कितने मुनि वैक्रिय लब्धिधारी थे?
5. चमरेन्द्र के उत्पात का विस्तृत वर्णन कौनसे सूत्र में है?
6. संगम देव ने भगवान महावीर को कितने समय तक उपसर्ग दिया?
7. संगम देव ने भगवान महावीर को सर्वप्रथम कौनसे चैत्य में उपसर्ग दिया?
8. गोशालक ने पार्श्व परम्परा के कौनसे आचार्य की आशातना की?
9. भगवान महावीर के कन्धे पर वस्त्र कितने समय तक रहा?
10. देवों ने भगवान महावीर को कौनसा नाम दिया?
11. छद्मस्थकाल की अन्तिम रात्रि में भगवान ने कितने स्वप्न देखे?
12. भगवान महावीर को उत्कृष्ट उपसर्ग कौनसा आया?
13. यशोदा राजकुमारी किसकी बहिन थी?
14. कौनसी नगरी के बाहर भगवान को केवलज्ञान हुआ?
15. इन्द्रभूति गौतम की शंका का समाधान कौनसी नगरी में हुआ?
16. काली आदि कितनी रानियों ने भगवान के पास दीक्षा ली?
17. गोशालक का मत या संघ कौनसा था?
18. जीव अशुभ फल वाले कर्मों को स्वयं कैसे करता है, यह भगवान से किसने पूछा?
19. प्रसन्नचन्द राजर्षि के सम्बन्ध में प्रश्न भगवान से किसने किए?
20. शाली शीर्ष के उद्यान में भगवान को किसका उपसर्ग मिला?
21. भगवान महावीर को केवलज्ञान कौनसी तिथि को हुआ?
22. भगवान महावीर के दोनों माता-पिता के नाम लिखें।
23. भगवान महावीर के कौनसे श्रावक ने अवधिज्ञान प्राप्त कर ख्याति प्राप्त की?
24. भगवान महावीर के कौनसे श्रावक ने देव व तिर्यंच सम्बन्धी उपसर्ग सहे?
25. केशी श्रमण व गौतम स्वामी के बीच धर्मचर्चा कौनसी नगरी में हुई?
26. भगवान महावीर के माता-पिता दीक्षा लेकर कौनसी गति में गये?
27. धन्यकुमार मुनि ने कितने समय तक संयम पाला?
28. सुपात्र दान की उत्कृष्ट भावना से जीर्ण सेठ ने कहाँ का आयुष्य बांधा?
29. भगवान महावीर के समय में कौन-कौनसे निह्नव हुए?
30. जयन्ती श्रमणोपासिका कौनसी नगरी की थी?
31. जमाली ने कितने व्यक्तियों के साथ दीक्षा ली?
32. संसार में मुर्गी पहले हुई या अण्डा, यह प्रश्न भगवान से किसने किया?
33. अभयकुमार कौनसे अनुत्तर विमान का देवता बना?
34. चेटक व कुणिक का युद्ध 'रथ मूसल संग्राम' नाम से क्यों प्रसिद्ध हुआ?
35. विनयवादी के कितने भेद हैं?
36. भगवान महावीर ने अन्तिम देशना में कौन-कौनसे सूत्रों का प्रतिपादन किया?

37. भगवान महावीर ने इन्द्रभूति गौतम को निर्वाण के समय किसके पास भेजा?
38. भगवान महावीर ने सबसे ज्यादा चातुर्मास कहाँ किए?
39. आर्य सुधर्मा स्वामी ने कितने वर्षों तक संयम पाला?
40. भगवान महावीर के निर्वाण पश्चात् कितने गणधर शेष रहे?
41. भगवान महावीर के मुख से स्वप्नों के विषम फल को सुनकर किस राजा को संसार से विरक्ति हुई?
42. भगवान महावीर के शासन के अन्त तक कितने युग प्रधान आचार्य होंगे?
43. भगवान महावीर से छट्ठे आरे की स्थिति का प्रश्न किसने किया?
44. भगवान ने छद्मस्थकाल में कितने चातुर्मासिक तप किए?
45. चंदनबाला द्वारा दिए सुपात्र दान से कितने प्रकार की दिव्य दृष्टि हुई।
46. भगवान ने साधनाकाल में कितने दिन आहार ग्रहण किया?
47. भगवान ने दीक्षा पश्चात् प्रथम तपस्या का पारणा किस चीज का किया?
48. भगवान के उद्बोधन से भावों को सुधार चंडकौशिक मरकर कहाँ उत्पन्न हुआ?
49. कितने अभिग्रह फलने के पश्चात् भगवान ने चंदनबाला के यहाँ पारणा किया?
50. किस अभिग्रह के नहीं फलने पर भगवान वापस लौट रहे थे?
51. भगवान के प्रथम मासखमण का पारणा किस नगरी में किसके यहाँ हुआ?
52. भगवान महावीर की प्रथम देशना किस कारण से आश्चर्य बनी?
53. इन्द्रभूति गौतम की किस शंका का समाधान बिना बताये किया?
54. भगवान की वाणी सुनकर प्रथम श्रावक व प्रथम श्राविका कौन बने? (प्रमुख रूप से)
55. भगवान महावीर ने त्रिपदी का ज्ञान दिया, वह त्रिपदी क्या थी?
56. भगवान महावीर ने श्रेणिक को नरक के दुःख से बचने हेतु किससे हत्या छुड़वाने को कहा और किससे दान दिलवाने को कहा?
57. आलंभिया नगरी के राजा और परिव्राजक का नाम क्या था?
58. भगवान महावीर ने कौनसी सभा में अन्तिम देशना फरमाई?
59. भगवान महावीर ने अपने निर्वाण के कितने वर्ष पश्चात् विक्रमादित्य के राजा होने की बात कही?
60. भगवान महावीर के अन्तिम चातुर्मास में कौनसे प्रमुख राजा ने आरे का वर्णन सुनकर दीक्षा ली? भगवान महावीर का निर्वाण कौनसी नगरी में हुआ?

श्री ज्ञाताधर्मकथांग सूत्र पर आधारित प्रतियोगिता-चतुर्थ का परिणाम

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् के तत्त्वावधान में आगम अध्ययन के लक्ष्य से जिनवाणी के माध्यम से प्रारम्भ की गई श्री ज्ञाताधर्मकथांगसूत्र की प्रतियोगिता चतुर्थ (अप्रेल-2015) में 130 प्रतियोगियों ने भाग लिया। परिणाम संभागक्रम से इस

प्रकार रहा-

संभाग/क्षेत्र	15 से 45 वर्ष	45 वर्ष से ऊपर
1. पल्लीवाल/दिल्ली/पंजाब	(1) बबीता जैन-भरतपुर	(1) सुरेशचन्द जैन-खेरली
	(2) जयाकुमारी जैन-भरतपुर	(2) बेबी जैन-भरतपुर
	(3) अविनाश जैन-नदबई	(3) नीलम जैन-दिल्ली
2. जयपुर/पोरवाल/मध्यप्रदेश	(1) अदिति जैन-अलीगढ़	(1) कमल चोरडिया-जयपुर
	(2) कपिल कोठारी-जयपुर	(2) सुमन डागा-भोपाल
	(3) सुनीता ओसवाल-जयपुर	(3) प्रमिला वीरेन्द्रजी कीमती-इन्दौर
3. महाराष्ट्र एवं अन्य क्षेत्र	(1) सीमा प्रशान्त पारख-जलगांव	(1) विद्या संघवी-बदनावर
	(2) आरती राजेन्द्र मुथा-अमरावती	(2) प्रमिला पोखरणा-धुलिया
	(3) सुश्री रुचिता अशोक-घोटी	(3) सरला कांकरिया-जलगांव
4. कर्नाटक/तमिलनाडु/आंध्रप्रदेश	(1) हेमा किशोरचन्द बागमार-सिकंदराबाद	(1) पारस जैन-वल्लारी
	(2) पी. आशा दुग्गड़-चेन्नई	(2) मंजू बी मेहता-कोप्पल
	(3) एस.श्वेता बोहरा-गुडुकंचरी	(3) चन्द्रा पवन देवडा-बैंगलोर
5. मारवाड़/गुजरात	(1) उपमा चौधरी-अजमेर	(1) कमलादेवी सेठिया-मसूदा
	(2) ऋतु जैन-जोधपुर	(2) विजयजी कोठारी-अजमेर
	(3) पंकज जैन-अजमेर	(3) सुगनचन्द छाजेड़-जोधपुर

6. ग्रुप में-
(1) सौ. कलावती चौरड़िया/सौ. चन्द्रकला दिलीप रांका-भड़गांव
(2) दिव्या डागा/कविता डागा/नीलू कोठारी-जयपुर
(3) सौ. ललिता सुराणा/सौ. इन्दु गांधी/सौ. शैला गाँधी-(पता नहीं)

परिणाम के सम्बन्ध में विशेष जानकारी हेतु सम्पर्क सूत्र- श्री गौतम जी जैन, पचाला-090010-17837

सुखविपाक सूत्र प्रतियोगिता (फरवरी-2015) के समाधान

1. 2	**2.** 12	**3.** 500
4. 11	**5.** 5,7	**6.** 7
7. 5	**8.** 500	**9.** 6
10. 4	**11.** बलश्री	**12.** सिंह
13. कौशाम्बी	**14.** सुदत्त	**15.** भद्रनन्दी
16. युगबाहु	**17.** सर्वार्थसिद्ध	**18.** गुणशील
19. हस्तिशीर्ष	**20.** नागदेव	**21.** सुघोष
22. रक्ताशोक	**23.** सौगन्धिका	**24.** सुघोष

25. महाचन्द्र 26. रक्ताशोक 27. धारिणी

28. मेघकुमार 29. हिमालय 30. श्रीकान्ता

31. श्रीकान्ता 32. धर्मरुचि 33. धर्मवीर्य

34. वरसेना 35. इन्द्रदत्त 36. रक्तवती

37. धर्मसिंह 38. भद्रा 39. श्रीदेवी

40. सुधर्मा 41. महाबल (इस भव की नगरी-पूर्व भव की नगरी)

42. महाचन्द्र (पूर्व भव का नाम- इस भव का नाम) 43. वरदत्त (पत्नी-पति)

44. महाबल (पति-पत्नी) 45. महाचन्द्र (पति-पत्नी) 46. जिनदास (सास-बहू)

47. धनपति (पिता-पुत्र) 48. धनपति (दादी-पौत्र)

49. सुजातकुमार (पति-पत्नी) 50. सुवासवकुमार (पति-पत्नी)

तीन कविताएँ

डॉ. रमेश 'मयंक'

(1)

लड़की सुशिक्षिता-सुशीला
संस्कारवान होगी तो-
अपरिचितों में जाकर भी प्रेम के बल पर
अपना स्थान बनाएगी, संस्कारों की धरोहर से
परिवार को अविभक्त अखण्डित रख पाएगी।

(2)

ज्ञानी विरोधाग्नि का सामना
शान्ति के शीतल जल रूपी
वाणी से करता है,
विपक्षी के मन में रम कर
उसे अपने पक्ष में करता है।

(3)

समाज में व्यक्ति का जागरण जरूरी है
क्योंकि-
जागृत समाज की व्यक्ति ही तो धुरी है।

-बी-8, मीरा नगर, चित्तौड़गढ़-312001 (राज.)

कृति की 2 प्रतियाँ अपेक्षित हैं

नूतन साहित्य

डॉ. श्वेता जैन

अपने मित्र बनो- श्री रणजीतसिंह कूमट, ***प्रकाशक***- प्राकृत भारती अकादमी, 13-ए, गुरुनानक पथ, मेन मालवीय नगर, जयपुर-302017 (राज.), फोनः 0141-2524827, 2520230, ***पृष्ठ***-150+14, ***मूल्य***- 175 रुपये मात्र, सन् 2015

दुःख सुख में साथ दे, सही मार्ग प्रशस्त करे, जीवन के हर क्षण में सहयोगी रहे, ऐसा मित्र दूसरा कोई नहीं हो सकता, आप स्वयं ही हो सकते हैं। क्रोध, मान, माया, लोभादि ही हमारे जीवन में दुःख उत्पन्न करते हैं, हमें सही मार्ग से भटकाते हैं, अनीति के मार्ग पर बढ़ाते हैं, आत्मरमणता को समाप्त करते हैं। अतः व्यक्ति इन कषायों से दूर होकर प्रत्येक क्षण आत्मभाव से जुड़ जाए तो वह अपना मित्र बन जाता है। ऐसी मित्रता का संदेश देने वाली यह आध्यात्मिक पुस्तक पाठकों एवं साधकों का मार्ग प्रशस्त करती है। प्रबुद्ध एवं साधनाशील लेखक ने विभिन्न समयों में अनेक पत्रिकाओं में प्रकाशित 23 रचनाओं का संकलन इस पुस्तक में किया है। जिनके कतिपय शीर्षक हैं- आनन्दमय जीवन के मूल सूत्र, धर्म का वास्तविक स्वरूप, प्रेम गली अति सांकरी, धर्म करने की वस्तु नहीं, जागृति से मुक्ति, ज्ञान और प्रज्ञा, आध्यात्मिक साधना एवं श्रमणाचार आदि। सेवानिवृत्त आई.ए.एस. श्री कूमट जी ने आनन्दमय जीवन के बाहर सूत्र निरूपित किये हैं- 1. सुख देना, दुःख नहीं, 2. तृष्णा की दौड़ समाप्त करना, 3. अन्तर्मुखी बनना, 4. दूसरों को क्षमा करना, 5. कृतज्ञता प्रकट करना, 6. पारस्परिक विश्वास का विकास करना, 7. निराशा से ऊपर उठकर प्रत्येक स्थिति का साहसपूर्वक सामना करना, 8. सोच को सकारात्मक रखना, 9. आत्मनिर्भरता, 10. सबसे प्रेम करना, 11. समता का विकास करना, 12. निजी स्वार्थ से ऊपर उठकर सोचना।

रामायण में संस्कृति का अमर संदेश (भाग 1-2)- आचार्यश्री विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा., ***प्रकाशक***- दिव्य संदेश प्रकाशन, द्वारा- सुरेन्द्र जैन, 205, सोना चेम्बर्स, 507-509, जे.एस.एस.रोड, चीरा बाजार, सोनापुर गली के सामने, मरीन लाईंस (पूर्व), मुम्बई-400002 (महा.), फोन : 022-22034529, मो. 098920-69330, ***पृष्ठ***-326+24, ***मूल्य***- 120 रुपये मात्र, सन् 2014

आचार्य श्री के प्रवचनों के संकलन रूप इस पुस्तक में कलिकाल सर्वज्ञ श्री हेमचन्द्राचार्य रचित 'त्रिषष्टि शलाकापुरुष चरित्र' में निरूपित राम के कथानक के आधार

पर प्रस्तुति हुई है। रामायण की कथा भारतीय संस्कृति की कथा है, जिसमें प्राणिमैत्री, भातृत्व एवं संयम का सन्देश है। यह लोक में प्रचलित राम कथा से कतिपय भिन्नता लिए हुए है, इसे जैन रामायण भी कहा जाता है। लेखक ने वर्तमान समस्याओं का निरूपण करते हुए रामकथा को आधुनिक जीवन के निकट लाने का प्रयास किया है।

सच्ची पूजा

श्री रमेशचन्द कनेरिया

आज भगवान की पूजा के भी अनेक रूप और प्रकार हो चुके हैं। जिससे 'सच्ची पूजा' क्या है, इसकी जानकारी का भी अधिकांश लोगों को पता नहीं है। किन्तु तीर्थंकरों ने जो वाणी फरमायी है उसमें इसका उल्लेख अवश्य है, पर हम उस ओर चलने को उद्यत ही नहीं होते। प्रश्नव्याकरण सूत्र में अहिंसा के 60 पर्यायवाची बताये हैं, जिनमें दया एवं पूजा भी है। अहिंसा का पूर्ण रूप से पालन करना ही भगवान की 'सच्ची पूजा' है।

जो व्यक्ति भगवान की पूजा के नाम से स्नान आदि कर व्यर्थ पानी बहाता है, धूप-दीप कर अग्नि से मच्छरों को मारता है, वाद्य यंत्रों के द्वारा वायु के जीव, फल-फूल चढ़ाने से वनस्पति के जीवों की हिंसा करता है, तो वह तो भगवान की आज्ञा को भंग कर आशातना और कर्मों का बंध ही करता है, जिससे 'मोक्ष-मार्ग' से भटकाव की स्थिति बन जाती है।

तीर्थंकरों ने अपने केवलज्ञान से सभी प्राणियों को एक ही शिक्षा प्रदान की है कि 'मा हण' अर्थात् मत मारो। स्पष्ट है कि भगवान की आज्ञा हिंसा आदि पाप का त्याग करने की है। अतः अठारह ही पापों का त्याग करना, संवर, पौषध , सामायिक, दया तथा संयम का पालन भगवान की आज्ञानुसार करना ही, 'सच्ची पूजा' है। धूप-दीप, फल-फूल चढ़ाना, घण्टा, नृत्य, तीर्थयात्रा, संघ पूजन, पंचकल्याणक, यज्ञ, वरघोड़ा, प्रतिष्ठा महोत्सव, 99 यात्रा, गजरथ महोत्सव, पहाड़ परिक्रमा आदि जो वर्तमान में ख्याति प्राप्त पूजाएँ चल रही हैं, इनका भाव परिवर्तन के बिना मोक्षमार्ग से कोई सम्बन्ध नहीं है।

अतः साधना के क्षेत्र में मोक्ष-मार्ग पर आरूढ़ होने के लिए इनसे दूर रहकर चलने का साधक को लक्ष्य निर्धारित करना चाहिए।

-सेवानिवृत्त शैक्षिक प्रकोष्ठ अधिकारी,
कार्यालय उपनिदेशक, माध्यमिक शिक्षा विभाग, कोटा (राज.)

समाचार विविधा

आचार्यप्रवर की पदरज से पल्लीवाल क्षेत्र हुआ पावन करने चातुर्मास हिण्डौन शहर में हुआ पदार्पण

वसन्त सतत्तरवें में भी जिनका पुरुषार्थ अपरम्पार है,
मुँहपत्ती बंधा, सामायिक करना, किया वर्षण वीतरागता का सार है,
क्षेत्र फरसे एक सौ पैंतालीस हुआ सात सौ किमी. विहार है,
रात्रिभोजन-व्यसन तजो, हर ढाणी में किया ऐसा सुन्दर प्रचार है,
पहना पाँच सौ इक्यासी दम्पतियों ने, शील का विजय हार है,
ऐसे दिव्य दिवाकर, हीरा गुरुवर, इस जग के तारणहार हैं,
शासन प्रभावक पूज्यप्रवर को, वन्दन करते बारम्बार हैं।।

आगमज्ञ, प्रवचन प्रभाकर, व्यसनमुक्ति, शीलव्रत एवं रात्रिभोजन-त्याग के प्रबल प्रेरक, जिनशासन गौरव, परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा., महान् अध्यवसायी सरसव्याख्यानी श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 6 बयाना में सामायिक-साधना का शंखनाद करने के पश्चात् 1 जुलाई को कोसि पधारे। पूज्य गुरुदेव ने हर क्षेत्र को फरसने का समयबद्ध लक्ष्य रखकर एक नवीन इतिहास रचा है। पूज्य श्री चाहते तो बयाना से सीधे हिण्डौन पधार सकते थे, किन्तु शेष रहे क्षेत्रों पर कृपा दृष्टि बरसाते हुए छोटे-छोटे गाँवों को फरसने का मानस बनाया। 2 जुलाई को आप समोगर पधारे, जहाँ पूनमिया श्रावक श्री पारसमलजी खटोड़, श्री मोहनलाल जी नाहर-विजयनगर ने दर्शन एवं सेवा का लाभ लिया। 3 को घाघरेन, 4 को सूरोठ एवं 5 को शेरपुर पदार्पण हुआ। यहाँ श्रीमती सम्पतिदेवीजी ने महापुरुषों के पावन श्रीमुख से यावज्जीवन 18 पापों के त्याग का नियम लिया तथा 6 जुलाई को अंतिम श्वास के साथ देह त्याग किया। यहाँ जयपुर के संघ सदस्यों का पदार्पण हुआ। 7 जुलाई को पूज्यप्रवर हुक्मीखेड़ा, 8 को लहचौड़ा, 9 को क्यारदाकलां एवं 10 को महासती श्री उषाजी म.सा. की सांसारिक जन्मभूमि क्यारदाखुर्द पधारे। वीरपिता डॉ. श्री विमलचन्दजी जैन ने अहोभाव से तीन दिवसीय सेवा का लाभ लिया। हिण्डौनसिटी के निकट स्थित होने से क्यारदाखुर्द में भक्तों का आवागमन अच्छी संख्या में बना रहा। 13 जुलाई को हिण्डौन के उपनगर वर्धमाननगर स्थित सामायिक-स्वाध्याय भवन में प्रमोदजन्य जनमेदिनी के जयनाद के साथ पूज्य आचार्यप्रवर का पावन पदार्पण हुआ। पल्लीवाल क्षेत्र के

अनेक ग्रामनगरों के श्रद्धालु क्यारदाखुर्द से ही विहार में साथ थे। वर्धमाननगर पहुँचते-पहुँचते सैकड़ों भाई-बहिन सम्मिलित हो गये। धर्मस्थान में प्रतिदिन प्रार्थना, प्रवचन एवं ज्ञानाराधान का क्रम बना रहा। 15 जुलाई को जयपुर संघ के अध्यक्ष श्री प्रकाशचन्दजी हीरावत, मंत्री श्री विमलचन्दजी डागा आदि कार्यकारिणी के सदस्य विक्रम संवत् 2073 के चातुर्मास की विनति लालभवन हेतु लेकर सेवा में उपस्थित हुए। 17 जुलाई से महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. ने आचारांग सूत्र के द्वितीय श्रुतस्कन्ध की वाचनी प्रारम्भ की। अब श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. वाचनी फरमाने का दायित्व निर्वहन कर रहे हैं। वर्धमान नगर में पूज्यश्री 21 जुलाई तक विराजे। श्री पूरणचन्दजी, श्री कृष्णमोहनजी, वीरभ्राता दीपकजी, परमेशजी, ऋषभजी एवं श्रेयांस जी की सेवाएँ प्रमोदकारी रहीं। पूज्य आचार्यप्रवर ने 21 जुलाई को सूचित किया कि कल प्रातः समय मण्डी स्थित सामायिक-स्वाध्याय भवन में प्रवचन हो, ऐसी सम्भावना है। कुछ युवा साथियों ने इन समाचारों को मोबाइल आदि साधनों के माध्यम से प्रेषित कर दिया। इसकी जानकारी मिलते ही पूज्य श्री ने अपना विहार प्रातःकाल स्थगित कर दिया। पूज्य आचार्यप्रवर यह कदापि नहीं चाहते हैं कि उनके यहाँ से ऐसे साधनों के माध्यम से सूचना हो। बाहर से सैकड़ों भाई-बहनों का अनावश्यक गमनागमन न हो, यह चिन्तन रहता है। हिण्डौन शहर के संघ सदस्यों द्वारा बार-बार निवेदन करने पर भी पूज्य गुरुदेव ने प्रातःकाल विहार नहीं किया, अपितु व्यवस्था में परिवर्तन करते हुए कहा कि प्रवचन यहाँ ही होगा। प्रवेश के पश्चात् जो कार्यक्रम मण्डी में होना था, वह वर्धमाननगर में ही प्रवचन-सभा रखकर आयोजित हुआ।

22 जुलाई को प्रातःकाल परमपूज्य आचार्यप्रवर मुनिमण्डल के साथ विद्यालय परिसर में पधारे, जहाँ श्रावक-श्राविकाएँ सामायिक वेश में विराज रहे थे। संत भगवन्तों के पदार्पण पर सभा जयघोष के समवेत स्वर से गुंजित हो उठी। श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. ने ओजस्वी वाणी में फरमाया कि हमारे ही श्रावक हमारी आज्ञा का उल्लंघन कर रहे हैं। यदि आप सभी पाँच अभिगम का विधिवत् पालन करें तो आचार सुरक्षित रह सकता है। वर्तमान में नये-नये साधन बढ़ रहे हैं, आने वाले समय में और भी बढ़ने की सम्भावना है। पाँच अभिगमों में पहला है- **1. सचित्त का त्याग**- सचित्त वस्तुओं का त्याग करके आने से अहिंसाव्रत का सहजता से पालन हो जायेगा, ये आपके अन्यान्य (मोबाइल आदि) साधन भी इसी श्रेणी के अन्तर्गत आते हैं। **2. अचित्त का विवेक** रखने पर पाँचवें अपरिग्रह महाव्रत का पालन हो रहा है। वस्तु रखो पर उसमें आसक्ति नहीं। **3. उत्तरासंग धारण**- दूसरे व्रत का पालन हो जाता है। **4. अंजलिकरण**- करबद्ध यदि हाथ जोड़ेंगे तो अचौर्य

व्रत का पालन हो जायेगा। चोरी में ये हाथ ही माध्यम होते हैं। हाथ जोड़ने पर ऐसी प्रवृत्ति होगी ही नहीं। हाथ से पहले टटोलता है, फिर बटोरता है। **5. मन की एकाग्रता-** ब्रह्मचर्य का पालन मन की एकाग्रता वाला ही कर सकता है।

सभा में संचालनकर्ता **वीरभ्राता श्री नरेन्द्रजी जैन**, सेवानिवृत्त प्रधानाचार्य ने संयत भाषा में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि पूज्य आचार्य भगवन्त एवं मुनिमण्डल वर्षावास हेतु कृपा बरसा कर परीषह सहन करते हुए हिण्डौन की धरा पर पधारे हैं। संघ की ओर से उनका अभिवन्दन करता हूँ। उन्होंने सभी समागत महानुभावों का अभिनन्दन करते हुए प्रेरणा की कि रात्रिभोजन के त्यागी बनें, इससे शरीर में विकार शान्त होते हैं। चातुर्मास में तप-त्याग एवं धर्माराधना अधिक से अधिक करें। **श्री महेशजी जैन** सेवानिवृत्त तहसीलदार ने अभिनन्दन गीत प्रस्तुत किया, जिसके बोल थे- "स्वागत करते हैं हम आज गुरु भगवन्त पधारे हैं। करने नगर में वर्षावास गुरु भगवन्त पधारे हैं।" **श्री धर्मेन्द्र कुमारजी जैन**-संघमंत्री, अलीगढ़-रामपुरा ने कहा कि आचार्य भगवन्त के चरण जिस क्षेत्र में पड़ जाते हैं, वह क्षेत्र धन्य हो जाता है। जिस क्षेत्र को चातुर्मास का लाभ मिल जाये तो उस क्षेत्र की सौभाग्यशालिता का तो वर्णन शब्दों से भी करना संभव नहीं है। हमारे संघ की विनति जयपुर से बराबर चल रही है, अलीगढ़ संघ पर भी महत्ती कृपा दृष्टि बरसे, ऐसा पावन श्री चरणों में विनम्र निवेदन है।

वीर पिता डॉ. विमलचन्दजी जैन, वर्धमाननगर ने अपने वक्तव्य में कहा कि पूज्य आचार्यप्रवर ने वर्धमान नगर विराजकर हमें उपकृत किया है, आगे भी लाभ प्रदान करें, ऐसा निवेदन है। कुमारी आस्था जैन-हिण्डौन ने कहा कि पल्लीवाल क्षेत्र के भक्तों की भक्ति सबरी और सुदामा के समान है। हमारी आशा आज सफल हुई है। भक्तों में मीरा और गुरुओं में हीरा विशिष्ट पहचान रखते हैं। **श्री नेमीचन्दजी कर्णावट-भोपालगढ़** ने 'मंगल प्रवेश शुभ भाया, हिण्डौन संघ का भाग्य सवाया' मंगल गीत प्रस्तुत किया तथा बालकों में संस्कार-निर्माण हेतु धार्मिक पाठशालाएँ खोलने की प्रेरणा की। **श्री मनमोहनचन्दजी बाफना-कानपुर** ने कहा कि आप पहले ऐसे आचार्य हैं, जिन्होंने इस क्षेत्र के छोटे-से-छोटे गाँव को कष्ट सहन करके भी फरसा है। आपने ऐसा कर एक नया इतिहास रचा है। **श्री मनीष जी जैन**-राष्ट्रीय सहमंत्री, खेरली ने कहा कि गुरुदेव की असीमकृपा इस क्षेत्र पर बरसी है। खेरली संघ हर तरह से सहयोग करने को हर समय उद्यत रहेगा। **श्री धीरज जी जैन**, वर्धमान नगर ने मंगल गीत - 'जय गुरुवर, हीरा गुरुवर... इनकी मन मस्ती फकीरी भारी है' प्रस्तुत किया। **श्री बुद्धिप्रकाशजी जैन** अध्यक्ष, कोटा

संघ ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि पूज्य आचार्यप्रवर ने सूरवाल, गंगापुर, मण्डावर, खेरली, नदबई, भरतपुर जैसे क्षेत्रों को पर्व-प्रसंगों का लाभ प्रदान किया है। इस क्षेत्र से 20 चारित्र आत्माएँ दीक्षित हुई हैं। युवा पीढ़ी का जुड़ाव हो, बहनें तप-त्याग कर तथा ज्ञान-ध्यान सीखकर चातुर्मास की दीप्ति में चार चाँद लगायेंगी। **श्री अशोकजी जैन, संघमंत्री-महुवा** ने कहा कि गुरुदेव का अभियान घर-घर पहुँचे। निर्व्यसनी, रात्रिभोजन के त्यागी, धर्मस्थान में सामायिक-स्वाध्याय करने वाले तैयार हों। बालकों को धार्मिक पाठशाला में भेजें, यही हमारी भक्ति एवं निष्ठा का सच्चा स्वरूप होगा। **श्री ब्रजमोहनजी जैन**, वरिष्ठ स्वाध्यायी-वर्धमाननगर ने कहा- 'वंदना करलो गुरुवर की, ये फिर ना जाने कब आयेंगे।' **श्री राहुल जी जैन** भरतपुर ने सभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि हम सब गाँठ बांध लें कि मर्यादा को बनाये रखना है। संघ की समाचारी के अनुसार चलना है, ताकि चातुर्मास सफल हो। **श्री प्रवीणजी जैन**, संघमंत्री-हिण्डौनसिटी ने आवश्यक सूचना दी कि कल से प्रार्थना प्रातःकाल, प्रवचन 8.30 बजे से, शास्त्रवाचनी दोपहर 2 से 3 बजे तक, ज्ञान-ध्यान सीखने का समय 3 से 4 बजे होगा। देवसिय-प्रतिक्रमण रात्रिकालीन धार्मिकचर्चा, राइसिय-प्रतिक्रमण आदि में अधिकाधिक सहभागिता रहे। 'र्म-स्थान में मुँहपत्ती लगाकर पधारें, सामायिक-प्रतिक्रमण सीखें। रात्रि में संवर करें। एकाशन, आयम्बिल, दया, उपवास, बेला, तेला की लड़ी चलेगी। आप अपना नाम लिखायें ताकि चातुर्मास पर्यन्त तक लड़ी सुचारू रूप से चले।

महान् अध्यवसायी सरसव्याख्यानी श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. ने अपने प्रवचन में फरमाया कि वर्तमान में तीर्थंकर भगवान नहीं हैं, गणधर भी नहीं हैं, पर जिनशासन की मर्यादा का पालन करने वाले आचार्य भगवंत का असीम पुण्यवानी से सान्निध्य मिला हुआ है। आज का दिन मर्यादा के संदर्भ में नई शुरुआत लेकर आया है। यह समवसरण मण्डी में नहीं होकर 'वर्धमान नगर' में परम्परा से पहली बार हो रहा है। सभी ने चातुर्मास को सफल बनाने के भाव रखे, इस पर प्रमोद है। वर्तमान में देखा-देखी संस्कृति के कारण नये-नये साधनों का प्रचलन बढ़ रहा है, मन चाहे तरीके प्रयोग में ले रहे हैं। 24 घण्टे पूर्व सूचना की पद्धति पर भी शायद अब गुरु भगवन्त को चिन्तन करना पड़े। एक व्यक्ति की भूल का परिणाम है कि आचार्य भगवन्त की मर्यादा का उल्लंघन हुआ। आज से आगे ऐसी कोई प्रवृत्ति की पुनरावृत्ति न हो, ऐसी भावना है। 25 सालों से संतों की समाचारी व श्रावकों के आचार को गुरुदेव दीप्तिमान बना रहे हैं। संघ का गौरव बढ़े, आचार्यश्री की यही भावना है।

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. ने फरमाया- "विश्व में आज जितने

भी धर्म हैं, उनका सार अहिंसा, दया, करुणा, प्रेम में सन्निहित है। जहाँ अहिंसा है, वहाँ दया है। जहाँ दया है, वहाँ क्षमा है। जहाँ दया है वहाँ दान की भावना स्वतः प्रस्फुटित हो जाया करती है। जैन धर्म सर्वश्रेष्ठ धर्म क्यों? क्योंकि यहाँ एकेन्द्रिय से लेकर पंचेन्द्रिय तक के जीवों की यानी सूक्ष्म से सूक्ष्मतम श्रेणी के जीवों के रक्षण करने की बात कही गई है। ऐसी दया अन्य धर्म में प्रायः नहीं है। आप जब भी त्यागियों की सेवा में जाएँ तो आपके साधन-सुविधा वाले उपकरण जो प्रायः सदैव साथ रखते आ रहे हैं, उन्हें साथ नहीं लायें, इसका पूरा विवेक रखें। जब आप माँ के पेट में थे तब वहाँ आपने गर्मी सहन की थी, वहाँ कौन सा पंखा लगा हुआ था? धर्मस्थान में आने पर सहनशीलता के भाव रखने ही है। गर्मी का आभास हो भी रहा हो तो पुस्तक या कपड़े से हवा नहीं करें। दया धर्म हर पंथ में है। किसी को मारना, घात पहुँचाना सबसे बड़ा पाप है। धर्म के नाम पर हिंसा नहीं करें, चातुर्मास दया के लिये है, जीवों का रक्षण करें। संस्कार देने के लिये पाठशालाएँ हर गाँव में हों। बच्चा जब संस्कारवान होगा, तब ही राष्ट्र संस्कारित होगा। घर में ज्ञान का दीपक प्रज्वलित करने का प्रयास करें। संतों की मर्यादा में अक्षुण्णता बनी रहे, इसमें पूरा-पूरा सहयोग करें।

प्रत्याख्यान पश्चात् पूज्य आचार्यप्रवर द्वारा मांगलिक प्रदान की गई। लगभग 11 बजे पूज्य गुरुदेव एवं संतवृन्द के चरण चातुर्मास स्थल की ओर बढ़ गये। पीछे-पीछे श्रावक-श्राविका विपुल संख्या में अनेक समूहों में भगवान महावीर, पूज्य आचार्य हस्ती, आचार्य हीरा, उपाध्याय मान, जैन धर्म आदि की समवेत स्वरों में जयनाद करते चल रहे थे। भक्तों के उत्साह एवं उल्लास का दृश्य वर्णनातीत है। मार्ग में श्रावक-श्राविकाओं की बृहद् संख्या जयनाद करती चल रही थी। हिण्डौन एवं हिण्डौन के निकटवर्ती ग्राम-नगरों के श्रावक-श्राविका विहार में उपस्थित थे। प्रातः लगभग 11.30 बजे हिण्डौन के मण्डी स्थित सामायिक-स्वाध्याय भवन में पूज्यप्रवर का चातुर्मास हेतु मंगल प्रवेश हुआ।

23 जुलाई से प्रार्थना, प्रवचन आदि कार्यक्रम सुचारू रूप से समय पर चल रहे हैं। 24 जुलाई को सवाईमाधोपुर से श्री लड्डूलालजी जैन 'करेला वाले' उनके सुपौत्र श्री आशीष जी, सुपुत्र श्री दिनेशजी का इन्दौर में स्वर्गवास हो जाने पर परिवारजनों के साथ पूज्य आचार्यप्रवर के दर्शनार्थ उपस्थित हुए एवं मांगलिक श्रवण की। चातुर्मासार्थ प्रवेश समय से ही श्रद्धालु श्रावक-श्राविकाओं का आगमन हो रहा है। छोटी एवं मध्यम तपस्याएँ चल रही हैं। चातुर्मासी चौमासी का शुभारम्भ धर्मचक्र की आराधना के साथ हो, ऐसी सम्भावना है।

विचरण विहार के दौरान शीलव्रत की शृंखला में बयाना में 3, सिकन्दरा में 2, घाघरेन में 1, सूरोठ में 1, शेरपुर में 3, हुक्मीखेड़ा में 5, लहचोडा में 1, क्यारदा कला में 1, क्यारदा

खुर्द में 11, वर्धमाननगर में 1 तथा हिण्डौनसिटी में 4 दम्पतियों ने पूज्य गुरुदेव के मुखारविन्द से शीलव्रत के खंद अंगीकार किये हैं। 108 व 1008 वन्दना करने का क्रम रोजाना चल रहा है। युवा भाई-बहिनों को श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. प्रेरणा कर रहे हैं।

उपाध्यायप्रवर का नेहरूपार्क जोधपुर में सामायिक-स्वाध्याय भवन में चातुर्मासार्थ मंगल-प्रवेश

शान्त-दान्त-गम्भीर पूज्य **उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा.**, मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनिजी म.सा. आदि ठाणा 6 से घोड़ों का चौक स्थानक में श्रावक-श्राविकाएँ 19 जुलाई तक लाभान्वित हुए। अष्टमी, चतुदर्शी एवं पक्खी को दया-संवर, एकाशन एवं उपवास की आराधना हुई। जोधपुर में आचार्य पद रजत साधना वर्ष के अन्तर्गत 35 से 40 एकान्तर वर्षीतप चल रहे हैं। 7-8 दम्पती सजोड़े वर्षीतप कर रहे हैं। 20 जुलाई को उपाध्यायप्रवर का घोड़ों के चौक से कोठारी भवन पदार्पण हुआ। यहाँ से सरदारपुरा की दसवीं सी.रोड़ पर स्थित अशोक जी मेहता के आवास पर पधारे। जहाँ से 22 जुलाई को प्रातः 11 बजे नेहरूपार्क स्थित सामायिक-स्वाध्याय भवन में चातुर्मास-प्रवेश हेतु विहार हुआ। श्रावक-श्राविकाओं की विशाल संख्या की उपस्थिति वर्षा के माहौल में भी बनी रही तथा जयनादों के साथ पूज्य उपाध्यायप्रवर आदि ठाणा 6 का प्रातः 11.30 बजे नेहरू पार्क स्थित सामायिक-स्वाध्याय भवन में मंगल पदार्पण हुआ। मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनिजी म.सा. ने एकत्रित सभा में प्रार्थना कराई ज्योंही सभा में शान्ति का संचार हो गया। श्राविका मण्डल की सदस्याओं ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। संघ के **पूर्व महामंत्री श्री अरुण जी मेहता** ने अपने भाव व्यक्त करते हुए कहा कि पूज्य उपाध्याय प्रवर के चातुर्मास हेतु पदार्पण से प्रत्येक श्रावक-श्राविका पुलकित एवं उल्लसित है। नेहरू पार्क के स्वाध्याय भवन में यह प्रथम चातुर्मास है। यह वर्ष आचार्यप्रवर एवं उपाध्यायप्रवर के पदारोहण का 25 वां वर्ष है। इसलिए इस चातुर्मास में 25 सूत्री कार्यक्रम निश्चित किया गया है। इन सूत्रों के अनुसार हम सब साधना में संलग्न रहें।

चातुर्मास संयोजक एवं संघ के **पूर्व महामंत्री श्री नवरतन जी डागा** ने अपनी भावाभिव्यक्ति करते हुए एक भजन प्रस्तुत किया, जिसके बोल थे- "पल भर में जो मालामाल करे, ऐसे गुरुवर आये हैं।" अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के **अध्यक्ष श्री ज्ञानेन्द्रजी बाफना** ने चातुर्मास की प्राप्ति पर प्रसन्नता व्यक्त की एवं कहा कि यह चातुर्मास जोधपुर संघ का है, अतः सभी क्षेत्रों के श्रावक-श्राविका इसका लाभ उठायें। **श्रद्धेय श्री दर्शनमुनिजी म.सा.** ने उद्बोधन देते हुए प्रेरित किया कि इस चातुर्मास का

लाभ उठाकर आप सबको अपना जीवन उन्नत बनाना है। **मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनिजी म.सा.** ने भावपूर्ण प्रवचन में फरमाया कि संतों का आगमन संसार का आवागमन मिटाने वाला है। यहाँ महात्मा तो आ गए, अब आत्मा को बदलना है। मुनिश्री आ गए और मन नहीं बदला तो क्या लाभ। इस प्रकार हृदयस्पर्शी वचनों से चातुर्मास का लाभ उठाने के लिए मुनिश्री ने प्रेरणा की। अन्त में मंगल पाठ हुआ।

चातुर्मास-स्थल एवं सम्पर्क सूत्र- श्रीमती शरद्चन्द्रिका मुणोत सामायिक-स्वाध्याय भवन, तारघर के पास, कुम्हार छात्रावास के सामने, नेहरू पार्क, जोधपुर-342003 (राज.) 1. श्री धनपतचन्दजी सेठिया-अध्यक्ष, फोनः-0291-2752472, मो. 098290-22472, 2. श्री सुभाषचन्द जी हुण्डीवाल-मंत्री, डी-5, रामनगर, प्रथम रोड़, भदवासिया, जोधपुर-342006 (राज.), मोबाइल- 094605-51096, 3. श्री नवरतनजी डागा-चातुर्मास संयोजक, मो. 098280-32215, 4. श्री दिलीप जी लुणावत-आवास-व्यवस्था, मो. 094141-83000, 94141-28953

महावीरनगर, जयपुर में तथा अलवर में संतप्रवरों का चातुर्मासार्थ पदार्पण

जयपुर- **सेवाभावी श्रद्धेय श्री नन्दीषेणमुनिजी म.सा.** आदि ठाणा 4 मानसरोवर, जयपुर के पोरवाल भवन में 20 जून से 01 जुलाई तक विराजे। यहाँ से 2 जुलाई को विहार कर महावीर भवन पधारे तथा 15 जुलाई तक यहाँ धर्मगंगा प्रवाहित कर धर्मलाभ प्रदान किया। यहाँ से शिप्रा पथ, गायत्रीनगर बी एवं समता भवन, महारानी फार्म पधारे। 22 जुलाई को प्रातः 6.30 बजे चातुर्मासार्थ प्रवेश हेतु विहार किया। चातुर्मास-स्थल महावीर नगर स्थित सामायिक-स्वाध्याय भवन में लगभग 900-1000 श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति में जयकारों के साथ प्रवेश किया। -*सुरेशचन्द कोठारी, संयुक्त मंत्री*

अलवर- तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. का अलवर के विभिन्न उपनगरों में विचरण के अनन्तर 19 जुलाई को बिना किसी सूचना के आकस्मिक रूप से 19 जुलाई को श्री कान्तिचन्दजी मेहता के आवास से विहार हुआ एवं 12.30 बजे महावीर भवन में चातुर्मासार्थ मंगल प्रवेश हुआ। -*अशोक पालावत*

महासती-मण्डल का विभिन्न धर्म-स्थानों में चातुर्मासार्थ मंगल-प्रवेश

पावटा, जोधपुर- साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री रतनकंवरजी म.सा. आदि ठाणा 10 में से व्याख्यात्री महासती श्री

विनीतप्रभाजी म.सा., महासती श्री सुव्रतप्रभाजी म.सा. एवं महासती श्री कान्ताजी म.सा. का विहार 22 जुलाई को पीपाड़ चातुर्मास के लिए हुआ है। यहाँ ठाणा 7 से पावटा के सामायिक-स्वाध्याय भवन में साध्वीप्रमुखाजी चातुर्मास हेतु विराज रही हैं।

मानसरोवर, जयपुर- विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवरजी म.सा. आदि ठाणा का 22 जुलाई 2015 को प्रातः 8.15 बजे पोरवाल भवन से महावीर भवन, किरण पथ में जयनाद के साथ चातुर्मासार्थ प्रवेश हुआ। -*सुरेशचन्द कोठारी, संयुक्त मंत्री*

भिनाय (अजमेर)- व्याख्यात्री महासती श्री मनोहरकंवरजी म.सा. आदि ठाणा 3 का 22 जुलाई 2015 को भिनाय के स्थानक में 200 श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति में चातुर्मासार्थ मंगल प्रवेश हुआ। भिनाय के सभी श्रावक-श्राविका महासती जी के पदार्पण से अत्यन्त प्रमुदित हैं। महासतीजी यहाँ शाहपुरा से धनोप, फूलियाँ कलां, इरडिया, देवसिया आदि गाँवों को फरसते हुए पधारे हैं। - *भागचन्द कावड़िया, मंत्री*

नित्यानन्द नगर,जयपुर- व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवरजी म.सा. आदि ठाणा का 22 जुलाई 2015 को 700-800 श्रावक-श्राविकाओं के साथ सोत्साह मंगल प्रवेश हुआ। नित्यानन्द नगर में प्रथम चातुर्मास प्रदान करने पर आचार्यप्रवर का आभार व्यक्त किया गया। -*सुरेशचन्द कोठारी, संयुक्त मंत्री*

दूदू- व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 3 का ओसवाल कॉलोनी के महावीर भवन में चातुमार्स हेतु 19 जुलाई 2015 को मंगल प्रवेश हुआ। महासती मण्डल के इस चातुर्मास के प्रति दूदू के श्रावक-श्राविका अत्यन्त उत्साहित है। चातर्मास की घोषणा के साथ ही जब महासतीजी का विहार जयपुर से दूदू की ओर हुआ तो दूदू के श्रावकों, युवकों एवं श्राविकाओं ने पैदल विहार की सेवा का पूरा लाभ लिया। संघ के अध्यक्ष श्री विनोदजी मेहता ने चातुर्मास की रूपरेखा प्रस्तुत की तथा संघमंत्री श्री माणक जी कोठारी ने धर्म-साधना में सपरिवार पधारने का निवेदन किया।

सूरत- व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबालाजी म.सा. आदि ठाणा 5 शिवनन्दन अपार्टमेन्ट, वेसू से 22 जुलाई 2015 को विहार कर श्री सोहनलाल नाहर स्वाध्याय भवन में मध्याह्न 12 बजे श्रावक-श्राविकाओं एवं युवक परिषद् के सदस्यों के द्वारा कृत जयकारों के साथ मंगल प्रवेश किया। -*सुनील नाहर, महामंत्री*

गाँधीनगर-दिल्ली- व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 4 का जैन स्थानक नेताजी गली, गाँधीनगर में 22 जुलाई 2015 को चातुर्मास हेतु मंगल प्रवेश हुआ। कैलाशनगर स्थानक से प्रारम्भ हुए विहार में अनेक श्रावक-श्राविकाओं ने भाग लिया। प्रवेश के पश्चात् प्रवचन सभा में श्री बिजेन्द्रजी जैन-महामंत्री, गाँधीनगर स्थानक, श्री

सम्पतराजजी चौधरी-कार्याध्यक्ष-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, श्रीमती बीनाजी मेहता, महासचिव-अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल,जोधपुर आदि गणमान्य श्रावक-श्राविकाओं ने महासती मण्डल ने सम्बोधित किया। अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के क्षेत्रीय प्रधान श्री अशोकजी सुराना ने इस चातुर्मास के लिए आचार्यश्री हीराचन्द्र जी म.सा. के प्रति आभार व्यक्त किया तथा महासती मण्डल का भी आभार माना कि उन्होंने लम्बी विहार यात्रा कर दिल्ली निवासियों को चातुर्मास का लाभ प्रदान किया है। उन्होंने गाँधीनगर क्षेत्र के मंत्री, अध्यक्ष एवं सहयोगियों के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया। लगभग 250 श्रावकों ने महासती श्री संयमप्रभाजी म.सा. का प्रवचन श्रवण किया। प्रवचन के पश्चात् रांका परिवार की ओर से साधर्मी-वात्सल्य का लाभ लिया गया। स्थानक में प्रवचन का समय प्रातः 8.15 से 9.30 बजे तक रखा गया है।

महासती मण्डल द्वारा दादावाड़ी साउथ एक्सटेंशन के पश्चात् अनेक क्षेत्रों को लाभान्वित किया। चाँदनी चौक, ऋषभ विहार तथा शंकर नगर में आचार्य श्री सुदर्शनमुनिजी म.सा. की आज्ञानुवर्ती संत श्री राजेन्द्रमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 3 के प्रवचन महासतीजी के साथ हुए।

सुमेरगंजमण्डी (बूंदी)- व्याख्यात्री महासती श्री पुष्पलताजी म.सा. आदि ठाणा 4 ने 22 जुलाई 2015 को 8.50 बजे वर्षावास हेतु स्थानक भवन में मंगल पदार्पण किया। प्रवेश के समय 400-450 श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति रही। -*राकेश जैन, अध्यक्ष*

प्रमुख चातुर्मास

हिण्डौनसिटी (राज.)-	आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा.
जोधपुर (राज.)-	उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा.
सूरत (गुजरात)-	आचार्य (डॉ.) श्री शिवमुनि जी म.सा.
हैदराबाद (आन्ध्रप्रदेश)-	आचार्य श्री रामलाल जी म.सा.
मालेगाँव (महाराष्ट्र)-	गच्छाधिपति श्री प्रकाशमुनि जी म.सा.
कोयम्बटूर (तमिलनाडु)-	आचार्य श्री विजयराज जी म.सा.
कांदीवली वेस्ट,मुम्बई (महाराष्ट्र)-	आचार्य श्री ज्ञानचन्द्र जी म.सा.
वीरनगर, नई दिल्ली-	संघनायक श्री पदमचन्दजी म. शास्त्री
अशोकनगर,शुले, बेंगलोर (कर्नाटक)-	आचार्य श्री सुदर्शनलाल जी म.सा.
धारावी-मुम्बई (महाराष्ट्र)-	उपाध्याय श्री रमेश मुनि जी 'शास्त्री'
विराटनगर. नेपाल-	आचार्य श्री महाश्रमणजी म.सा.

संघ व संघ की संस्थाओं की संयुक्त वार्षिक आमसभा का आयोजन

संघ एवं संघ की संस्थाओं की **वार्षिक साधारण सभा रविवार, 4 अक्टूबर 2015 को मध्याह्न 12.30 बजे हिण्डौनशहर, जिला-करौली (राज.)** में रखी गई है, जिसमें आप सभी संघ सदस्यों की उपस्थिति सादर प्रार्थनीय है। वार्षिक साधारण सभा के विचारणीय विषय बिन्दु इस प्रकार हैं-

विचारणीय विषय बिन्दु-

1. गत बैठक की कार्यवाही का पठन
2. संचालन समिति/कार्यकारिणी की बैठक में लिए गये निर्णयों की जानकारी/ अनुमोदन।
3. संघ व संघ की संस्थाओं के त्रिवार्षिक प्रतिवेदन एवं सदस्यों से प्राप्त सुझावों पर विचार।
4. संघ व संघ की संस्थाओं की कार्यकारिणियों द्वारा स्वीकृत वर्ष 2014-2015 के वास्तविक आय-व्यय एवं वर्ष- 2015-2016 के प्रस्तावित बजट का अनुमोदन।
5. अंकेक्षक की नियुक्ति।
6. संघ की सहयोगी संस्थाओं के अध्यक्ष/संयोजक द्वारा अभिव्यक्ति।
7. राष्ट्रीय संघाध्यक्ष महोदय द्वारा अभिव्यक्ति।
8. वर्ष 2015-2018 की समयावधि के लिये संघ-संरक्षक मण्डल द्वारा चयनित नये राष्ट्रीय संघाध्यक्ष एवं सहयोगी संस्थाओं के अध्यक्षों के नामों की पुष्टि।
9. नये राष्ट्रीय संघाध्यक्ष महोदय द्वारा अभिव्यक्ति।
10. अन्य विषय अध्यक्ष महोदय की आज्ञा से।

नोटः- हिण्डौनशहर पधारने पर आपको जिनशासन गौरव **परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा.** , महान् अध्यवसायी सरस व्याख्यानी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. आदि ठाणा के दर्शन-वन्दन, प्रवचन-श्रवण का लाभ भी प्राप्त होगा।

संघ के सभी सदस्यों से विनम्र अनुरोध है कि संघहित में आप बैठक में कोई सुझाव रखना चाहें तो अपने सुझाव लिखित में संघ के प्रधान कार्यालय को 15 सितम्बर 2015 तक भेजने की कृपा करें। संघहित के उपयोगी सुझावों पर यथोचित विचार व निर्णय करने का हमारा प्रयास रहेगा। संघ सदस्यों को साधारण सभा में भाग लेने की आप अपने क्षेत्र में सूचना करें। *-आनन्द चौपड़ा, राष्ट्रीय महामंत्री*

कार्यकारिणी सभाओं का आयोजन

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ एवं संघ की सहयोगी संस्थाओं की कार्यकारिणी सभाओं का आयोजन 03 अक्टूबर 2015 को हिण्डौनशहर में रखा गया है, जिनमें सम्बद्ध सभी कार्यकारिणी सदस्य सादर आमन्त्रित हैं। -*आनन्द चौपड़ा, संघ महामंत्री*

गुणी-अभिनन्दन समारोह

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर द्वारा गुणी-अभिनन्दन एवं विशिष्ट सेवाभावी कार्यकर्त्ताओं का सम्मान-समारोह 03 अक्टूबर 2015 को हिण्डौन शहर में रखा गया है, जिसमें सभी संघ सदस्य सादर आमन्त्रित हैं। -*आनन्द चौपड़ा, संघ महामंत्री*

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ एवं संघ की सहयोगी संस्थाओं के अध्यक्षों का मनोनयन/चयन

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ एवं संघ की सहयोगी संस्थाओं की वार्षिक साधारण सभा रविवार, 04 अक्टूबर 2015 को हिण्डौनशहर, जिला-करौली (राज.) में रखी गई है। वार्षिक साधारण सभा में आगामी तीन वर्ष के कार्यकाल के लिए राष्ट्रीय संघाध्यक्ष/मण्डल अध्यक्ष/युवक परिषद् अध्यक्ष/श्राविका मण्डल अध्यक्ष एवं बहू-बालिका मण्डल अध्यक्ष का मनोनयन/चयन किया जाना प्रस्तावित है। उपर्युक्त पदों के लिए नाम पर चिन्तन करने हेतु संघ-संरक्षक मण्डल की बैठक माह सितम्बर-2015 में प्रस्तावित है।

इस बारे में आप कोई भी नाम/सुझाव देना चाहें तो संघ-संरक्षक मण्डल की बैठक में प्रस्तुति एवं विचारार्थ **31 अगस्त, 2015** तक माननीय श्री मोफतराजजी मुणोत (संयोजक, संरक्षक मण्डल), मुणोत विला, वेस्ट कम्पाऊण्ड, फिल्ड लेन, 63-के, भूला भाई देसाई रोड़, मुम्बई-400026 (महा.) अथवा संघ के प्रधान कार्यालय अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001 (राज.) के पते पर भिजवाने का कष्ट करावें। -*आनन्द चौपड़ा, राष्ट्रीय महामंत्री*

आचार्य हस्ती-स्मृति-सम्मान 2015 हेतु प्रविष्टियाँ आमन्त्रित

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर के द्वारा प्रतिवर्ष जैन आगम, जैन धर्म-दर्शन, कला एवं संस्कृति तथा जैन जीवन-पद्धति के क्षेत्र में लेखन,

शोध तथा जैन सिद्धान्तों के प्रचार-प्रसार में विशिष्ट योगदान करने वाले विशिष्ट विद्वान् को **'आचार्य हस्ती-स्मृति-सम्मान'** से सम्मानित किया जाता है। इस सम्मान हेतु लेखकों से सम्मान योग्य कृति की चार प्रतियाँ **08 सितम्बर 2015** तक आमन्त्रित हैं। सम्मान हेतु कतिपय नियम इस प्रकार हैं-

1. विद्वान् की एक कृति अथवा उनके सम्पूर्ण योगदान के आधार पर भी सम्मानित किया जा सकेगा।
2. सम्मान हेतु प्रकाशित अथवा अप्रकाशित (टंकित) कृति की चार प्रतियाँ प्रेषित की जानी चाहिए।
3. प्रकाशित कृति सन् 2011 से पूर्व की नहीं होनी चाहिए।
4. अन्य संस्थाओं द्वारा पूर्व में पुरस्कृत कृति पर यह सम्मान नहीं दिया जाएगा।
5. कृति का विशेषज्ञ विद्वानों से मूल्यांकन कराया जाएगा।
6. कृति के मौलिक एवं पूर्व में पुरस्कृत न होने का प्रमाण-पत्र संलग्न करना होगा।
7. सम्मान के रूप में 51 हजार की राशि प्रशस्ति-पत्र के साथ प्रदान की जाती है।

आवदेन-पत्र कृति की चार प्रतियों के साथ अपने बायोडेटा एवं सम्पर्क सूत्र के साथ निम्नांकित पते पर प्रेषित करें। ध्यातव्य है कि गत वर्ष जिन विद्वानों ने कृतियाँ प्रेषित की थी, उन्हें पुनः प्रेषित करने की आवश्यकता नहीं है। - **सम्पर्क सूत्रः**- राष्ट्रीय महामंत्री, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001 (राज.), फोन नं. 0291-2636763/2641445, Email-absjrhssangh@ yahoo.com

संघ द्वारा सम्मानार्थ प्रविष्टियाँ आमन्त्रित

युवा प्रतिभा- शोध-सम्मान (45 वर्ष की आयु तक)-

1. **प्रशासनिक चयन-** राज्यस्तरीय व केन्द्रीय प्रशासनिक सेवा, न्यायाधिपति आदि विशिष्ट पदों पर चयन।
2. **प्रोफेशनल विशिष्ट-** डॉक्टर, इंजीनियर, चार्टर्ड एकाउण्टेण्ट, कम्पनी सचिव व अन्य प्रोफेशनल कोर्स में योग्यता सूची में स्थान पाने पर।
3. **शोध-** वैज्ञानिक खोज (अहिंसा व जैन सिद्धान्तों को पुष्ट करने वाली)
4. **संघ-सेवा-** चतुर्विध संघ सेवा, विशेष धार्मिक अध्ययन, धार्मिक लेखन इत्यादि।

विशिष्ट स्वाध्यायी सम्मान (एक श्राविका, एक युवा, एक वरिष्ठ स्वाध्यायी)- कम से कम 10 वर्ष स्वाध्याय संघ, जोधपुर से स्वाध्यायी (पर्युषण पर्वाराधन) के रूप में सक्रिय सेवा। (युवा स्वाध्यायी के लिए आवश्यक होने पर सेवा वर्ष में छूट दी जा सकेगी।)

गुणी-अभिनन्दन-

1. **तपस्या-** कम से कम पाँच वर्ष तक एकान्तर, दीर्घ तपस्या, दीर्घ संवर-साधना या अन्य विशिष्ट तप।
2. **अन्य-** सेवा, साधना, संघ उन्नयन में योगदान, चतुर्विध संघ-सेवा, विद्वान्।

नोटः- उक्त सम्मान हेतु अपनी प्रविष्टियाँ 08 सितम्बर 2015 तक संघ कार्यालय के पते पर भिजवाएं।-आनन्द चौपड़ा, राष्ट्रीय महामंत्री-अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001(राज.), फोनः 0291-2636763,Email-absjrhssangh @yahoo.com

न्यायमूर्ति श्री श्रीकृष्णमल लोढ़ा स्मृति युवा शिक्षा प्रतिभा सम्मान हेतु प्रविष्टियाँ आमन्त्रित

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर द्वारा संघ-संरक्षक न्यायमूर्ति श्री श्रीकृष्णमल लोढ़ा की स्मृति में संचालित युवा शिक्षा-प्रतिभा सम्मान हेतु प्रविष्टियाँ आमन्त्रित हैं। इसके अन्तर्गत उन छात्र-छात्राओं की प्रविष्टियाँ स्वीकार की जायेंगी, जिन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में विशिष्ट उपलब्धि प्राप्त की हो। माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, विश्वविद्यालय आदि की परीक्षाओं में वरीयता सूची में विशिष्ट स्थान प्राप्त करने वाले श्रेष्ठ छात्र को 21 हजार रुपये की राशि से सम्मानित किया जाएगा। प्रतियोगी एवं प्रोफेशनल पाठ्यक्रमों में उच्च वरीयता प्राप्त छात्र-छात्रा को भी सम्मानित किया जा सकता है।

इच्छुक अभ्यर्थी आवेदन करते समय अंकतालिका की सत्यापित प्रतिलिपि संलग्न करें तथा सम्पर्क सूत्र सहित अपना बायोडेटा 08 सितम्बर 2015 तक निम्नांकित सम्पर्क सूत्र पर प्रस्तुत करें। **सम्पर्क सूत्रः**-महामंत्री, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001 (राज.), फोन नं. 0291-2636763, Email-absjrhssangh@yahoo.com

डॉ. बिमला भण्डारी जैन रत्न शोध सम्मान हेतु आवेदन आमन्त्रित

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल की पूर्व महामंत्री डॉ. बिमला जी भण्डारी की पुण्य स्मृति में अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के तत्त्वावधान में भण्डारी परिवार की ओर से जैन धर्म-दर्शन से सम्बद्ध विषय पर पी-एच्.डी एवं डी.लिट् उपाधि प्राप्त करने वाले शोधकर्त्ताओं को **'डॉ. बिमला भण्डारी जैन रत्न शोध सम्मान'** से सम्मानित किया जाएगा। इस सम्मान हेतु आवश्यक बिन्दु इस प्रकार हैं-

1. जिन शोधकर्त्ताओं ने 17 फरवरी 2014 के पश्चात् पी-एच्.डी/डी.लिट् उपाधि प्राप्त की है, उनमें से पाँच पी-एच्.डी. उपाधिधारकों तथा दो डी.लिट् उपाधिधारकों को क्रमशः 11 हजार रुपये एवं 15 हजार रुपये की प्रोत्साहन राशि से सम्मानित किया जाएगा।
2. 17 फरवरी 2014 से 31 जुलाई 2015 के मध्य जो भी पी-एच्.डी. एवं डी.लिट् उपाधि प्राप्तकर्त्ता हों, वे इस सम्मान हेतु आवेदन कर सकते हैं। आवेदन-पत्र के साथ पी-एच्.डी./डी.लिट् उपाधि के समुचित सर्टिफिकेट एवं शोधकार्य का सारांश संलग्न करना होगा।
3. प्राप्त आवेदन-पत्रों का निर्णायक समिति द्वारा मूल्यांकन कर सम्मान हेतु अनुशंसा की जाएगी।
4. सम्मान राशि 'श्री सरदारमल भण्डारी चेरिटेबल ट्रस्ट, जयपुर' के सौजन्य से प्रदान की जाएगी।
5. सभी आवेदन-पत्र निम्नांकित पते पर 31 अगस्त 2015 के पूर्व प्राप्त हो जाने चाहिए।- **महामंत्री,** अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001 (राज.), फोन : 0291-2636763

-आनन्द चौपड़ा, महामंत्री, अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

'गुणसौरभ गणिहीरा' पुस्तक पर प्रतियोगिता

रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर, रात्रिभोजन-त्याग, आजीवन शीलव्रत, व्यसनमुक्ति एवं समाज सुधार के प्रबल प्रेरक, जिनशासन गौरव आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के **आचार्य पदारोहण रजत साधना वर्ष** के अवसर पर **'गुणसौरभ गणिहीरा'** खुली पुस्तक प्रतियोगिता का प्रारम्भ श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, तमिलनाडु द्वारा 9 मई 2015 से किया गया है। **गुण सौरभ गणि हीरा पुस्तक एवं प्रश्न पुस्तिका के कतिपय प्राप्ति-स्थलों तथा सम्पर्क सूत्र की सूचना जिनवाणी के जून एवं जुलाई-2015 के अंकों में प्रकाशित की गई थी। उसी सन्दर्भ में कुछ नवीन स्थापित किये गये केन्द्रों के सम्पर्क-सूत्र इस प्रकार हैं-**

पल्लीवाल क्षेत्र- 1. मण्डावर- श्रीमती अर्चना संजयजी जैन-099287-11159,

राजस्थान क्षेत्र- 1. जयपुर- सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल-0141-2575997, **2. सरस्वतीनगर, जोधपुर-** श्री अमरचन्दजी सदावत-0291-2722136,2742138, **3. घोड़ों का चौक, जोधपुर-** श्री धीरजजी डोसी-081077-18222, **4. महामन्दिर, जोधपुर-** श्री नवरतनमलजी मेहता-094148-27471, **5. पावटा बी रोड़, जोधपुर-** श्री हर्षवर्द्धनजी

ललवाणी-098281-97000, **6. चौपासनी हाउसिंग बोर्ड-** श्री प्रकाश जी सालेचा-094141-26279, **7. पावटा, जोधपुर-** रेखाजी सुराणा-094614-75910, **8. लक्ष्मीनगर, जोधपुर-** कंचनजी रांका-0291-2540033, श्री महावीरचंदजी बोथरा-098285-82391, **9. अजमेर-** अलकाजी जैन-098291-54156

महाराष्ट्र क्षेत्र- 1. अदावद- हेमलताजी मेहर- 097668-49915, **2. मलकापुर-** कीर्तिजी श्रीश्रीमाल-094237-22069, **3. नागपुर-** श्री राजेशजी घटाघट-098904-79299, **4. वणी-** विधाजी नितिनजी मुथा-094219-47220,

मध्यप्रदेश क्षेत्र- 1. छनेरा- श्री नितेशजी कस्तुरचन्दजी सांड-097133-74473, **2. नीमच-** श्री शम्भूसिंहजी कांठेड़-093027-57603, **3. उज्जैन-** श्री पारसमलजी चोरड़िया (भईया)-098270-46567,

दिल्ली क्षेत्र- श्री अशोकजी सुराणा-098110-20399

गुजरात क्षेत्र- 1. सूरत- श्रीमती शर्मिलाजी बाफणा-081412-11377, 088661-35566

आन्ध्रप्रदेश क्षेत्र- 1.श्रीकलाहस्ती- श्रीमती सुधाजी बाघमार-094409-35446

तमिलनाडु क्षेत्र- 1. तिरुवेल्लूर- श्रीमती आशाजी तातेड़- 094441-69670, **2. चिदम्बरम-** श्री घीसूलालजी तालेड़ा- 04144-220649, **3. नेल्लीकुप्पम-** श्रीमती मधुजी छल्लाणी- 090033-61123

प्रतियोगिता समिति सम्पर्क सूत्र- 1. श्री दुलीचन्द नाहर-072000-99000, 2. दिनेशजी सुराणा-072009-36070, 3. श्री राजेश जी बोथरा- 094440-08284

प्रश्नों से सम्बन्धित अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क सूत्र- 1. श्री विनोदजी जैन-094447-34394, 2. श्री सुरेशकुमारजी हिंगड़-094448-52330, 3. श्री नरेन्द्रजी कांकरिया-098411-48948, 4. श्रीमती मनीषाजी कांकरिया-091500-42434-

महेन्द्र कुमार कांकरिया, अध्यक्ष-97109-99990, आर. नरेन्द्र कांकरिया, प्रतियोगिता संयोजक-98411-48948, सुधीर कुमार सुराणा, मंत्री-91506-40000

बनें आगम अध्येता (5)

उत्तराध्ययन सूत्र पर खुली पुस्तक परीक्षा का आयोजन

'बनें आगम अध्येता' योजना के अन्तर्गत पाँचवीं आगम परीक्षा के रूप में 'उत्तराध्ययनसूत्र' को लिया गया है। यह प्रतियोगिता तीन चरणों में पूर्ण होगी। प्रत्येक चरण में 12 अध्ययनों में से प्रश्न लिये जायेंगे। प्रथम चरण अगस्त माह में पूर्ण होगा। आगामी परीक्षा 'उत्तराध्ययनसूत्र' द्वितीय भाग अध्याय 13 से 24 में से ली जायेगी। द्वितीय भाग का मूल्यांकन प्रश्न पत्र 16 अगस्त 2015 से भेजना प्रारम्भ किया जायेगा। **सम्पर्क सूत्र-**

अध्यक्ष-श्रीमती पूर्णिमाजी लोढ़ा, जयपुर-098290-19396, **महासचिव**- श्रीमती बीनाजी मेहता, जोधपुर-097727-93625

संघ व संघ की सहयोगी संस्थाओं के साथ 3-4 अक्टूबर 2015 को श्राविका मण्डल की कार्यकारिणी बैठक, वार्षिक अधिवेशन व संयुक्त वार्षिक साधारण सभा रखी गयी है। सभी बहिनों से निवेदन है कि वे संघ के समस्त कार्यक्रम में चून्दड़ी साड़ी अनिवार्य रूप से पहनकर भाग लें। साड़ी मंगवाने हेतु महासचिव श्रीमती बीनाजी मेहता से 97727-93625 पर शीघ्रातिशीघ्र सम्पर्क कर मंगवा सकते हैं, साड़ी का मूल्य 450/- निर्धारित है।

बनें आगम अध्येता के अन्तर्गत नन्दीसूत्र का परीक्षा परिणाम शीघ्र घोषित किया जा रहा है। सभी सदस्यों के प्राप्तांक की सूची परीक्षा केन्द्राधीक्षक को भिजवाई जा रही है। आप उनसे भी सम्पर्क कर परिणाम की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। जिन परीक्षार्थियों के मोबाइल नं. उपलब्ध हैं, उनको एस.एम.एस के माध्यम से प्राप्तांक भेजे जा रहे हैं।

-बीना मेहता, महासचिव

श्राविका मण्डल का प्रवास कार्यक्रम सम्पन्न

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल की महासचिव श्रीमती बीनाजी मेहता, श्रीमती मोहनकौरजी जैन व श्रीमती कंचनजी रांका, श्रीमती शान्ताजी कर्नावट द्वारा 23 जून को नागौर, 26 से 29 जून को पल्लीवाल क्षेत्र, 7 जुलाई को बालोतरा तथा 16 जुलाई को ब्यावर में श्राविकाओं से सम्पर्क किया तथा संघ की गतिविधियों की प्रेरणा करते हुए गुणसौरभ गणिहीरा प्रतियोगिता की जानकारी प्रदान की गई। ब्यावर में बहू बालिका मण्डल का गठन किया गया, जिसमें शाखाध्यक्ष श्रीमती वृत्तिकाजी सुराणा व सचिव आकांक्षाजी बुरड़ को मनोनीत किया। *-पूर्णिमा लोढ़ा, अध्यक्ष*

महाराष्ट्र, पोरवाल एवं मध्यप्रदेश क्षेत्र में स्वाध्याय संघ द्वारा प्रचार यात्रा सम्पन्न

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर द्वारा 02 से 06 जुलाई 2015 तक महाराष्ट्र क्षेत्र में, 07 से 09 जुलाई 2015 तक पोरवाल क्षेत्र में तथा 16 से 19 जुलाई 2015 तक मध्यप्रदेश क्षेत्र में आध्यात्मिक प्रचार कार्यक्रम आयोजित किया गया। पोरवाल क्षेत्र के प्रवास कार्यक्रम में स्वाध्याय संघ के संयोजक श्री कुशलचन्द गोटेवाला-सवाईमाधोपुर, पूर्व शाखा संयोजक श्री लल्लूलाल जी जैन-आवासन मण्डल, श्री पदमचन्द जी जैन-बजरिया, शाखा सह संयोजक श्री प्रेमबाबू जी जैन-बजरिया, वरिष्ठ स्वाध्यायी श्री धर्मचन्द जी जैन-कुश्तला, वरिष्ठ स्वाध्यायी श्री महावीरप्रसाद जी जैन-बजरिया की

महनीय सेवाएं प्राप्त हुईं। प्रचार कार्यक्रम में श्योपुरकलां, सवाईमाधोपुर शहर, बजरिया, कुश्तला, पचाला, चौरू, अलीगढ़, उनियारा, चौथ का बरवाड़ा, इन्द्रगढ़, सुमेरगंज मण्डी, जरखोदा, देई, दूणी, देवली, आवासन मण्डल, आलनपुर, मण्डी रोड़ और आदर्शनगर में प्रवास हुआ। महाराष्ट्र एवं मध्यप्रदेश क्षेत्र के कार्यक्रमों में स्वाध्याय संघ के सचिव श्री राजेश जी भण्डारी-जोधपुर, वरिष्ठ स्वाध्यायी तथा श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर के मंत्री श्री सुभाष जी हुण्डीवाल, स्वाध्याय संघ के कार्यालय प्रभारी श्री कमलेश जी मेहता, मध्यप्रदेश जैन स्वाध्याय संघ के प्रचारक श्री मोहन जी पीपाडा तथा महाराष्ट्र जैन स्वाध्याय संघ के प्रचारक श्री मनोज जी संचेती एवं श्री हीरालाल जी मण्डलेचा की महनीय सेवाएं प्राप्त हुईं। वरिष्ठ स्वाध्यायी श्री कंवरलाल जी संघवी-जलगांव की भी सेवाएं प्राप्त हुईं। प्रचार कार्यक्रम में महाराष्ट्र क्षेत्र के धरणगांव, चौपड़ा, होलनांथा, शिरपुर, चालीसगांव, नागद, कजगांव, भड़गांव, पाचोरा, वरखेड़ी, शेन्दुर्णी, वाकोद, वाकड़ी, फत्तेपुर, बोदवड़, मुक्ताई नगर आदि क्षेत्रों में तथा मध्यप्रदेश क्षेत्र के प्रतापगढ, कालुखेड़ा, उन्हेल, सुभाषनगर उज्जैन, शाजापुर, आकोदिया मण्डी, शुजालपुर शहर, हाटपिपल्या, बागली, हातोद एवं इन्दौर क्षेत्रों में प्रवास हुआ। प्रचार कार्यक्रम में सभी क्षेत्रों में पर्युषण पर्वाराधना में स्वाध्यायी बुलाने की प्रभावी प्रेरणा की गई, जिसके फलस्वरूप 22 मांगें प्राप्त हुईं। नये स्वाध्यायी बनने की प्रेरणा से 32 महानुभावों ने स्वाध्यायी सदस्यता ग्रहण की तथा पुराने स्वाध्यायियों की पर्युषण सेवा स्वीकृति भी प्राप्त की गई। सभी स्थानों पर बालक-बालिकाओं हेतु रविवारीय संस्कार शिविरों की प्रेरणा की गई तथा चल रहे शिविरों की समीक्षा की गई। शिक्षण बोर्ड की आगामी थोकड़ों की परीक्षा की जानकारी देते हुए प्रेरणा की गई। प्रचार के दौरान विभिन्न सम्प्रदाय के संत-सती मण्डल के दर्शन-वन्दन का लाभ भी प्राप्त हुआ। सभी स्थानों पर स्वाध्याय-संकल्प पत्र एवं प्रतिक्रमण संकल्प-पत्र भरे गए

-कुशलचन्द जैन गोटेवाला, संयोजक

जैनागम स्तोक वारिधि परीक्षा 10 जनवरी 2016 को

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की जैनागम स्तोक वारिधि (थोकड़ों) की कक्षा 1 से 7 तक की आगामी परीक्षा 10 जनवरी, 2016 को दोपहर 12.30 बजे से आयोजित की जाएगी। इच्छुक भाई-बहिनों से निवेदन है कि स्वयं बोर्ड की परीक्षा में भाग लें तथा अन्य को भी प्रेरित करें।

1. परीक्षा में भाग लेने हेतु आवेदन पत्र भरकर बोर्ड कार्यालय में जमा कराने की अन्तिम तिथि 01 दिसम्बर 2015 है।
2. कम से कम 10 परीक्षार्थी होने पर परीक्षा केन्द्र नया प्रारम्भ किया जा सकता है।

3. परीक्षा से सम्बन्धित पुस्तकें शिक्षण बोर्ड कार्यालय से प्राप्त की जा सकती है।
4. सभी उत्तीर्ण परीक्षार्थियों को प्रोत्साहन पुरस्कार व मेरिट में आने वालों को विशेष पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है।

परीक्षा सम्बन्धी अन्य जानकारी के लिए सम्पर्क करें- सुरेश बी. चोरड़िया, संयोजक-94440-28841, नवरतन गिड़िया, सचिव-94141-00759, धर्मचन्द जैन, रजिस्ट्रार-93515-89694, शिक्षण बोर्ड कार्यालय, जोधपुर-0291-2630490, 2622623, फैक्सः 2636763, Website: jainratnaboard.com, E-mail: Shikshanboardjodhpur @gmail.com, info@jainratnaboard.com

जयपुर में युवक परिषद् द्वारा परिवार-संस्कार शिविर आयोजित

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् के द्वारा अरिहन्त वाटिका, मोहनबाड़ी, जयपुर में 18 से 21 जून 2015 तक पारिवारिक संस्कार शिविर आयोजित किया गया। यह शिविर संघ के परिवारों में आत्मीयता, प्रेम, स्वधर्मी-वात्सल्य एवं संस्कार निर्माण की दृष्टि से आयोजित हुआ। शिविर में जोधपुर, चेन्नई, जलगॉवं, सूरत, ब्यावर, किशनगढ़, सवाईमाधोपुर, अलीगढ़-रामपुरा, चौथ का बरबाड़ा, हांगकाँग, गंगापुरसिटी, भरतपुर, महवा, नदबई इत्यादि क्षेत्रों से 45 परिवार पधारे। जयपुर के परिवारों के लिए शिविर स्थल पर रहने के पश्चात् रात्रि में घर जाकर वापस आने की व्यवस्था की गई। 18 जून को देर रात तक शिविरार्थियों का आने का क्रम बना रहा। 19 जून को प्रातः 6.00 बजे वीतराग भगवन्तों की प्रार्थना से शिविर प्रारम्भ हुआ।

प्रथम सत्र में **श्री महेन्द्रजी पारख, आर.ए.एस.** ने पॉवर पोइण्ट प्रस्तुति के साथ तनावमुक्त जीवन के सम्बन्ध में सशक्त अभिव्यक्ति की। उन्होंने तनाव रहित रहने हेतु Be Positive, Be Punctual, Be Praiseful आदि सूत्र रखे। उसके पश्चात् Ice breaking की Activity **खुशबूजी कर्णावट एवं वैभवजी डागा** द्वारा नियोजित की गई जिससे सभी क्षेत्रों से आये परिवारों का आपस में व्यक्तिशः परिचय हुआ।

द्वितीय सत्र में **न्यायाधिपति श्री जसराज जी चौपड़ा** ने विविध उदाहरणों के साथ परिवार में किस प्रकार प्रेम, समन्वय स्थापित हो, उसकी जोश भरी अभिव्यक्ति दी। सत्र के पश्चात् अभय जी सुराणा ने इस प्रकार का एक activity कार्यक्रम रखा जिसमें पारस्परिक सहज होता गया।

तृतीय सत्र में जिनवाणी के सम्पादक **डॉ. धर्मचन्द जी जैन** ने 'कैसे करें बच्चों को

संस्कारित' विषय पर परिवार संस्कार शिविर के एक-एक अक्षर को लेकर आचरण योग्य विभिन्न बिन्दुओं को सरल एवं सुबोध रीति से प्रस्तुत किया। पाप कहकर, नरक में दुःख पाओगे ऐसा कहकर, अहिंसा के संस्कार देने के बजाए बालकों को ऐसी परिकल्पना कराओ कि अगर वे पीड़ित की जगह होते तो कैसा अनुभव करते। फिर शिविर में गहन विषयों पर व्यक्तिगत चर्चा हुई, जिसमें युवाओं ने रुचि से भाग लिया। किशोरों को उद्बोधन देने हेतु अलग-अलग कक्षाएँ समानान्तर रूप से चल रही थीं। छोटे बच्चों को धार्मिक कार्टून फिल्में भी दिखाई जा रही थीं। सभी बच्चों की सामूहिक कक्षा हिण्डौन के प्राचार्य अशोकजी जैन ने ली। Art of Saying Yes or No विषय पर उनकी अभिव्यक्ति भावपूर्ण एवं सशक्त थी। उनका प्रभावी उद्बोधन युवकों के समक्ष भी रखा गया। इसके पश्चात् किशोर एवं बालकों की सभा में नमनजी मेहता ने 'मेरे श्रद्धा के केन्द्र महावीर' पर विलक्षण भाव रखे। तृतीय सत्र के पश्चात् पूर्व इतिहास की जानकारी सभी को हो, इस हेतु प्रतियोगिता का सुंदर आयोजन हुआ।

20 जून को प्रार्थना एवं सामायिक सत्र के पश्चात् प्रथम सत्र में संघ के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सुमेरसिंहजी बोथरा के सुपुत्र **श्री उपेन्द्रजी बोथरा** ने बचपन में संस्कार के आधार पर अपनी बात रखी, तो हांगकांग से पधारी **चन्द्राजी संचेती** ने युवाओं को बहती धारा में कैसे सुरक्षित रखें इस पर सटीक चिंतन प्रस्तुत किया।

इस सत्र के मुख्य वक्ता हांगकांग से शिविर हेतु ही पधारे **राजेन्द्रजी डागा** ने छोटी-छोटी बातें जीवन को कैसे बड़ा बनाती हैं, पर अपनी प्रस्तुति दी। शास्त्रों के उदाहरण एवं जीवन के अनुभवों के आधार पर तथ्यपरक एवं रोचक प्रस्तुति से पूरी सभा आह्लादित हो गयी। संत दर्शन की महत्ता, व्यापार में धर्म का आधार, समय-व्यवस्था, कैसे बचें होटल बोटल की संस्कृति से, और किस तरह आये परिवार में निश्छल प्रेम आदि पहलुओं को उन्होंने छुआ। इस सत्र के पश्चात् अभयजी सुराणा ने फिर एक Activity कराई।

अपराह्न में सभी परिवार **सेवाभावी श्री नंदीषेणजी म.सा., श्रद्धेय श्री यशवंतमुनिजी म.सा.** के चरणों में पहुँचे जिनके अमृतवचनों से सभी जनों के हृदय श्रद्धा से अभिभूत हो गये। **श्री यशवंतमुनिजी म.सा.** ने अनमोल सूत्र देते हुए फरमाया कि जिसे सहना आ गया उसे रहना आ गया। **विदुषी महासती श्री सौभाग्यवतीजी म.सा.** ने भी पूर्ण आत्मीय भाव से पूछा कि क्या शिविर में दो दिन और रह सकते हो? तो सभी के हाथ खड़े हो गए। **व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभाजी म.सा.** के भी दर्शनों का लाभ लिया। उसके बाद शिविर-स्थल पर धार्मिक अंत्याक्षरी विकासजी मेहता-निशाजी मेहता के संचालन में

सम्पन्न हुई। 21 जून को प्रातः सुश्री नेहाजी चोरड़िया ने प्रार्थना के पश्चात् ध्यान कराया।

21 जून को शिविर समापन के अवसर पर पद्मभूषण श्री डी.आर.मेहता जी, संघाध्यक्ष श्री ज्ञानेन्द्रजी बाफना, महामंत्री श्री आनन्दजी चौपड़ा, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के मंत्री श्री विनयचन्दजी डागा, श्री वर्धमान स्थानकवासी श्रावक जयपुर संघ के श्री विनयचन्दजी बम्ब, मंत्री श्री विमलचन्दजी डागा, संघ के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सुमेरसिंहजी बोथरा, शासन सेवा समिति के सदस्य श्री कैलाशचन्दजी हीरावत, श्राविका मण्डल की अध्यक्ष श्रीमती पूर्णिमाजी लोढ़ा आदि अनेक गणमान्य श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति रही।

मंगलाचरण उपाध्यक्ष **श्री राजीवजी नाहर-सूरत**, स्वागत कार्याध्यक्ष श्री विक्रमजी बाघमार-चेन्नई ने किया। शिविर की रूपरेखा कुशल पुरुषार्थी संयोजक **श्री देवेन्द्रजी सेठ** ने रखी। शिविर पर अभिमत देते हुए **श्रीमती रजनीजी गोटेवाला**-सवाईमाधोपुर ने एक-एक पहलु को बहुत सुन्दर शब्दों में रखा। **नरेशजी जैन**-नदबई, **मनोजजी जैन**-किशनगढ़, **अक्षितजी भंडारी**-ब्यावर ने भी शिविर पर तथ्य परक सुंदर अभिमत प्रस्तुत किये एवं यह बात रखी की ऐसा शिविर कम से कम पाँच दिवस का होना चाहिए। कार्याध्यक्ष **श्री महावीरचन्दजी बोथरा**-जलगाँव ने ग्रीष्मकालीन शिविरों की झलक रखी तो पूर्व अध्यक्ष **श्री सुमेरसिंहजी बोथरा** ने संत-सेवा में सम्प्रदाय अतीत जयपुर के गौरव एवं यहाँ के गौरवशाली श्रावकों से आगन्तुकों को अवगत कराया। **विनयचन्दजी डागा** ने विनय की बात की। जिनका जीवन ही बोलता है ऐसे डी. आर. मेहता सा ने ध्यान, अहिंसा के विषय में दिल को छूने वाले तथ्यों को रखा। उनकी एक-एक बात को युवा ध्यान से सुन रहे थे।

संघ महामंत्री श्री आनन्दजी चौपड़ा ने परिवार संस्कार शिविरों के इतिहास को बताया और **संघाध्यक्ष श्री ज्ञानेन्द्र जी बाफना** ने परिवार संस्कार शिविरों की शृंखला को फिर से चालू करने हेतु युवक परिषद् के प्रयासों को सराहा। कमलेशजी मेहता जोधपुर एवं गजेन्द्रजी चौपड़ा जोधपुर ने सभा का कुशल संचालन किया। शिविर में सराहनीय योगदान देने वाले अतिरिक्त महासचिव लोकेशजी कुम्भट (आशीषजी कुम्भट), जोधपुर ने सभी को धन्यवाद ज्ञापित किया।

शिविर के प्रमुख सूत्रधार थे- युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जितेन्द्रजी डागा। उन्होंने टीम को साथ लेकर शिविर को सफल बनाया। शिविर की सम्पूर्ण व्यवस्था में श्री सरदार सिंहजी बोथरा, प्रमोदजी हीरावत, देवेन्द्रजी सेठ, सुभाषजी चोरड़िया, सुनीलजी, प्रशांतजी कर्णावट, मनीषजी मुणोत, रितेशजी बोथरा आदि का प्रमुख योगदान रहा।

-जितेन्द्र डागा, राष्ट्रीय अध्यक्ष, युवक परिषद्

करुणा केन्द्र एवं करुणा-क्लबों के माध्यम से अहिंसा-करुणा का करें बीजारोपण

विगत 20 वर्षों से शिक्षण संस्थानों में 'करुणा क्लबों' का गठन कर विद्यार्थियों में अहिंसा, करुणा एवं मानवीय मूल्यों के प्रचार-प्रसार का कार्य करने वाली करुणा अन्तरराष्ट्रीय संस्था, चेन्नई की अपनी विशिष्ट पहचान है। इसकी विभिन्न राज्यों में शाखाएँ हैं। इस संस्था का उद्देश्य बालमन में प्राणिमात्र के प्रति प्रेम, अहिंसा, दया, सौहार्द, पशु-कल्याण, पर्यावरण चेतना, नैतिकता, व्यसनमुक्ति, देशभक्ति की भावनाओं का बीजारोपण कर उन्हें जागरूक सुनागरिक बनाना है। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु समस्त विद्यालयों में करुणा क्लबों का गठन किया जाता है। जो भी इस कार्य से जुड़ना चाहे, वह सम्पर्क करें- श्री कैलाशमलजी दुगड़, अध्यक्ष-09841008585, श्री सुरेशजी कांकरिया, महामंत्री-094440-24446, Email-info@ karunainternational.org

संक्षिप्त-समाचार

जोधपुर- श्री जैन रत्न युवक परिषद्, जोधपुर द्वारा 21 मई से 07 जून तक धार्मिक एवं नैतिक शिक्षण शिविर आयोजित किया गया। गत कुछ वर्षो से शिविर को जोधपुर के विभिन्न केन्द्रों पर आयोजित किया जा रहा था, किन्तु इस वर्ष शिविर को दो वर्गों में विभाजित किया गया। प्रथम वर्ग में 8 वर्ष से कम आयु के लगभग 325 बच्चों को अपने-अपने केन्द्रों पर ही ज्ञानार्जन करवाया गया। दूसरे वर्ग में 8 वर्ष से अधिक आयु के बालक-बालिकाओं को एक केन्द्र पर ही सुनियोजित आवागमन के साधनों के द्वारा लाकर विद्वान् प्रशिक्षकों द्वारा शिक्षण प्रदान किया गया। महावीर पब्लिक स्कूल के प्रांगण में आयोजित इस शिविर में जोधपुर शहर के सभी क्षेत्रों के 325 बालक-बालिकाओं ने शिविर में भाग लिया। सभी बच्चों को शिक्षण बोर्ड द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रमानुसार 1 से 8 कक्षाओं में वर्गीकृत कर चार कालांशों में अध्ययन कराया गया।

शिविर में प्रथम प्रतियोगिता के रूप में धर्मकथा का आयोजन किया गया, जिसमें सभी शिविरार्थियों को भाग लेना अनिवार्य था। दूसरी प्रतियोगिता 'नाटिकाओं एवं धर्म संसद' के रूप में की गई, जिसमें 'विजय सेठ-विजया सेठानी', 'आचार्य हस्ती : जीवन झांकी', 'भृगु पुरोहित' तथा 'ऐसा अपना घर हो' विषयक नाटिकाएं तथा 'जैन धर्म ही क्यों' एवं 'श्रावक आगम पढ़ने का अधिकारी है' विषयक धर्म संसद का मंचन किया गया। विभिन्न 7 विषयों पर पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन भी हुआ। इसमें बच्चे अति उत्साहित थे। 6 एवं 7 जून को विद्यालय के प्रांगण में 215 पोस्टरों की विषयवार प्रदर्शनी लगाई गई।

शिविर समापन समारोह में विशिष्ट अतिथि अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जितेन्द्र जी डागा तथा सम्माननीय अतिथि वरिष्ठ स्वाध्यायी श्री अरूण जी मेहता थे। श्री डागाजी ने लघु कथा के माध्यम से बच्चों को ज्ञान सीखने के साथ ही उसे संरक्षित तथा संवर्द्धित करने की बात कही। शिविर संयोजक श्री नवरतन जी डागा ने शिविर रिपोर्ट प्रस्तुत की। समापन समारोह का संचालन श्री प्रकाशजी सालेचा ने किया।

-नवरतन डागा, शिविर संयोजक

जयपुर- श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, जयपुर के वर्ष 2015-2018 की कार्यकारिणी के चुनाव निर्विरोध निम्न प्रकार सम्पन्न हुए- **अध्यक्ष-** श्री प्रकाशचन्दजी हीरावत, **उपाध्यक्ष-** श्री विजयचन्दजी लोढ़ा, **मंत्री-** श्री विमलचन्दजी डागा, **संयुक्त मंत्री-** श्री सुरेशचन्दजी कोठारी, **कोषाध्यक्ष-** श्री अशोक जी सेठ चुने गये।

-सुरेशचन्द कोठारी, संयुक्त मंत्री

बैंगलोर- श्री कर्नाटक जैन स्वाध्याय संघ के तत्त्वावधान में पंच दिवसीय शिक्षण संस्कार शिविर 13 से 17 मई 2015 तक हुआ। शिविर में 235 सदस्यों ने भाग लिया। शिविर में शिक्षण के साथ-साथ चित्रकला, भाषण, स्मरण-स्पर्धा, गीत-स्पर्धा आदि कार्यक्रम भी रखे गये।

नागपुर- श्रमण संस्कृति के मर्मज्ञ विद्वान्, पालि-प्राकृत-संस्कृत के भाषाविद्, जैन विद्वानों में अग्रणी, श्रमण विद्या के प्रति समर्पित डॉ. भागचन्द्र जैन 'भास्कर' का 28 जून 2015 को अमृतमहोत्सव व गौरवग्रन्थ समर्पण समारोह आयोजित किया गया। जैन एवं बौद्ध की प्राचीन पाण्डुलिपियों का आपने सम्पादन-अनुवाद कर आने वाली पीढ़ियों के लिए द्वार खोल दिए हैं। डॉ. जैन ने 'जैनिज्म इन बुद्धिस्ट लिटरेचर', 'महावीर और उनका चिन्तन', 'श्रमण दर्शन' 'जैनदर्शन और संस्कृति का इतिहास' जैसे 29 ग्रन्थों की रचना की है। आपको राष्ट्रपति पुरस्कार, कालिदास संस्कृत विश्वविद्यालय की ओर से महामहोपाध्याय जैसी उपाधियों से सम्मानित किया गया। सम्मान समारोह में मुख्यातिथि सांसद विजय दर्डा, विशिष्ट अतिथि मध्यप्रदेश के वित्तमंत्री जयंत मलैया एवं अध्यक्ष दिगम्बर जैन महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री निर्मलकुमार सेठी थे।

मुम्बई- श्री महावीर जैन विद्यालय, मुम्बई द्वारा माणक भंसाली चेरिटेबल ट्रस्ट के सौजन्य से प्रत्येक दो वर्ष में आयोज्यमान 23 वां अखिल भारतीय जैन साहित्य समारोह फरवरी 2016 में आयोजित होने जा रहा है। इस समारोह में पूरे भारत से जैन विद्वान् एकत्रित होंगे। इसमें चार विषयों पर शोध-पत्र प्रस्तुत होंगे- 1. जैनागम साहित्य पर लिखित साहित्य, 2. जैन तीर्थ साहित्य, 3. बारह भावना, 4. जैन सज्झाय। इसमें भाग लेने के इच्छुक विद्वान् या स्वाध्यायी निम्न पते पर सम्पर्क करें- श्री महावीर जैन विद्यालय, द्वारा श्री कच्छी विशा ओसवाल जैन

महाजन वाडी, दूसरी मंजिल, 99/101, केशवजी नायक रोड़, चिंचबंदर, मुम्बई-400009 (महा.), फोन नं. 022-23759179, 23759399, Email-hosmjv @rediffmail.com

जोधपुर- केन्द्रीय सुधर्म जैन ग्रन्थालय एवं शोध संस्थान के तत्त्वावधान में 19 जुलाई 2015 को **'जैनदर्शन में सम्यक्त्व की अवधारणा'** विषय पर द्विमासिक विचारगोष्ठी का आयोजन किया गया। विचारगोष्ठी के प्रमुख वक्ता, जिनवाणी मासिक पत्रिका के मानद् सम्पादक एवं जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर के संस्कृत विभाग के प्रो. धर्मचन्द जैन ने कहा कि व्यक्ति की दृष्टि के अनुसार ही उसका जीवन होता है। यह दृष्टि आगम में तीन प्रकार की कही गई है- सम्यक्, मिथ्यात्व और मिश्र। सम्यक्त्व और सम्यग्दर्शन शब्द एक दूसरे के पर्याय हैं। सम्यक्त्व तीन प्रकार का है- क्षायिक सम्यक्त्व, औपशमिक सम्यक्त्व और क्षायोपशमिक सम्यक्त्व। ''सम्मत्तदंसी न करेइ पावं'' सम्यक्त्वी पाप कार्य नहीं करता है। क्योंकि उसकी सोच व्यापक और निर्मल होने लगती है। सम्यक्त्वी की पाँच पहचान बताई गई हैं- शम, संवेग, निर्वेद, अनुकम्पा एवं आस्तिक्य। उन्होंने सम्यक्त्वी की दस रुचियाँ और आठ अंगों का विवेचन भी किया तथा आगमिक प्रमाणों के आधार अपनी प्रस्तुति दी। गोष्ठी की अध्यक्षता श्री अखिल भारतीय सुधर्म जैन संस्कृति रक्षक संघ के अध्यक्ष श्री विनयकुमार जी जैन ने की। गोष्ठी के अन्त में हुई चर्चा में श्री जयप्रकाश जी जैन, श्री अमृत जी गोलिया, श्री एस. आर. भण्डारी, श्री कैलाश जी सिंघवी, श्री विद्यासागरजी आदि श्रोताओं ने भाग लिया। *-डॉ. पवनकुमार जैन*

जोधपुर- श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, जोधपुर द्वारा 16 से 21 जून 2015 तक धार्मिक एवं नैतिक शिक्षण शिविर साध्वीप्रमुखा महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा आदि ठाणा के पावन सान्निध्य में आयोजित किया गया, जिसमें लगभग 100 शिविरार्थियों ने भाग लेकर ज्ञानार्जन किया। शिविर में आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर के पाठ्यक्रमानुसार कक्षा 1 से 9 तक का अध्ययन कराया गया। अध्ययन-अध्यापन के रूप में अनुभवी एवं विशिष्ट प्रशिक्षकों का सहयोग प्राप्त हुआ। शिविर समापन के अवसर पर जिनवाणी के प्रधान सम्पादक डॉ. धर्मचन्द जी जैन ने भी श्राविकाओं को प्रेरणास्पद उद्बोधन प्रदान किया। *-उषा बोहरा, सचिव*

बधाई

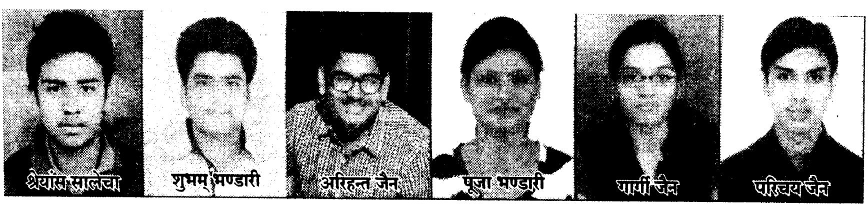

जोधपुर- श्री श्रेयांस सालेचा सुपुत्र श्रीमती कविता-सुरेशजी सालेचा एवं सुपौत्र श्रीमती खम्मादेवी-स्व. श्री भीकमचन्दजी सालेचा ने सी.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की। आप श्रीमती रतनबाईजी-डॉ. चंचलमल जी चोरडिया के दौहित्र है। आपकी माताजी महिला मण्डल, गुलाबनगर-जोधपुर की संयोजिका है।

ब्यावर- श्री शुभम् भण्डारी सुपुत्र श्रीमती चन्द्रा-नन्दलालजी भण्डारी एवं सुपौत्र श्रीमती सुशीलादेवी-मूलचन्दजी भण्डारी ने सी.ए. की परीक्षा प्रथम प्रयास में उत्तीर्ण की।

ब्यावर- सुश्री भव्या भण्डारी सुपुत्री श्रीमती नीरा-राजेशजी भण्डारी एवं सुपौत्री श्रीमती सुशीलादेवी-मूलचन्दजी भण्डारी ने CBSE की 10 वीं की परीक्षा में 9.8 सी.जी.पी.ए. प्राप्त किए।

कोटा- होनहार युवक श्री अरिहन्त जैन सुपुत्र श्री शैलेन्द्र जैन एवं सुपौत्र स्व. श्री मक्खनलालजी जैन ने IIT-JEE 2015 की परीक्षा में सम्पूर्ण भारत में 152 वां स्थान प्राप्त किया। आपने आई.वाइ.एम.सी. में दो स्वर्णपदक प्राप्त किए तथा किशोर वैज्ञानिक प्रोत्साहन स्कोलर-2015 व नेशनल टेलेंट सर्च एक्जामिनेशन-2013 में सफलता प्राप्त की। इसके अतिरिक्त भी आपने कई प्रतियोगिताओं में अपना स्थान बनाया है।

जोधपुर- सुश्री पूजा सुपुत्री श्री अनिलरूपचन्दजी भण्डारी एवं सुपौत्री श्रीमती चंचलबाई-आनन्दरूपचन्दजी भण्डारी ने सी.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की है।

अलवर- सुश्री गार्गी जैन सुपुत्री श्रीमती संगीता-रवीन्द्रजी जैन ने आई.ए.एस. परीक्षा में पूरे भारत में 45 वां स्थान प्राप्त कर जैन समाज का गौरव बढ़ाया है।

नई दिल्ली- श्री परिचय जैन सुपुत्र श्री नरेन्द्रकुमारजी जैन (चौरू वाले) ने सी.ए. फाइनल की परीक्षा उत्तीर्ण की तथा वर्तमान में M/s. GRANT THORNTON में कार्यरत हैं।

श्रद्धाञ्जलि

जोधपुर- वात्सल्यमूर्ति सुश्राविका श्रीमती रतनदेवीजी मेहता धर्मपत्नी श्री पदमचन्दजी

मेहता का 8 जुलाई 2015 को 69 वर्ष की वय में स्वर्गारोहण हो गया। वे अनन्य गुरु-भक्त श्राविका थीं तथा संघ की प्रवृत्तियों के पोषण में उनका सक्रिय सहयोग रहा। उनके जीवन में करुणा, प्रेम, मैत्री, उदारता, मधुरता जैसे विशिष्ट सद्गुण थे। घर आए का आतिथ्य-सत्कार करना और स्वधर्मी भाई-बहिनों की सेवा में सक्रियता रखना उनकी अनूठी पहचान थी। परोपकारी संस्थाओं को वे मुक्तहस्त से सहयोग करने में अग्रणी रहती थीं। आप सामायिक-स्वाध्याय के साथ व्रत-नियमों के परिपालन में सजग रहती थीं। हर सफल व्यक्ति के पीछे सन्नारी की

महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है, श्राविकारत्न की भावनानुसार सुश्रावक श्री पदमचन्दजी मेहता गजेन्द्र निधि के ट्रस्टी बने। श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर के विभिन्न पदों पर सेवाएँ देकर वर्तमान में परामर्शदाता के रूप में दायित्व का निर्वहन कर रहे हैं।

जयपुर- कर्मशील व्यक्तित्व के धनी, प्रसिद्ध अधिवक्ता सुश्रावक श्री उपेन्द्रनाथजी भण्डारी (यू.एन.भण्डारी) सुपुत्र स्व. श्री शम्भूनाथजी भण्डारी का 28 जून 2015 को परलोकगमन हो गया। आपका जीवन सरलता, मधुरता, उदारता व सेवाभावना जैसे सद्गुणों से सुगन्धित था। संघ एवं समाज के प्रति आपका समर्पण प्रशंसनीय ही नहीं अपितु अनुकरणीय है। आपका सम्पूर्ण परिवार आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा., आचार्यश्री हीराचन्द्रजी म.सा., उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. एवं संत-सतीवृन्द के प्रति समर्पित है। आपकी धर्मसहायिका सुश्राविका श्रीमती कमलाजी भण्डारी भी तप-त्यागमय जीवन जीते हुए संत-सती मण्डल की सेवा में तत्पर रहती हैं। आपके पुत्र सुश्रावक न्यायमूर्ति श्री मुनीश्वरनाथजी भण्डारी (श्री मनीष जी भण्डारी) एवं पुत्रवधू सुश्राविका श्रीमती करुणाजी भण्डारी भी विरासत में प्राप्त संस्कारों का अच्छी तरह निर्वहन कर रहे हैं। आप भी संघ एवं समाज में अपनी भागीदारी बनाए हुए हैं।

हिण्डौन- धर्मानुरागी सुश्राविका श्रीमती विमलादेवी जी जैन धर्मसहायिका श्री महेशचन्द जी जैन का 60 वर्ष की वय में 15 जून 2015 को देवलोकगमन हो गया। आप प्रतिदिन सामायिक-स्वाध्याय करती थीं। संत-सतीवृन्द की सेवा-भक्ति में आप परिवार सहित सदैव तत्पर रहती थीं। आप महासती श्री सुयशप्रभाजी म.सा. की सांसारिक चाचीजी थीं।

दिल्ली- सरल एवं गम्भीरमना सुश्रावक श्री धर्मपाल जैन (पटियाला वाले) सुपुत्र श्री मोहनलालजी जैन का 11 जून 2015 को देवलोकगमन हो गया। आप नित्य सामायिक से अपनी दिनचर्या प्रारम्भ करते थे। आपने अनेक सामाजिक, धार्मिक कार्यों में निःस्वार्थ भावना से सहयोग किया। आप सजग, शान्तमूर्ति, सरल-स्वभावी एवं उदारवृत्तियों से परिपूर्ण थे।

जोधपुर- श्रीमती कमलादेवीजी धर्मपत्नी श्री मिनकराजजी चाम्बड़ मेहता का 19 मई 2015 को 77 वर्ष की आयु में परलोकगमन हो गया। संत-सती के प्रति आपकी गहरी श्रद्धा-भक्ति थी। आप नियमित सामायिक-स्वाध्याय करती थीं।

पीपाड़सिटी- मधुर स्वभावी, मितभाषी, सुश्रावक श्री प्यारेलालजी गुन्देचा का 85 वर्ष की वय में 15 जुलाई 2015 को मुम्बई में स्वर्गवास हो गया। आपका जीवन सहज, सरल, चिंतनशील और धर्मनिष्ठ रहा।

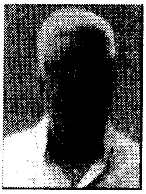

अहमदनगर- सुश्रावक श्री विजय सिमरतमलजी बोरा का 65 वर्ष की आयु में 25 जून 2015 को निधन हो गया। आप मिलनसार एवं शांत स्वभावी थे। आपकी भावनानुसार मरणोपरांत नेत्रों का दान किया गया।

जयपुर- श्रद्धानिष्ठ सुश्राविका श्रीमती पारसबाईजी धर्मसहायिका श्री भागचन्दजी नवलखा का 25 जून 2015 को स्वर्गवास हो गया। आपका जीवन सहज, सरल एवं सादगी से परिपूर्ण था। आप संत-सतियों की सेवा में सदैव अग्रणी रहती थीं।

जयपुर- सुश्रावक श्री जीवराजजी सुराणा का 13 जुलाई 2015 को परलोकगमन हो गया। आप धर्मनिष्ठ, कर्तव्यपरायण थे तथा सेवाभावना, विनम्रता आदि अनेक गुणों से ओतप्रोत थे।

जयपुर- नागौर निवासी सुश्रावक श्री मनमोहनचन्दजी लोढ़ा सुपुत्र स्व. श्री परसनचन्दजी लोढ़ा का समाधि भावों में 1 जून 2015 को 87 वर्ष की वय में परलोकगमन हो गया। आप नियमित 5-6 सामायिक व स्वाध्याय करते थे। नागौर में संत-सतियों के पधारने पर सेवा का लाभ लेते थे।

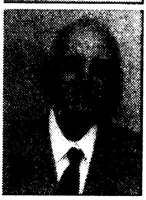

बैंगलोर- सुश्रावक श्री उत्तमचन्दजी चौपड़ा सुपुत्र स्व. अमोलकचन्दजी चौपड़ा का 65 वर्ष की वय में 17 जून 2015 को स्वर्गवास हो गया। आप उदारमना, शिक्षाप्रेमी, परोपकारी थे।

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं के प्रति सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जिनवाणी-परिवार तथा अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं।

सूचना- अखिल भारतीय श्री जैन रत्न बहू-बालिका मण्डल के तत्त्वावधान में 'संस्कारम्' पुस्तक पर आधारित प्रश्न पुस्तिका 'संस्कारम् आराधना' को जमा कराने की अंतिम तिथि 15 अगस्त 2015 से बढ़ाकर **30 अगस्त 2015** कर दी गई है। *-विधि कोठारी, महासचिव*

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति हेतु आवेदक छात्र अपना आवेदन-पत्र (पृष्ठ 125 पर प्रकाशित) को भरकर साथ में एक अलग पृष्ठ पर छात्रवृत्ति हेतु फीस, पुस्तकें एवं अन्य खर्चों का अलग-अलग विवरण लिखकर भेजें। अतिरिक्त खर्चे का कारण भी लिखें। आवेदन पत्र के साथ अंकतालिका, बोर्ड परीक्षा की अंकतालिका, वार्षिक आय प्रमाण-पत्र, वर्तमान कक्षा में प्रवेश का प्रमाण, पहचान पत्र/फीस-रसीद संलग्न करें। आवेदन-पत्र के सम्बन्ध में यदि कोई जानकारी देखनी हो तो जिनवाणी के जुलाई 2015 अंक का पृष्ठ 124 देखें।

साभार-प्राप्ति-स्वीकार

4000/- मण्डल सत्साहित्य की 20 वर्षीय सदस्यता हेतु प्रत्येक

773 श्री अशोककुमारजी पारख, महावीरनगर, जोधपुर (राज.)

1000/-जिनवाणी पत्रिका की आजीवन (अधिकतम 20 वर्ष) सदस्यता हेतु प्रत्येक

क्रम संख्या 15443 से 15465 तक 23 सदस्य बने।

'जिनवाणी' मासिक पत्रिका हेतु साभार प्राप्त

21000/- श्री पदमचन्दजी, प्रदीपकुमारजी मेहता, जोधपुर, श्रीमती रतनदेवीजी मेहता के 8 जुलाई 2015 को स्वर्गगमन होने पर उनकी पावन स्मृति में।

11000/- श्री श्याम जी मोदी, हैदराबाद, श्रीमती सुजाताजी मोदी की प्रथम पुण्य स्मृति दिवस पर।

5100/- श्री मनीषजी, उज्ज्वलजी भंडारी, जयपुर, वरिष्ठ अधिवक्ता पूज्य पिताजी श्री यू.एन.जी भंडारी का 28 जून, 2015 को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

5000/- श्री रंगरूपमलजी एवं श्रीमती कौशल्याजी चोरड़िया, चेन्नई, सौ.कां. माधुरीजी का 30 मई 2015 को चि. दीपकजी के संग शुभ विवाह सुसम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

3200/- श्री सुभाषचन्दजी, अशोक कुमारजी, विपिनजी, पुनीतजी, यशजी धोका, मैसूर, श्री सुभाषचन्दजी धोका की 32वीं सालगिरह के उपलक्ष्य में।

3001/- श्री भागचन्दजी, राजेशजी, रिमेशजी नवलखा, जयपुर, श्रीमती पारसबाईजी धर्मसहायिका श्री भागचन्दजी नवलखा का 23 जून 2015 को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में।

2500/- श्री सोहनलालजी, बुधमलजी, सम्पतराजजी, राजनजी बागमार, मैसूर, श्री अभिषेकजी बागमार की शादी की प्रथम वर्षगाँठ के उपलक्ष्य में एवं श्री रोहितजी बागमार के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

2111/- श्री प्रकाशचन्दजी, पंकज कुमारजी, विशालजी जैन (जलगाँव वाले), जयपुर, नूतन गृहप्रवेश के जाप के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

2100/- श्री गौतमचन्दजी, ललितजी, लोकेशजी लोढ़ा, जयपुर, सुश्रावक श्री मनमोहनचन्दजी सुपुत्र स्व. श्री परसनचन्दजी लोढ़ा (नागौर निवासी) का 1 जून 2015 को समाधिभाव में प्रयाण हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में।

2100/- श्री रामदयालजी, उम्मेदचन्दजी सर्राफ, सवाईमाधोपुर, श्री रामदयालजी के सुपौत्र एवं श्री लालचन्दजी के सुपुत्र श्री अरिहन्त जी जैन के शुभ-विवाह के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

2001/- श्री भागचन्दजी, राजेशजी, रिमेशजी नवलखा, जयपुर, श्रीमती पारसबाईजी धर्मसहायिका श्री भागचन्दजी नवलखा का 23 जून 2015 को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में

जीवदया हेतु भेंट।

1101/- श्री गोविन्द सहायजी जैन (चकेरी वाले), सवाईमाधोपुर, सुपुत्री सुश्री अदितिजी जैन के जिला मेरिट में 10 वाँ स्थान तथा कुमारी ईशाजी जैन के सैकेण्डरी में 73.33% अंक प्राप्त करने की खुशी में।

1101/- श्री उत्तमचन्दजी जैन (सिंगौर वाले), सवाईमाधोपुर, चि. राहुलजी का 07 मई 2015 को सानन्द विवाहोत्सव सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

1101/- श्री चिरंजीलालजी, राजेशकुमारजी (सुनारी वाले), सवाईमाधोपुर, सुपुत्र के विवाहोत्सव की खुशी में सप्रेम भेंट।

1101/- श्री जम्बूकुमारजी, जशकरणजी, अलीगढ़-रामपुरा, सुपुत्र के विवाहोत्सव की खुशी में सप्रेम भेंट।

1101/- श्री प्रेमबाबूजी, सुरेशबाबूजी, पदमबाबूजी (एण्डवावाले), सवाईमाधोपुर, मातुश्री श्रीमती रामकन्यादेवीजी की पुण्य स्मृति में भेंट।

1100/- श्री हेमराजजी, पारसचन्दजी (चिवारा वाले), सवाईमाधोपुर, पूज्य पिताजी श्री रूपचन्दजी जैन की पुण्य स्मृति में भेंट।

1100/- श्रीमती शशिजी जैन, नितिनजी जैन, रोहिणी-दिल्ली, श्री धर्मपालजी जैन सुपुत्र श्री मोहनलालजी जैन (पटियाला वाले) का 11 जून 2015 को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

1100/- श्री नरेन्द्र कुमारजी जैन (चौरू वाले), नई दिल्ली, सुपुत्र श्री परिचयजी जैन ने सी.ए. फाइनल की परीक्षा अच्छे अंकों से उत्तीर्ण करने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री विनयचन्दजी कवाड, मुम्बई, श्रीमती कमलादेवी कवाड की द्वितीय पुण्य तिथि के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री हीरालालजी नीरजजी जैन, भरतपुर, चि. धीरज कुमारजी जैन का शुभ विवाह 5 जून, 2015 को सौ.कां. कुसुमजी (खुशबू) के संग सुसम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री कांतिलालाजी पटवा, सोजतसिटी, श्रीमती ताराकंवरजी की शादी की वर्षगाँठ एवं सुपुत्र श्री ज्ञानप्रकाशजी पटवा के जन्मदिवस पर सप्रेम भेंट।

1100/- श्री ए. शांतिलालजी, मोहनलालजी चौपड़ा, बैंगलोर, सुश्रावक श्री उत्तमचन्दजी सुपुत्र स्व. श्री अमोलकचन्दजी चौपड़ा का 17 जून 2015 को निधन हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में।

1100/- श्री धनरूपचन्दजी, अमित कुमारजी मेहता, बेंगलोर, रिषिकाजी मेहता के जन्म दिवस के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री रणजीतकुमारजी चेतनकुमारजी बम्ब, निमाज, हाल मुकाम विल्लीपुरम, श्रीमती केलीबाई धर्मपत्नी स्व. श्री किशनलालजी बम्ब के स्वर्गगमन पर उनकी पावन स्मृति में।

1100/- श्री राजेन्द्र जी, सौरभ जी चोरडिया, बैंगलुरु।

1100/- श्री प्रकाशचन्दजी, प्रवीणजी जैन, भरतपुर, जिनवाणी सहयोगार्थ।

1100/- श्री नत्थीलालजी, मुकेशकुमारजी जैन 'पानवाले', मण्डावर, जिला-दौसा(राज.), सप्रेम।

1100/- श्री मूलचन्दजी भण्डारी, ब्यावर, श्री शुभम भण्डारी सुपुत्र श्रीमती चन्द्रा-नन्दलालजी भण्डारी के सी.ए. उत्तीर्ण करने के उपलक्ष्य में।

1100/- आनन्दरूपचन्द भण्डारी चेरिटेबल ट्रस्ट, जोधपुर, सुश्री पूजा भण्डारी सुपुत्री श्री अनिलरूप चन्दजी भण्डारी के सी.ए. उत्तीर्ण करने के उपलक्ष्य में।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के सत्साहित्य के लिए अर्थसहयोग

51000/- श्री हेमन्तजी कोठारी, जयपुर, चि. मनीषजी कोठारी का शुभ विवाह 21 जनवरी, 2015 को सुसम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

41000/- पूर्व न्यायाधिपति श्री जसराजजी चौपड़ा, मानसरोवर-जयपुर, सुपौत्री सौ.कां. शगुनजी सुपुत्री श्री आनन्दजी चौपड़ा का शुभ विवाह चि. आशीष के संग 07 जून 2015 को सुसम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

31000/- श्री बी. बुधमलजी बोहरा, चेन्नई, सुपुत्री सौ.कां. पूजाजी का शुभ विवाह 28 अप्रेल 2015 को चि. मोहितजी चौधरी के संग सुसम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

25000/- मैसर्स अरिहंत धर्मार्थ न्यास, अलवर, मंडल से प्रकाशित होने वाले सत्साहित्य हेतु भेंट।

अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर

संघ-सेवा सोपान के अन्तर्गत साभार प्राप्त

21000/- श्री मुकेशजी के. चोरडिया, पारोला, जिला-जलगांव (महा.), संघ सहायतार्थ।

2000/- श्री एस.के. मेहता, जोधपुर, जीवदया हेतु।

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर हेतु साभार प्राप्त

21000/- श्री पदमचन्दजी प्रदीपकुमारजी मेहता, जोधपुर, श्रीमती रतनदेवीजी मेहता के 8 जुलाई 2015 को स्वर्गगमन होने पर उनकी पावन स्मृति में।

5000/- श्री रितिक जी चोरडिया, सुपौत्र श्री पारसमल जी चौरडिया-उज्जैन।

2100/- श्री कल्याणमल प्रकाशमल चोरडिया ट्रस्ट, चेन्नई।

गजेन्द्र निधि द्वारा आचार्य हस्ती स्कॉलरशिप फण्ड

(अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा क्रियान्वित)

दानदाता एवं दान एकत्रित करने वालों की सूची

100000/- श्री दुलीचन्दजी बाघमार, चेन्नई।

24000/- श्री विजयराजजी आनन्दजी धारीवाल, कोलार-कर्नाटक।

24000/- श्री पदमचन्दजी, प्रदीपकुमारजी मेहता, जोधपुर, स्व. श्रीमती रतनदेवीजी मेहता का 08 जुलाई 2015 को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में।

24000/- सुश्री श्वेता एवं सुश्री स्मिता बुरड़ सुपुत्रियाँ श्री मुकेशजी बुरड़, शिरपुर (महा.)। इस योजना

की लाभार्थी सुश्री श्वेता एवं सुश्री स्मिता दोनों ने अपनी नियुक्ति होने पर प्रथम वेतन में से दो छात्रों की राशि इस योजना को प्रदान की।

12000/- श्री निर्मल जी झामड़, जयपुर।

12000/- श्रीमती सुनीता कुमारी जैन, जयपुर, अपनी पूज्य माताजी स्व. श्रीमती गेंदबाईजी की पुण्य स्मृति में।

12000/- श्री रिखबचन्दजी बम्ब, वेल्लीपुरम (तमिलनाडु) धर्मसहायिका श्रीमती प्रकाशबाईजी बम्ब की पुण्य स्मृति में।

3000/- श्री प्रकाशजी, प्रवीणजी जैन, भरतपुर (राज.), श्रीमती पुष्पाजी जैन के वर्षीतप के उपलक्ष्य में।

छात्रवृत्ति-योजना में इच्छुक दानदाता एक छात्र के लिए 12000/- रु. अथवा उनके गुणक में जितनी छात्रवृत्तियाँ देना चाहें तद्नुसार दानराशि 'गजेन्द्र निधि आचार्य हस्ती स्कॉलरशिप फण्ड' योजना के नाम चैक या ड्राफ्ट(Donations to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of IncomeTax Act 1961) से निम्नांकित पते पर भेजने का कष्ट करें- ***Sh. B. Budhmal Bohra**, Poojaa Foundation, W-570, Park Road, Annanagar West Extn., Chennai-600101 (Mob. 9543068382)*

भूल सुधार

माह जुलाई-2015 में 'जिनवाणी हेतु साभार' के अन्तर्गत श्रीमती मधुजी राजेन्द्रजी सिंघवी (जोधपुर वाले) दिल्ली की ओर से जो राशि 10000/- दी गई थी, वह समस्त परिवार की ओर से है।

आगामी पर्व तिथि

श्रावण कृष्णा 14, गुरुवार	13.08.2015	चतुर्दशी
श्रावण कृष्णा 30, शुक्रवार	14.08.2015	पक्खी, आचार्य श्री शोभाचन्द्र जी म.सा. की 89 वीं पुण्य तिथि
श्रावण शुक्ला 8, रविवार	23.08.2015	अष्टमी
श्रावण शुक्ला 14, शुक्रवार	28.08.2015	चतुर्दशी
श्रावण शुक्ला 15, शनिवार	29.08.2015	पक्खी
भाद्रपद कृष्णा 8, शनिवार	05.09.2015	अष्टमी
भाद्रपद कृष्णा द्वितीय 13, शुक्रवार	11.09.2015	पर्युषण प्रारम्भ
भाद्रपद कृष्णा 14, शनिवार	12.09.2015	चतुर्दशी
भाद्रपद कृष्णा 30, रविवार	13.09.2015	पक्खी
भाद्रपद शुक्ला 5, शुक्रवार	18.09.2015	सम्वत्सरी महापर्व
भाद्रपद शुक्ला 8, सोमवार	21.09.2015	अष्टमी

गजेन्द्र निधि द्वारा संचालित

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

(अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा क्रियान्वित)

प्रधान कार्यालय : घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001 (राज.) फोन 0291-2641445, फैक्स : 2636763

Application Form 20.....20..........

Selection No. | SCHEME I | SCHEME II

Personal Details:

Photo Compulsory

Name of the Student ....

Father's Name Shri ....

Fathers Occuption ....Annual Income of the Family...........................

No. of Members in the family............... Gautra/Surname .... Native Place..............

Residential Address of the Applicant ....

....

Distt. ....State................................. Pincode No. ....DOB.........................

Ph. No. STD code.......... Home.................. Mob. ....E-mail:.............................

Details of your Bank Account : Account Holder's Name...

Bank Name... Branch Name...

IFSC Code................. A/c No..

Education Details:

Present Education........................ which standard you have passed Last Year......................

Year of Passing........... Name of the School........................... Marks Obtained..................

Percentage (%)...................... Annual Tution Fees for the Education/Course......................

Spiritual Education:

1. Have you appeared A.B.S.J.R.A. Shikshan Board Exam if Yes Month........................
   passed class.......... Roll No. .... Marks Obtained....................(Photo copy of Marks Sheet)
2. **धार्मिक गतिविधि:**

   सामायिक (मासिक) .... नवकार मंत्र की माला जपते हैं- हाँ / नहीं.................

   पर्युषण सेवा .... प्रतिक्रमण- पूर्ण है / अपूर्ण है ....

   थोकड़े .... अन्य ज्ञान ....

Reference:

1. Mention If you belong to veer pariwar and employee of any organization of Ratansangh Details: ....
2. Particular's of Senior Shravak of official of Ratansangh for reference, his name, Address, Signature and phone No. & Mobile No. ....(If you want you can attach sharvakji's letter with this form)

Declaration: All the information given above are true & correct. We have read & agree the Rules & Regulation of this Scholarship Scheme.

Parent's Sign. **Student Sign.**

The application should be sent to following address:

B. Budhmal Bohra, "Pooja Foundation",

Door No. 921, 1st Floor, Poonamalle High Road, EVR 1st Lane, Chennai-600084(TN)

पर्युषण पर्वाराधना हेतु स्वाध्यायी आमन्त्रित कीजिए

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर विगत 69 से भी अधिक वर्षों से सन्त-सतियों के चातुर्मासों से वंचित गाँव/शहरों में 'पर्वाधिराज पर्युषण पर्व' के पावन अवसर पर धर्माराधन हेतु योग्य, अनुभवी एवं विद्वान् स्वाध्यायियों को बाहर क्षेत्र में भेजकर जिनशासन एवं समाज की महती सेवा करता आ रहा है। इस वर्ष भी उन क्षेत्रों में जहाँ जैन सन्त-सतियों के चातुर्मास नहीं हैं, स्वाध्यायी बन्धुओं को भेजने की व्यवस्था है। इस वर्ष **पर्युषण पर्व 11 से 18 सितम्बर 2015** तक रहेंगे। अतः देश-विदेश के इच्छुक संघ के अध्यक्ष/मंत्री निम्नांकित बिन्दुओं की जानकारी के साथ अपना आवेदन पत्र दिनांक **30 अगस्त 2015** तक इस कार्यालय को अवश्य प्रेषित करने का श्रम करावें। पहले प्राप्त आवेदन पत्रों को प्राथमिकता दी जायेगी।

1. गांव/शहर का नाम.......................जिला.............प्रान्त................
2. श्री संघ का नाम व पूरा पता...
3. संघाध्यक्ष का नाम, पता मय फोन नं...
   ....
4. संघ मंत्री का नाम, पता मय फोन नं...
   ....
5. संबंधित जगह पहुंचने के विभिन्न साधन......................................
   ....
6. समस्त जैन घरों की संख्या...
7. क्या आपके यहाँ धार्मिक पाठशाला चलती है?...............................
8. क्या आपके यहाँ स्वाध्याय का कार्यक्रम नियमित चलता है?...............
9. पर्युषण सेवा संबंधी आवश्यक सुझाव..
10. अन्य विशेष विवरण...

आवेदन करने का पता-संयोजक/सचिव, श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, प्रधान कार्यालय-घोड़ों का चौक, जोधपुर- 342001 (राज.) फोन नं. 0291-2624891, फैक्स-2636763, मो.-9460441570(संयोजक), 9461013878(सचिव), 94142-67824, 9462543360(का.प्रभारी), ईमेल-**swadhyaysanghjodhpur@gmail.com**

विशेष- दक्षिण भारत के संघ अपनी मांग श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ शाखा चेन्नई 24/25, **Basin Water Works Street, Sowcarpet, Chennai-600079** के पते पर भी भेज सकते हैं। सम्पर्क सूत्र- श्री सुधीर जी सुराणा, फोन नं. 09380997333 (मोबाइल)044-25295143 (स्वाध्याय संघ)

अलविदा बाईपास सर्जरी

अब बाईपास सर्जरी के बारे में कभी ना सोचियें

काउन्टर पलसेशन थैरेपी

(ई.ई.सी.पी.)

द्वारा प्राकृतिक बाईपास करवायें

काउन्टर पलसेशन थैरेपी (ई.ई.सी.पी.) में क्या होता हैं :-

हृदय रोगी को साधारणतया 35 दिन तक प्रतिदिन एक घंटे की थैरेपी ई.ई.सी.पी. मशीन जो कि एफ.डी.ए., अमेरिका द्वारा मान्यता प्राप्त है, पर दी जाती है । यह थैरेपी ई.ई.सी.पी. मशीन के विशेष प्रकार के बिस्तर पर रोगी को लिटाकर दी जाती है। तीन बड़े हवा से फूलने वाले कफ पैड जो ब्लड प्रेशर उपकरण के कफ पैड की तरह के होते हैं, उन्हें रोगी की पिंडलियों, जांघ एवं कमर के निचले हिस्से पर बाँधा जाता है एवम् इन कफ पैड के इनफ्लेशन एवम् डिफ्लेशन की क्रिया को मशीन से जुड़े कम्प्यूटर द्वारा निर्देशित किया जाता है। इस सारी प्रक्रिया का इलेक्ट्रोकार्डियोग्राफ मशीन के पर्दे पर अवलोकन किया जाता है। मशीन पर उपचार के दौरान कफ पैड के फैलने पर रक्त पूर्ण दबाव से हृदय की ओर जाता है एवं इस दबाव के कारण हृदय के पास सुप्त पड़ी धमनियों में रक्त तीव्र गति से प्रवाहित होकर इन धमनियों को क्रियाशील कर देता है व हृदय को प्रयाप्त मात्रा में रक्त मिलने से व्यक्ति को एन्जिना दर्द (छाती दर्द) नहीं होता हैं। 35 दिन तक यह थैरेपी लेने से हृदय के पास सुप्त पड़ी धमनियाँ स्थायी रूप से खुल जाती है और छोटी-छोटी धमनियां आपस में जुड़कर नई धमनियों का निर्माण करती हैं।

श्रीमती गुलाब कुम्भट मेमोरियल चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा संचालित

समर्पण हार्ट एण्ड हैल्थ केयर सेन्टर

ए - 12, इण्डस्ट्रीयल एस्टेट, उद्योग भवन के पास, न्यू पावर हाऊस रोड, जोधपुर (राज.)

Email : samarpanjodhpur@gmail.com

फोन : 2432525

सम्पर्क : धिरेन्द्र कुम्भट 93147 14030

卐 चारित्र आत्माओं के लिए ट्रस्ट द्वारा नि:शुल्क उपचार 卐

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

अंतर में सच्चाई चाहिए और व्यवहार में सफाई चाहिए, वही प्राणी संसार में अपना आत्म हित कर जगत के सामने आदर्श रख सकता है ।

– आचार्य श्री हीरा

C/o CHANANMUL UMEDRAJ
BAGHMAR MOTOR FINANCE
S. SAMPATRAJ FINANCIERS
S. RAJAN FINANCIERS

218, Ashoka Road, Lashkar Mohalla,
Mysore-570001 (Karanataka)

With Best Compliments from :

C. Sohanlal Budhraj Sampathraj Rajan
Abhishek, Rohith, Saurav, Akhilesh Baghmar

Tel. : 821-4265431, 2446407 (O)
Mo. : 9845126407 (B), 9845580407 (S), 9845113334 (R)

Gurudev

SURANA™
yes, the best TMT RE-BARS

DRI Plant

Electric Arc Furnace

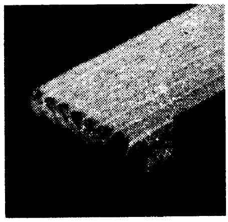
Billets

Rolling Mill

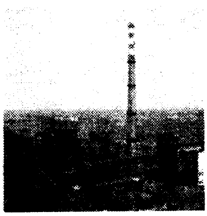
Captive Power Plant

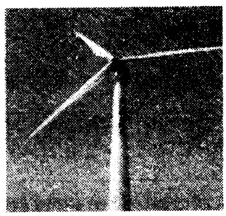
Windmill

With best wishes from

ISO 9001 2008

SURANA INDUSTRIES LIMITED

INTEGRATED STEEL PLANT

MANUFACTURE OF TMT BARS AND ALL KIND OF ALLOY STEEL

29, Whites Road, II Floor, Royapettah, Chennai 600 014/ Ph : 044-28525127 (3 lines) 28525596. Fax: 044-28521143
Email: steelmktg@suranaind.com / www.surana.org.in

STEEL I POWER I MINING

।। श्री महावीराय नमः ।।

हस्ती-हीरा जय जय ! हीरा-मान जय जय !

छोटा सा नियम धोवन का।
लाभ बड़ा इसके पालन का।।

अखण्ड बाल ब्रह्मचारी चारित्र चूड़ामणि, भक्तों के भगवान् 1008
श्री हस्तीमल जी म.सा. के चरणों में हृदय की असीम आस्था से समर्पण
उनके अनमोल खजाने के हीरे-मोती जन-जन के तारणहार
पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा.,
पण्डित रत्न उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा.
एवं समस्त

रत्नाधिक साधु साध्वी मण्डल

के चरण कमलों में भावभरा कोटिशः वन्दन एवं समर्पण...

OUR HUMBLE SALUTATIONS TO THE MOST NOBLE SOULS

PRITHIVIRAJ PREM KUMAR KAVAD
690, Trunk Road, Poonamallee, Chennai - 600 056
Ph. 044-26272196 Mob. : 93810-07273

MANGILAL HARISH KUMAR KAVAD
GURU HASTI THANGA MAALIGAI
(JEWELLERS & BANKERS)
5, Car Street, Poonamallee, Chennai-600 056
Ph. : 044-26272609 Mob. : 95-00-11-44-55

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

प्यास बुझाये, कर्म कटाये
फिर क्यों न अपनायें
धोवन पानी

Narendra Hirawat & Co.

Flat No. 1, Building No. 2, Navjeevan Society,
Senapati Bapat Marg, Matunga (West), MUMBAI-400 016

Trin-Trin

Matunga Office : 022-24370713, 24380713, 66669707
Opera House Office : 022-23669818
Mobile : 09821040899

गजेन्द्र निधि द्वारा संचालित

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद्

।। पुण्यार्जन का सुनहरा अवसर ।।

सदस्यता अभियान से जुड़िये, गुरु भाईयों की शिक्षा में सहयोग करिये।

आदरणीय रत्नबंधुवर,

अत्यधिक हर्ष का विषय है कि छात्रवृत्ति योजना की लाभार्थी सुश्री श्वेता और सुश्री स्मिता सुपुत्री श्रीमान् मुकेश जी बुरड़, शिरपुर के कम्प्यूटर इंजिनियर बनने के बाद शिरपुर में A.R. Patil CBSE School में दोनों प्रोफेसर के पद पर कार्यरत हैं। लाभार्थी छात्राओं ने अपनी भावना से प्रथम वेतन में से एक-एक छात्र की छात्रवृत्ति राशि का सहयोग किया है। संघ द्वारा ऐसी छात्राओं का तहेदिल से धन्यवाद एवं आभार।

छात्रवृत्ति योजना संघ की महत्त्वपूर्ण योजनाओं में से एक योजना है, अब इस योजना की निरन्तरता के लिए समिति के पदाधिकारियों ने निर्णय लिया है कि छात्रवृत्ति योजना में अर्थसहयोग के लिए सदस्यता अभियान प्रारम्भ किया जायेगा, जिसमें सदस्यों द्वारा प्रतिवर्ष अर्थसहयोग किया जायेगा। सदस्यता अभियान का प्रारूप इस प्रकार है –

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना सदस्यता अभियान

हीरक स्तम्भ सदस्य	स्वर्ण स्तम्भ सदस्य
(5 लाख रुपये प्रति वर्ष)	(1 लाख रुपये प्रति वर्ष)

नोट–सदस्यता को ग्रहण करने वाले सभी सदस्यों का नाम जिनवाणी पत्रिका में प्रति माह छात्रवृत्ति योजना के आरक्षित पृष्ठ पर प्रकाशित किया जायेगा।

जो भी अनन्य गुरुभक्त योजना में अर्थ सहयोग करके सदस्यता ग्रहण करना चाहते हैं एवं एक छात्र के लिए 12000/- रुपये अथवा उनके गुणक में छात्रवृत्ति राशि का सहयोग करने के लिए चैक, ड्राफ्ट या नकद राशि द्वारा जमा या भेज सकते हैं। कोष का खाता विवरण इस प्रकार है –

A/c Name- Gajendra Nidhi Acharya Hasti Scholarship Fund
A/c No. 168010100120722
Bank Name & Address – AXIS BANK LTD. Anna Salai,Chennai(TN) IFSC Code – UTIB0000168
PAN No. – AAATG1995J
Note- Donation to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of Income Tax Act 1961.

छात्रवृत्ति योजना में सदस्यता अभियान के सदस्य बनकर योजना की निरन्तरता को बनायें रखने में अपना अमूल्य योगदान कर पुण्यार्जन किया, ऐसे संघनिष्ठ, श्रेष्ठीवर्यों के नामों की सूची –

हीरक स्तम्भ सदस्य (5 लाख रुपये प्रति वर्ष)	स्वर्ण स्तम्भ सदस्य (1 लाख रुपये प्रति वर्ष)
श्रीमान् मोफतराज जी मुणोत, मुम्बई।	श्रीमान् दूलीचंद बाघमार एण्ड संस,चैन्नई।
युवारत्न श्री हरीश जी कवाड़, चैन्नई।	श्रीमान् लक्ष्मीमल जी लोढ़ा,जोधपुर।
श्रीमान् राजीव जी नीता जी डागा, ह्यूस्टन	श्रीमान् दलीचंद जी सुरेश जी कवाड़, पून्नामल्लई।
	गुप्त सहयोगी, चैन्नई।
	श्रीमान् प्रेम जी कवाड़, चैन्नई।
	श्रीमान् राजेश जी विमल जी पवन जी बोहरा, चैन्नई।
	श्रीमान् गणपत जी हेमन्त जी बाघमार, चैन्नई।

सहयोग के लिए चैक या ड्राफ्ट कार्यालय के इस पते पर भेजें-

B.Budhmal Bohra - Poojaa Foundation, Door No. 921, 1st Floor, Poonamallee High Road, EVR 1st Lane, **CHENNAI-600084** (TN)

छात्रवृत्ति योजना से संबंधित जानकारी के लिए सम्पर्क करें- मनीष जैन, चैन्नई (Mob.095430 68382)

K.L. COTTON MILLS

kelico®
remembering quality

स्वाध्याय से ही आप आत्म-निर्माण
और समाज-निर्माण के साथ जिनशासन
को समुन्नत करने में समर्थ होंगे।
-आचार्य हस्ती

KANTILAL SHANTILAL RAJENDRA LUNKER
• PACHPADRA • PALI • ERODE

K.L. ASSOCIATES

'Sanskar', 177-B, Adarsh Nagar, Pali - 306 401 (Raj.)
Mobile: 094141 22757
135, N.M.S.Compound, ERODE - 638 001 (T.N.)
© Off : 3205500, Mobile: 93600 25001

Jai Guru Hasti

Jai Guru Heera *Jai Guru Maan*

शाश्वत सुख के लिए प्रतिपल प्रयत्न करने वाले जीव मुमुक्षु कहलाते हैं।
ये जीव साधक भी हो सकते है और श्रावक भी ।

- आचार्य श्री हीरा

BHANSALI GROUP

Dhanpatraj V. Bhansali

BHANSALI DEVELOPERS

Sharda Bhawan, 2nd Floor, Nandapatkar Road,
Vile Parle (E), Mumbai - 400 057
Tel. : (O) 26185801 / 32940462
E-MAIL : bhansalidevelopers@yahoo.com

।।श्री महावीराय नमः।।

।।जय गुरु हस्ती।। ।।जय गुरु हीरा-मान।।

रात्रि भोजन त्याग रूप व्रत को आत्म-कल्याण के लिए स्वीकार करना चाहिए।
– भगवान महावीर

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

रात्रि भोजन त्याग के साथ-साथ भक्ष्य-अभक्ष्य का विचार करके ही अन्न ग्रहण करना चाहिए।
– आचार्य हस्ती

अहिंसा परमो धर्म

रात्रि भोजन सदोष व तामसी आहार होता है। समाधि का अभिलाषी साधक ऐसी तामसी आहार से दूर ही रहता है।
– आचार्य हीरा

रात्रि भोजन करें या न करें, अगर त्याग नहीं है तो उसे दोष लग ही रहा है। अतः रात्रि भोजन का प्रत्याख्यान करना आवश्यक है।
– उपाध्याय मान

सामूहिक रात्रि भोजन आयोजन त्याग हेतु विनम्र अपील

प्रभु वीर का शासन मिला, गुरु भगवन्तों का सानिध्य मिला ।
श्रद्धा-भक्ति के भाव जगे, सामूहिक भोज रात्रि को तजे ।।

रात्रि भोजन त्याग जैनों की प्रमुख पहचान है।

रात्रि भोजन करना दुर्गति का कारण है।

रात्रि भोजन अनर्थदण्ड व पाप का कारण है।

आओ - हम सब संकल्प करें कि सामूहिक रात्रि भोजन का आयोजन कदापि नहीं करेंगे।

विनीत – **समस्त जैन समाज**

सौजन्य से : मधु कवाड़, चैन्नई

आर.एन.आई. नं. 3653/57 डाक पंजीयन संख्या JaipurCity/413/2015-17
मुद्रण तिथि दिनांक 5 से 8 अगस्त, 2015
वर्ष : 73 ★ अंक : 08 ★ मूल्य : 10 रु.
डाक प्रेषण तिथि 10 अगस्त, 2015 ★ श्रावण, 2072

waterfront
at KALPATARU
riverside
PANVEL

Premium 2 & 3 BHK residences

022 3064 3065

Promoters: **M/S Kalpataru + Sharyans**
Site Address: Opp. Panch Mukhi Hanuman Temple, Old Mumbai - Pune Highway, Panvel - 410 206. | **Head Office:** 101, Kalpataru Synergy, Opp. Grand Hyatt, Santacruz (E), Mumbai - 400 055. Tel.: + 91 22 3064 3065 | Fax: + 91 22 3064 3131 | Email: sales@kalpataru.com | visit: www.kalpataru.com

Images are for representative purposes only. This property is secured with Housing Development Finance Corporation Limited. The No Objection Certificate / Permission would be provided, if required. Conditions apply.

स्वामी सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के लिए प्रकाशक, मुद्रक - विनय चन्द डागा द्वारा दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर राजस्थान से मुद्रित एवं सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, शॉप नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-3 राजस्थान से प्रकाशित। सम्पादक-डॉ. धर्मचन्द जैन